माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान,

अजमेर

भारतीय कला परिचय भाग–2

कक्षा– 12

अधिगम सामग्री

(अंग्रेजी माध्यम की पुस्तक **An Introduction Indan Art Part-2** *पर आधारित)*

तैयार कर्ता:–

राजेश कुमार शर्मा
व्याख्याता, चित्रकला
रा.उ.मा.वि.तोपदड़ा ,अजमेर

महेश कुमार कुमावत
व्याख्याता, चित्रकला
रा.उ.मा.वि. किशनगढ़ ,अजमेर

- वर्तमान सत्र 2021–22 में भारतीय कला परिचय भाग–2 पुस्तक (An Introduction to Indian part-2) का हिन्दी संस्करण विद्यार्थियों को अपरिहार्य कारणों से उपलब्ध नहीं हो सका। यह ध्यान में रखते हुए **बोर्ड परीक्षा 2022 के लिये 30 प्रतिशत संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी पाण्डुलिपि विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिये उपलब्ध करायी गई है।**
- इस अधिगम सामग्री का मूल आधार NCERT द्वारा प्रकाशित एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सत्र 2021–22 परीक्षा के लिए चयनित पुस्तक (An Introduction to Indian part-2) का अंग्रेजी संस्करण है जो राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल (RSTB) द्वारा मुद्रित कराया गया है।
- वर्ष 2022 की परीक्षा के लिए अध्याय–1 ''पाण्डुलिपि चित्रकला परम्परा'' एवं अध्याय–7 ''आधुनिक भारतीय कला'' पाठ्यक्रम से हटा दिये गये हैं। शिक्षकगण चित्रकला विषय का सत्र 2021–22 परीक्षा हेतु संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रम व मॉडल प्रश्न पत्र का अवलोकन करें जो कि बोर्ड वेबसाईट पर अपलोड किये गये हैं।

अध्याय–2

–: राजस्थानी चित्रकला शैलियां :–

राजस्थान के विभिन्न राज्यों में पल्लवित और पोषित शैली को राजस्थानी शैली के नाम से जाना जाता है। राजस्थानी शैली 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक मेवाड़, जोधपुर, किशनगढ़, बीकानेर, कोटा, बूंदी, मालवा और सिरोही आदि ठिकानों में विकसित हुई।

1916 ई. में आनंद कुमार स्वामी ने मुगल कला से अलग कर के राजपूत शासकों के संरक्षण में पोषित शैली को 'राजपूत शैली' के नाम से संबोधित किया। राजस्थानी शैली में मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र, मध्य भारत की रियासतें और पहाड़ी शैली जिसमें उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्र भी शामिल थे। आनंद कुमार स्वामी ने मुगलों के आगमन से पूर्व राजस्थानी शैली के विकास में स्वदेशी शैली की बात कही। राजपूत स्कूल एक अप्रचलित शब्द है। राजस्थानी शैली और पहाड़ी शैलियों में ज्यादा दूरी नहीं थी किंतु चित्रों में काफी भिन्नता थी जैसे–रंग, वास्तु, प्रकृति के चित्रण और कथन के तौर तरीकों आदि में विविधता दिखाई देती है।

राजस्थानी शैली में चित्रण हेतु 'वसली' का प्रयोग किया जाता था। यह एक हस्तनिर्मित कागज होता था। वसली एक के ऊपर एक पतले कागज को चिपका कर मोटा कागज बनाया जाता था, इस पर काले व भूरे (ब्राउन) रंग के माध्यम से रेखांकन कर उसमें विभिन्न रंगों के निशान लगाकर रंगांकन किया जाता था । यह सभी रंग खनिज या बहुमूल्य धातु सोना और चांदी से बने हुए होते थे। इन रंगों में गोंद मिलाकर स्थायित्व दिया जाता था। ब्रश ऊंट और गिलहरी के बालों से बनाये जाते थे। पेंटिंग के पूर्ण हो जाने पर चित्र को सुलैमानी पत्थर से चित्र पर रगड़कर चिकना व ओपदार बनाया जाता था।

इस समय चित्र का निर्माण सामूहिक रूप से मुख्य चित्रकार के निर्देशन में सहायक चित्रकारों द्वारा किया जाता था। मुख्य चित्रकार आरंभिक चित्र बनाता था बाद में सहायक चित्रकार या शिष्य उसमें रंगांकन, वास्तु परिदृश्य, जानवर आदि बनाया करते थे। सबसे बाद में मुख्य चित्रकार चित्र को अंतिम रूप दिया करता था। चित्र के बायीं और रिक्त स्थान छोड़ते थे, जहां मुंशी लेख या श्लोक लिखा करते थे।

- **पेंटिंग के विषय एक अवलोकन :–**

16वीं शताब्दी तक भारत में भक्ति आंदोलन के चलते वैष्णववाद में राम और कृष्ण सभी के पूज्य देवता थे किन्तु कृष्ण सबसे प्रसिद्ध और पूज्य थे। यहां प्रेम को धार्मिक विषय के रूप में चित्रित किया गया। राधा और कृष्ण को आदर्श प्रेमी के रूप में चित्रित कर चित्रकारों ने चित्रों में कामुकता, रमणीयता, संश्लेषण और रहस्यवाद प्रेम आदि को चित्रित किया। कृष्ण को सृष्टि के निर्माता के रूप में और राधा को मानवीय रूप में अपने आप को कृष्ण को समर्पित दिखाया गया है। गीत गोविंद के चित्रों में राधा की कृष्ण के प्रति भक्ति और आत्म समर्पण को दिखाया गया है।

- **गीत गोविंद :–**

12वीं शताब्दी में संस्कृत भाषा के विद्वान जयदेव द्वारा "गीत गोविंद" की रचना की गई थी। संस्कृत भाषा में रचित इस काव्य में 300 श्लोक है। जयदेव, लक्ष्मण सेन के दरबारी कवि थे। गीत गोविंद में राधा कृष्ण के प्रेम आख्यान का वर्णन है।

- **रसमंजरी :–**

14वीं शताब्दी में बिहार के एक मैथिली ब्राह्मण द्वारा रसमंजरी की रचना की गई। जिसे 'आनंद का गुलिस्ता' भी कहा जाता है। संस्कृत भाषा में रचित यह एक रस ग्रंथ है जो आयु बाल, तरुण, प्रोढ आदि के शारीरिक लक्षण जैसे–पद्मिनी, चित्रिणी, शंखनी, हस्तिनी और भावुक विषयों में खंडिता वासक सज्जा अभिसारिका उत्का आदि के आधार पर नायक और नायिकाओं में अंतर किया गया है। रसमंजरी में कृष्ण का उल्लेख नहीं है किंतु चित्रकार ने उन्हें एक आदर्श प्रेमी के रूप में प्रस्तुत किया है ।

- **रसिक प्रिया :–**

ओरछा के दरबारी कवि केशवदास ने 1591 ई. में रसिकप्रिया की रचना की जिसका अनुवाद 'पारखी की प्रसन्नता' के रूप में किया गया है। इस काव्य में जटिल व्याख्या की गई है। ग्रन्थ की रचना धनिक व शासक वर्ग के आनंद के लिए की गई है। इस काव्य में राधा कृष्ण के रूप के विभिन्न भावों जैसे–प्रेम, ईर्ष्या, एकजुटता, झगड़ा और उसके बाद होने वाले अलगाव व क्रोध आदि को दोनों प्रेमियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

- **कविप्रिया :–**

यह काव्य भी केशवदास की रचना है। यह ओरछा की एक प्रसिद्ध गायिका राय परवीन के लिए लिखा गया था। इस प्रेम कथा के दसवें अध्याय में बारहमासा का वर्णन किया गया है। इसमें 12 महीनों के दैनिक वातावरणीय परिवर्तन के साथ नायक–नायिका के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव व नायिका द्वारा नायक से न छोड़ने का आग्रह करते बताया गया है।

- **बिहारी सतसई :–**

1662 ई. में रचित सतसई में 700 दोहें है। इसकी रचना जयपुर के शासक मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि बिहारी द्वारा की गई थी । इस रचना में बिहारी का नाम कई दोहों में दिखाई देता है। सतसई का चित्रांकन पहाड़ी शैली में न होकर मेवाड़ शैली में किया गया है।

संगीतकारों और कवियों ने रागों को देवीय या मानवी रूप में कल्पित किया है। प्रत्येक राग का मनुष्य के स्वभाव, मौसम और समय से सम्बंध बताया है। रागमाला को पारिवारिक रूप देकर 36 या 42 पन्नों का एक एल्बम तैयार किया गया है। प्रत्येक परिवार में एक पुरुष

राग व 6 महिला रागिनी होती है। छह मुख्य रागों में राग भैरव, राग हिंडोला, राग दीपक, राग मल्कोस, राग मेघ व राग राजश्री है।

रागमाला चित्रों में राग और रागिनी का सचित्र वर्णन है। प्राचीन गीतकार व कवि (चारण भाट) रूमानी कहानियां जैसे प्रेमाख्यान से संबंधित ढोला–मारू, सोहनी–महिवाल, मृगावती, चौरपंचशिका, लौरचंदा कवियों के मुख्य विषय रहे। साथ ही रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, दैवीय महाकाव्य प्रिय विषय थे। अन्य विषयों में शिकार के दृश्य पशु–पक्षी, उत्सव, त्यौहार, जुलूस, ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित चित्र के साथ नृत्य, संगीत, त्यौहार, उत्सव आदि भी प्रमुख रहे।

चौरपंचशिका, मेवाड़, 1500 ई., एन.सी. मेहता संग्रह अहमदाबाद, गुजरात।

- **मालवा स्कूल या शैली :–**

मालवा शैली का विकास मध्यप्रदेश में 16वीं–17वीं शताब्दी के बीच हुआ मालवा शैली के विकास में जैन शैली की पांडुलिपियों से लेकर चौरपंचशिका पांडुलिपि का प्रभाव दिखाई देता है।

राजस्थानी शैली जहां मुख्य शासकों और उनके ठिकानों पर पनपी किंतु मालवा शैली का ऐसा कोई मुख्य केंद्र नहीं रहा मालवा शैली मांडू, नुसरतगढ़ और नरसयांग आदि स्थानों पर विकसित हुई। 1652 ई. में अमरु शतक व 1680 ई. में माधोदास रागमाला चित्रों के उदाहरण हैं। दतिया महल में बने भित्ति चित्रों पर बुंदेलखंड का प्रभाव हैं जबकि इन पर मुगल प्रभाव दिखाई नहीं देता। यह द्विआयामी चित्रों से भिन्न है इससे पता चलता है कि यह चित्र घुमक्कड़ कलाकारों से खरीदे गए थे। जिनके विषय रामायण, भागवत पुराण, अमरु शतक, रागमाला, बारहमासा आदि थे।

16 वीं सदी में मुगल शैली में दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी और लाहौर के दरबारी दृश्य दिखाई देते है। मुगल कला का विकास उन क्षेत्रों में हुआ जहां मुगलों का शासन था या उनके द्वारा स्थापित शासक या अधिकारी नियुक्त थे । 16 वीं सदी में दक्षिणी शैली अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा आदि केंद्रों में विकसित हुई। राजस्थानी शैली 16वीं सदी के अंत और 17वीं शताब्दी की शुरुआत में विकसित हुई। वही पहाड़ी शैली 17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी की शुरुआत में विकसित हुई।

राग मेघ, माधोदास, मालवा, 1680 ई., राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

- **मेवाड़ चित्रकला शैली :–**

मेवाड़ राजस्थानी शैली की आरंभिक व प्रमुख शैली है । यहीं से कला की कल्पना को शैलीगत रूप दिया गया। करण सिंह के समय मुगलों के मैत्रीपूर्ण व्यवहार के कारण यहाँ कला का विकास हुआ। इससे पूर्व के सभी अवशेष मुगल युद्धों में नष्ट हो गए। मेवाड़ शैली का आरंभ रागमाला चित्रों से माना जाता है। रागमाला की रचना 1605 ई. चावण्ड में चित्रकार निसारदीन द्वारा की गई थी। राजा जगतसिंह (1628–1652) के शासन काल में चित्रकला का विकास विशेष रूप से हुआ जिसका श्रेय साहिबदीन और मनोहर को जाता है। सहिबदीन द्वारा रागमाला (1628), रसिकप्रिया, भागवत पुराण (1648) और रामायण के युद्ध कांड का चित्रण किया गया। मनोहर का महत्वपूर्ण कार्य रामायण का बालकांड (1650) था। वहीं अन्य चित्रकार जगन्नाथ ने 17वीं शताब्दी में बिहारी सतसई (1719), हरिवंश और सूरसागर का चित्रण किया।

युद्ध कांड 1652 ई. यह रामायण का एक अध्याय है जिसकी रचना सहिबदीन ने की। इसमें युद्ध के वातावरणीय परिपेक्ष्य को दिखाया गया है। युद्ध में इंद्रजीत द्वारा कुटिल नीति और जादुई हथियारों का प्रयोग दिखाया गया है। इस रामायण का चित्रण जगत सिंह के समय में होने के कारण इसे 'जगत सिंह की रामायण' कहा जाता है। इसमें एक चित्र को विभिन्न खंडों में चित्रित किया गया है।

रामायण का युद्ध कांड, साहिबदीन, मेवाड़, 1652 ई., भारत कार्यालय पुस्तकालय, लंदन।

18वीं शताब्दी मेवाड़ में पुस्तक चित्रण कम हो गया और चित्रण दरबारियों की रुचि, मनोरंजन और राजघरानों के विषयों पर आधारित हो गये। मेवाड़ शैली में लाल तथा पीले रंगों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया। 17वीं शताब्दी में अंत में उदयपुर के पास नाथद्वारा शैली का विकास हुआ। नाथद्वारा में श्रीनाथजी के पीछे बने पृष्ठभूमि में पर्दे (कपड़े) पर बने चित्रों को 'पिछवाई' कहा जाता है। 18वीं शताब्दी में मेवाड़ शैली के विषय धर्म से दूर होकर दरबार तक सीमित हो गए। इन विषयों में लौकिक जीवन, दरबारी दृश्य, शिकार, त्योहार आदि प्रमुखता से चित्रित किये गए। एक चित्र में महाराणा जगत सिंह (1734–1752) को गावों में भ्रमण और बाजबाजी करते हुए चित्रित किया गया है।

- **बूंदी चित्रकला शैली :–**

17वीं शताब्दी में बूंदी शैली का विकास हुआ। बूंदी अपने बेदाग रंग और अलंकरण के लिए प्रसिद्ध रही है। चुनार के हाडा राजा भोज सिंह (1558–1607) के समय रागमाला चित्रण 1593 से बूंदी शैली का विकास माना जाता है। बूंदी चित्रकला का विकास राव छत्रसाल (1631–1659) और उनके पुत्र भाव सिंह (1659–1682) के समय विशेष रूप से हुआ। राव छत्रसाल को शाहजहां ने दिल्ली का राज्यपाल बनाया और राव छत्रसाल ने दक्कन में मुगलों

के तरफ से युद्ध में भाग लिया और विजय प्राप्त की। बाद में भाऊ सिंह के उत्तराधिकारी अनिरुद्ध सिंह (1682–1702) के समय चित्रकला का विकास चलता रहा। बुद्धसिंह के समय में उदास चेहरों का चित्रण विशेष है।

बुद्धसिंह के पश्चात उनका पुत्र उम्मेद सिंह (1749–1771) शासक बना। इनके शासन के समय चित्रकला का विधिवत विकास हुआ। 18वीं शताब्दी में बूंदी शैली में दक्षिण शैली का प्रभाव आने के कारण शुद्ध व चमकीले रंगों का प्रयोग होने लगा।

उम्मेद सिंह के उत्तराधिकारी बिशन सिंह (1771–1821) ने 48 वर्षों तक बूंदी पर शासन किया। वह एक कला पारखी शासक था। इनकी रुचि शिकार में होने के कारण शिकार से संबंधित चित्र अधिक बने। इनके पश्चात रामसिंह (1821–1889) के समय बूंदी महल की शाही चित्रशाला में भित्तिचित्रण का कार्य हुआ जिसमें जुलूस, शिकार, राधा और कृष्ण के विभिन्न प्रसंगों को चित्रित किया गया।

कोटा और बूंदी शैली में आकृतियों के चेहरे गोल व भरे हुए, छोटा ललाट, छोटी तीखी नाक, पतली कमर, प्राकृतिक हरियाली, वनस्पति में पशु पक्षी का चित्रण, पहाड़ियां, घने वन, झरने आदि बनाए गए हैं। घुड़सवारी व हाथियों का चित्रण बूंदी और कोटा शैली में विशेष रूप से हुआ है।

1591 ई. की बूंदी रागमाला जिसकी भाषा फारसी है, के शिलालेख के अनुसार बूंदी के चित्रकार शेख हसन शेख अली और शेख हातिम (मुगल चित्रकार मीर सैयद अली व अब्दुल सम्मद के शिष्य) का उल्लेख है । इसमें चुनार (बनारस के निकट) को चित्रकला की उत्पत्ति का स्थान माना गया। यहां राव भोज सिंह और उनके पिता राव सुरजन सिंह ने अपने महल बनाए थे। चुनार में चित्रित सेट के पन्नो पर रागनी खंबावती, बिलावत, मालाश्री, भैरवी, पटमंजरी प्रमुख है।

राग दीपक चित्र में रात्रि के दृश्य में नायक व नायिका को एक कक्ष में बैठे बनाया गया है। जहां चार दीपक बनाए गए हैं। दीपक से प्रकाश निकल रहा है। यहाँ दो दीपक मानव आकृति के समान है। चित्र में पीले रंग से चंद्रमा व तारे बनाए गए हैं। वही चित्र में एक जगह पीले रंग का स्थान रिक्त रखा गया है जो कि कुछ लिखने के लिए खाली छोड़ा गया है । इस पर दीपक राग के अलावा कुछ नहीं लिखा गया है। शायद चित्र में मुंशी द्वारा लेख लिखने से पूर्व ही चित्रकार ने पेंटिंग को समाप्त कर दिया था।

बारहमासा बूंदी का एक लोकप्रिय विषय रहा है जिसमें केशव दास द्वारा रचित कविप्रिया के दसवें अध्याय में 12 महीनों के दैनिक वातावरण में होने वाले परिवर्तन की व्याख्या है। जो ओरछा की प्रसिद्ध गायिका राय परवीन के लिए लिखी थी।

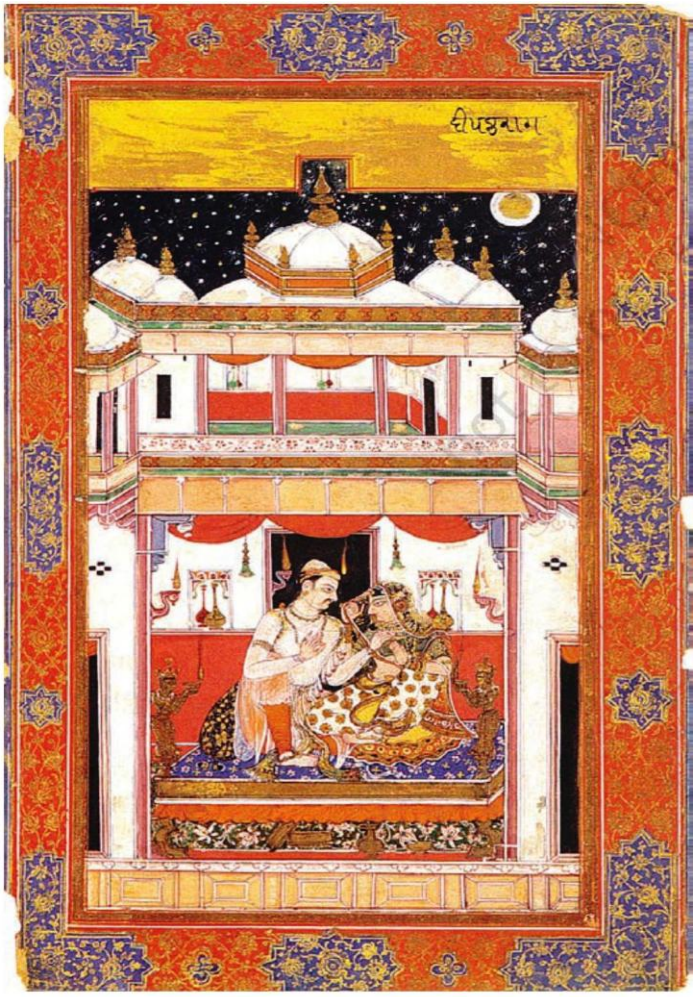

राग दीपक, चुनार रागमाला, बूंदी 1519 ई. भारत कला भवन, वाराणसी।

- **कोटा चित्रकला शैली :–**

बूंदी की उन्नत चित्र शैली के आधार पर ही कोटा चित्र शैली का आरंभ हुआ। कोटा चित्रकला शैली में शिकार के दृश्यों की बहुलता रही है। कोटा शैली में जानवरों का पीछा करते हुए दृश्यों का चित्रण प्रमुखता से किया गया। 1625 ई. तक कोटा व बूंदी एक ही राज्य के भाग थे किंतु जहांगीर के पुत्र शाहजहां के विद्रोह को दबाने के ईनाम स्वरूप रतन सिंह के पुत्र मधुसिंह को बूंदी का शासक बनाया गया।

कोटा शैली के चित्र बूंदी से इतने मिलते जुलते हैं कि उनमें भेद करना मुश्किल है। कोटा शैली में कुछ चित्रों में तो बूंदी के समान ही अलंकरण वास्तु व अन्य चीजों का चित्रण एक समान किया गया है। सन् 1600 ई. में बूंदी ने अलग पहचान स्थापित की जिसका श्रेय जगतसिंह (1658–1683) को जाता है । इसी प्रकार रामसिंह प्रथम (1686–1708) के समय भी विभिन्न विषयों का चित्रण हुआ । कोटा शैली के चित्रकारों ने दृश्य चित्र बनाए जो की प्रथम प्रयोग था । महाराजा उम्मेदसिंह (1770–1819) केवल दस वर्ष की उम्र में शासक बने। उम्मेद सिंह ने अपने आप को जंगली जानवरों के शिकार, खेलकूद व वनभ्रमण में व्यस्त कर लिया था। जिसको चित्रकारों ने चित्रित किया। कोटा में जानवरों का पीछा करने व उसमें महिलाओं

की भागीदारी को भी दिखाया गया है । कोटा शैली में छायांकन प्रभाव, दोहरी आंखों की पुतलियां व शिकार के दृश्य विशेष हैं ।

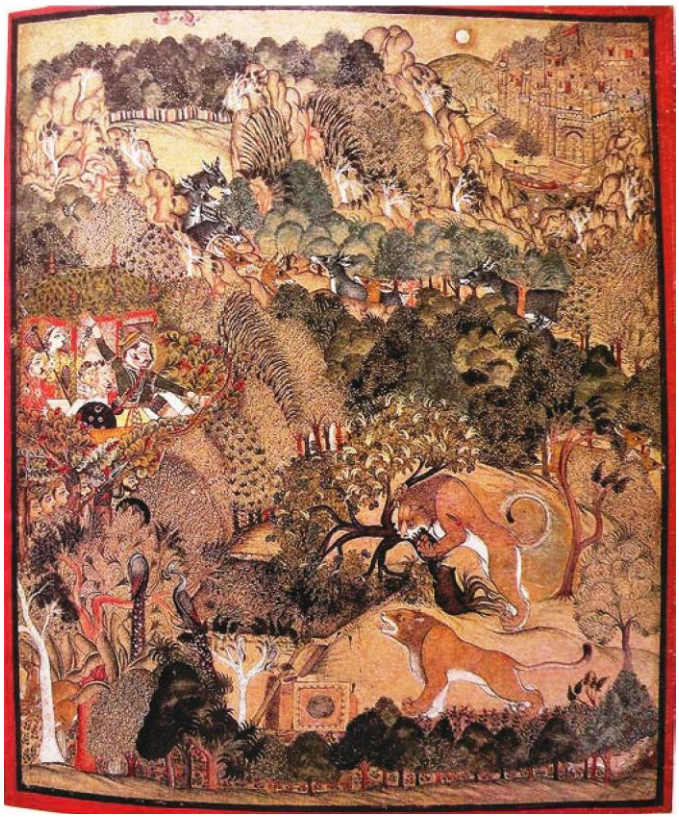

कोटा के महाराज राम सिंह प्रथम मुकुंदगढ़ में शेर का शिकार करते हुए, 1695 ई. कोलनाघी गैलरी, लंदन।

- **बीकानेर चित्रकला शैली :–**

1488 ई. में राव बीका के द्वारा बीकानेर की स्थापना की गई । बीकानेर शैली में अनूप सिंह द्वारा (1659–1698 ई.) में पाण्डुलिपियों व चित्रों के संरक्षण हेतु एक पुस्तकालय का निर्माण करवाया गया। वही बीकानेर का मुगलों से मधुर संबंध होने के कारण इसके प्रभाव से यहां के चित्रों में हल्की रंग संगति देखने को मिलती है ।

बीकानेर शैली के विकास में दिल्ली दरबार से आए कलाकार उस्ताद अली रजा को महाराजा करणसिंह ने अपने दरबार में आश्रय दिया। अली रजा के चित्रों से ही बीकानेर शैली के आरंभिक उदाहरण देखने को मिलते हैं । अनूपसिंह ने चित्रकार रुकनुद्दीन (जिसके पूर्वज मुगल कलाकार थे) को आश्रय दिया। चित्रकार रुकनुद्दीन की शैली में मुगल व दक्षिण शैली का प्रभाव दिखाई देता है। चित्रकार रुकनुद्दीन ने रामायण, रसिकप्रिया और दुर्गा सप्तशती आदि ग्रंथो का चित्रण किया । बीकानेर में इब्राहिम, नाथू, साहिबदीन, ईसा आदि प्रमुख चित्रकार थे ।

अनूपसिंह के समय बीकानेर शैली में कई 'कला केन्द्र' (आर्ट स्टूडियो) बने हुए थे, इन स्टूडियो को 'मंडी' कहा जाता था, मंडियों में नए लघु चित्रों के साथ–साथ पुराने चित्रों को ठीक करने के साथ पुराने चित्रों की प्रतिकृतियां भी बनायी जाती थी । बीकानेर में मुख्य कलाकारों के निर्देशन में अन्य सहायक कलाकार कार्य किया करते थे। बीकानेर में रुकनुद्दीन,

इब्राहिम और नाथू ने मंडियों की स्थापना कर रखी थी । बीकानेर शैली में चित्रों के पूर्ण हो जाने पर मुंशी द्वारा चित्रकार का नाम, दिनांक व चित्र का विवरण लिखा जाता था। मुख्य चित्रकार अपने शिष्यों के द्वारा बने चित्रों पर अंतिम कार्य (फिनिशिंग टच) किया जाता था जिसे 'गुडरायी' कहा जाता था इसका अर्थ उठाना (Lift) होता था।

बीकानेर शैली में चित्रकारों की जानकारी के साथ साथ उनकी वंशावली भी प्राप्त होती है । बीकानेर में चित्रकार को उस्तास या उस्ताद कहा जाता था । चित्रकार रुकनुद्दीन ने अपने चित्रों में हल्के रंगों का प्रयोग किया। वहीं इब्राहिम के चित्रों में खूबसूरत चेहरों व स्वप्नलोक जैसा प्रभाव दिखाई देता है । इब्राहिम का नाम बारहमासा, रागमाला और रसिकप्रिया के चित्रों पर भी दिखाई देता है । बीकानेर शैली के लेख, अभिलेख डायरी व पाण्डुलिपियां जो इसे अन्य शैलियों से भिन्न करती हैं। यहां चित्रों में कहीं–कहीं पर फारसी भाषा में कलाकारों के नाम, तिथि व स्थान आदि का भी उल्लेख प्राप्त होता है ।

गोवर्धन पर्वत को उठाए कृष्ण, साहिबदीन, बीकानेर, 1690 ई. ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन।

- **किशनगढ़ चित्रकला शैली :–**

राजस्थानी शैलियों में सबसे प्रसिद्ध किशनगढ़ शैली उन्नत ललाट, उठी धनुषाकार भोहे, कमल के समान गुलाबी रंग के अधखुले नयन, पतली और लंबी नाक, पतले होठ इस शैली को सभी शैलियों से भिन्न बनाते हैं ।

1609 ई. में जोधपुर महाराजा के पुत्र किशनसिंह ने किशनगढ़ की नींव रखी। 17वीं शाताब्दी में मानसिंह (1658–1706) के समय में पहले से भी चित्रकार कार्य कर रहे थे। 18वीं शताब्दी में राजसिंह (1706–1748) के शासनकाल में वल्लभ संप्रदाय में कृष्ण संबंधी विषयों का चित्रण व हरे रंग का प्रयोग प्रमुखता से हुआ। इस समय बनी आकृतियां लम्बी है

जिनमें छरहरापन देखने को मिलता है । किशनगढ़ शैली का सबसे अधिक विकास राजा सावंतसिंह (नागरीदास) के समय (1735–1757) चित्रकार निहालचंद के द्वारा हुआ । निहालचंद ने सावन सिंह की रचनाओं के आधार पर राधा कृष्ण के दिव्य प्रेम, दरबारी परिवेश व मनोरम प्राकृतिक परिदृश्य को चित्रित किया ।

- **जोधपुर चित्रकला शैली :–**

जोधपुर शैली की शुरुआत जसवंत सिंह के शासनकाल में (1638 1678) 17वीं शताब्दी में मानी जाती है । मारवाड़ के आरम्भिक साक्ष्यों में वीरजी द्वारा चित्रित रागमाला सेट है । जसवंत सिंह की रूचि बल्लभ सम्प्रदाय में होने से चित्रों में वल्लभ संप्रदाय (श्रीनाथ जी), राधा कृष्ण भागवत पुराण विषयों का चित्रण हुआ । यह प्रवृत्ति 19वी शताब्दी तक चलती रही जब तक की फोटोग्राफी का आविष्कार नहीं हो गया था । इनके उत्तराधिकारी अजीत सिंह (1600–1724) के शासन काल में जोधपुर शैली के सबसे सुंदर और सजीव चित्र बने । महाराजा अजीत सिंह के समय श्रृंगार रस के प्रसिद्ध काव्य रसिकप्रिया, गीत गोविंद आदि विषयों पर चित्रण हुआ ।

दुर्गादास राठौड़ का मुगलों से युद्ध कर मारवाड़ पर अपना शासन स्थापित करना भी यहां के चित्रकारों का प्रमुख विषय रहा है। दुर्गादास राठौड़ की घुड़सवारी के चित्र बहुत प्रसिद्ध हुए। जोधपुर में मानसिंह (1803–1843) के शासनकाल में रामायण (1804), ढोला–मारू, पंचतंत्र (1804) और शिवपुराण पर चित्रण हुआ । जोधपुर में रामायण का चित्रण बहुत प्रसिद्ध है जिसमें रामायण के विषयों को जोधपुर की गलियों, बाजारों, प्रवेश द्वारों, स्थानीय वेशभूषा के साथ कल्पित किया गया है, जो कि बहुत ही रोचक दिखाई देता है । मानसिंह के समय जोधपुर में नाथ संप्रदाय से संबंधित चित्रों का निर्माण प्रमुखता से हुआ है ।

- **जयपुर चित्रकला शैली :–**

जयपुर शैली का आरम्भ आमेर से हुआ । मुगलों से मधुर संबंधों का प्रभाव जयपुर शैली पर दिखाई देता है। भारमल की पुत्री का विवाह अकबर से हुआ वहीं उनके पुत्र भगवंत दास व भगवंत दास के पुत्र मानसिंह भी अकबर के विश्वास पात्र थे । सवाई जयसिंह (1699 1743) के समय 1727 ई. में आमेर से राजधानी जयपुर स्थानांतरित हो गई। जयसिंह के समय कलाओं के विकास हेतु दिल्ली और अन्य राज्यों से श्रेष्ठ चित्रकारों को जयपुर आमंत्रित किया गया । चित्रकारों ने 'सूरतखाना' (स्टूडियो–जहाँ चित्रकार एक जगह बैठकर चित्रण कार्य किया करते थे) में कार्य किया । सूरत खाना जहां चित्र तथा पांडुलिपियों का संरक्षण किया जाता था । सवाई जयसिंह द्वारा वैष्णव संप्रदाय को मानने के कारण इस समय वैष्णव संप्रदाय से संबंधित विषय जैसे–राधा कृष्ण के विषय, रसिकप्रिया, गीत गोविंद, बारहमासा आदि पर चित्रण हुआ । सवाई जयसिंह के समय में नायक के स्थान पर राजा (सवाई जयसिंह) को ही चित्रित किया गया है। जयसिंह के दरबार में व्यक्ति चित्रण में निपुण चित्रकार साहिबराम व अन्य चित्रकरों में मोहम्मद शाह थे।

इनके पश्चात सवाई ईश्वरीसिंह (1743–1750) के समय धार्मिक व साहित्य विषयों के अलावा दैनिक विषय जैसे हाथी की सवारी, सूअर और बाघ का शिकार हाथियों की लड़ाई के चित्र विशेष रूप से बने । सवाई माधोसिंह के समय दरबारी जीवन का चित्रण हुआ ।

18वीं शताब्दी में सवाई प्रताप सिंह (1779–1803) के समय मुगल प्रभाव कम हुआ। इस समय की शैली में स्वदेशी व मुगल मिश्रित प्रभाव दिखाई देता है। इन्होंने 50 से अधिक कलाकारों को आश्रय दिया। प्रताप सिंह एक विद्वान, कवि, कलाप्रेमी, कृष्ण के अनुरागी थे। इनके समय गीत गोविंद, रागमाला, भागवत पुराण व दरबारी चित्रों का चित्रण हुआ । आदमकद के चित्रों का निर्माण, ट्रेसिंग माध्यम से एक से अधिक चित्रों की प्रतिकृतियां बनाना व चित्रों में सोने व चांदी का प्रयोग जयपुर शैली की अपनी निजी विशेषता रही है ।

- **भागवत पुराण :–**

यह चित्र मालवा शैली का है जो की राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है। जिसमें श्री कृष्ण द्वारा राक्षस शक्तासुर के वध को चित्रित किया गया है । चित्र विभिन्न खंडों में विभाजित है। एक खंड में कृष्ण जन्म के बाद नंद और यशोदा के घर पर उत्सव मनाते व लोगों को नाचते गाते बनाया गया है, एक खंड में धार्मिक उद्देश्य से नंद व यशोदा द्वारा ब्राह्मणों व गरीबों को गाय का दान करते हुए दिखाया गया है, वही एक स्थान पर भोजन तैयार किया जा रहा है मध्य भाग में महिलाएं बुरी नजर से कृष्ण को बचाने के लिए उसके पास खड़ी है । चित्र के अंत में पैर लगाकर शक्तासुर का उद्धार करते हुए कृष्ण को चित्रित किया गया है।

- **मारू रागनी :–**

मेवाड़ में चित्रित मारू रागनी का यह चित्र रागमाला चित्र संग्रह का है, चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है । चित्र पर कलाकार का नाम, संवत, स्थान, तिथि आदि का उल्लेख किया गया है । चित्र संवत 1685 ई. में जगत सिंह के समय उदयपुर में चित्रकार साहिबराम द्वारा चित्रित किया गया है । चित्रकार साहिबराम को चित्र में चितारा अर्थात चित्रकार कहा गया है । चित्र में मारू (सुंदर राजकुमारी) को ढोला (राजकुमार) के रूप में दिखाया गया है और उसकी शारीरिक सुंदरता के चित्रण के साथ उसके प्रियतम पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है। ढोला–मारू दोनों आदर्श प्रेमी थे। इनके गीत और गाथाएं आज भी राजस्थान में प्रचलित है । ढोला–मारू के प्रेम–प्रसंग व विवाह के लिए रिश्तेदारों से

संघर्ष, लड़ाई, दुखद घटनाओं आदि का वर्णन है। चित्र में ढोला और मारू को ऊंट पर बैठे चित्रित किया गया है । चित्र के आधे भाग पर लेख लिखा है जो इस प्रकार है संवत 1685 वर्ष असो वद 9 राणा श्री जगत सिंह राजेन उदयपुर मधे लिखित चित्र साहिबदीन बचन हरा ने राम–राम ।

- **राजा अनिरुद्ध सिंह हाडा :–**

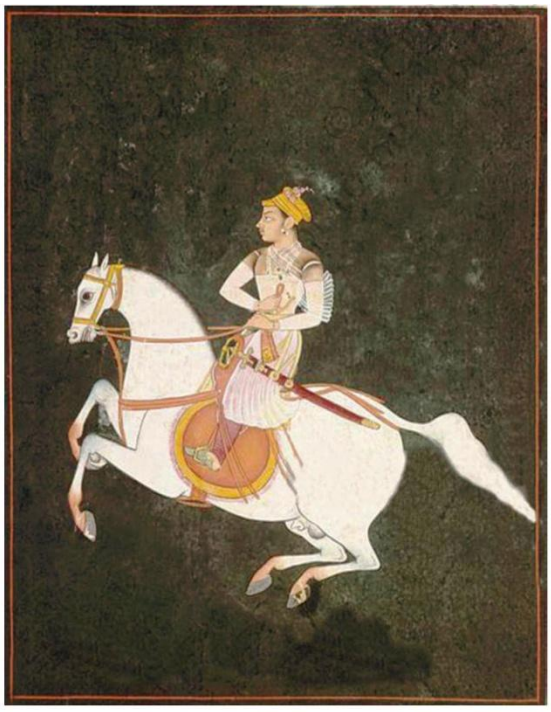

यह पेंटिंग राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है। अनिरुद्ध सिंह (1682–1702) भाव सिंह के उत्तराधिकारी थे । यह चित्र 1680 में चित्रकार तुलसीराम द्वारा चित्रित अनिरुद्ध सिंह की घुड़सवारी का चित्र है । घोड़ा हवा में दौड़ता हुआ दिखाया गया है। घोड़े की रफ़्तार अधिक होने से जमीन पर भी दिखाई नहीं दे रहा है । पेंटिंग के पीछे कुंवर अनिरुद्ध सिंह और चित्रकार तुलसीराम का नाम लिखा हुआ है। लेकिन चित्र के सामने भरत सिंह का नाम है । कुछ विद्वान मानते हैं कि यह चित्र भरतसिंह का है वहीं बहुत से इस चित्र को अनिरूद्ध सिंह के युवाकाल का मानते है ।

- **चौगान (पोलो) खिलाड़ी :–**

1810 ई. में बना यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है । यह चित्र जोधपुर के शासक मानसिंह के शासनकाल का है । चित्र में राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ चौगान या पोलो खेलते हुए चित्रित की गई है। यह चित्र दरबारी चित्र है या नहीं कहा नहीं जा सकता क्योंकि इस चित्र में कई शैलियों का प्रभाव है जैसे महिलाओं के चित्रण में मुगल शैली, घोड़ों के चित्रण में दक्षिण शैली, स्त्रियों के चेहरे पर किशनगढ़ व बूंदी शैली का प्रभाव दिखाई देता है और सपाट हरे रंग की समतल पृष्ठभूमि स्वदेशी प्रभाव को प्रदर्शित करती है । पेंटिंग के ऊपरी हिस्से में एक लेख लिखा हुआ है जिसका अनुवाद है घोड़े की पीठ पर सुंदर युवतियां खेल रही है।

© NCERT not to be republished

- **झूले पर कृष्ण और उदास मनोदशा में राधा :–**

यह चित्र रसिकप्रिया पर आधारित है। जिसका चित्रण 1674 से 1698 ई. तक बीकानेर दरबार में कार्यरत चित्रकार नूरूद्दीन ने किया। इस चित्र में वास्तुकला का प्रयोग न्यूनतम, स्पष्ट व सरल रूप से किया है। चित्र को दो भागों में विभाजित करने के लिए एक लहरदार टीले का प्रयोग चित्रकार द्वारा बड़ी चतुराई से किया गया है।

चित्र से ऊपरी भाग में एक गोपी के घर पर झूले पर विराजमान कृष्ण गोपी की संगति में प्रसन्न दिख रहे है। उनके इस व्यवहार से दुखी राधा अन्य स्थान पर चली जाती है। जहाँ वह अपने आप को एक वृक्ष के नीचे खड़ा पाती है।

कृष्ण को राधा के दुख का ज्ञान होने पर वह राधा के पीछे जाते है। किन्तु राधा को मना नहीं पाते है। राधा की एक सखी दूत की भूमिका में कृष्ण के पास राधा का संदेश लेकर

आती है। वह कृष्ण को राधा के दुख और संताप के बारे में बताती है। यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित है।

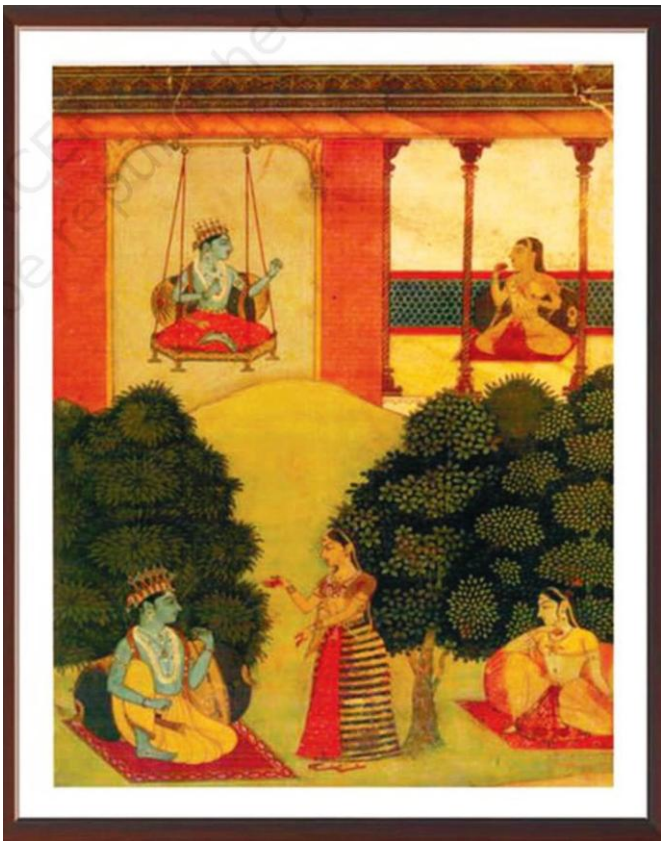

- **बणी ठणी :–**

बणी ठनी का यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है । राजा सावंत सिंह ने अपने उपनाम नागरीदास के रूप से साहित्यिक ब्रज भाषा में राधा और कृष्ण पर कविताओं की रचना की। बणी ठणी राजसिंह की पत्नी की दासी होने के साथ–साथ एक प्रभावशाली कवयित्री व गायिका भी थी । बनी–ठणी अपने अनुपम सौन्दर्य के लिए जानी जाती थी । राजा सावंत सिंह बणी ठणी से अत्यधिक प्रेम करते थे। सावंत सिंह ने बनी–ठणी की प्रेरणा लेकर कविताओं की रचना की। जिसमें बनी–ठणी को राधा और स्वयं को कृष्ण के रूप में कल्पित किया । बनी–ठणी का उल्लेख राजा सावंतसिंह ने अपनी एक कविता बिहारी जसचंद्रिका में किया और बनी–ठणी के इसी रूप को चित्रकार निहालचंद ने अपनी पेंटिंग का आधार बनाया । बनी–ठणी चित्र में काव्य और चित्र का सम्मिलित रूप देखा जा सकता हैं । राजनैतिक परेशानियों से परेशान होकर राजा सावंतसिंह ने 1757ई. में सिंहासन को त्याग कर वृंदावन जाकर बनी–ठणी के साथ रहने लगे । किशनगढ़ शैली की सम्पूर्ण विशेषता बनी ठनी के चेहरे में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । कलाकार निहालचंद ने किशनगढ़ शैली को उत्तम और विशिष्ट विशेषताओं के साथ चित्रित किया। किशनगढ़ शैली के चेहरों में उन्नत ललाट, उठी धनुषाकार भोहे, कमल के समान अधखुले नयन, पतली व लंबी नासिका, पतले होठ, पतली ठुड्डी, सर्पाकार अल्कावलियां जो कान व गाल तक बनाई गई है।

- **चित्रकूट में राम का परिवार मिलन :–**

चित्रकार गुमान द्वारा रामायण के कथानक पर बनाया यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली संग्रहित है । जिसका समय 1740 से 1750 के बीच रहा । चित्रकूट के परिवेश में झोपड़िया (पर्णकुटीर) मिट्टी, लकड़ी, हरे पत्तों और जंगल में प्राप्त सामग्री से बनी है । चित्र के अग्र व पार्श्वभाग में पेड़–पौधें बनाये गए है जो कि ग्रामीण परिवेश की व्याख्या करते है । रामायण के अनुसार जब राम को वनवास भेजा गया था तब भरत उनके पास नहीं थे। राम के वनवास से दुखी दशरथ की मृत्यु के बाद अत्यंत दुख के साथ भरत अपनी तीनों माताओं, ऋषि वशिष्ठ और दरबारियों के साथ राम को वापस अयोध्या लाने के लिए गए थे। चित्र बायीं ओर से आरंभ होकर दायीं ओर खत्म किया गया है । चित्रकूट नामक स्थान की शुरुआत में तीनों रानियों और राजकुमारों की पत्नियों के साथ कुटीर की ओर जाते दिखाया गया है । माताओं को देख राम, लक्ष्मण और सीता उन्हें श्रद्धा से प्रमाण कर रहे है । शोकाकुल कौशल्या को अपने पुत्र राम के पास जाकर उन्हें गले लगाते चित्रित किया हैं। बाद में राम को अन्य दो माताएँ सुमित्रा, कैकयी और दोनों ऋषियों का अभिवादन करते चित्रित किया गया हैं । जब ऋषि राम को दशरथ की मृत्यु का समाचार देते हैं तब राम अत्यंत दुखी होते है जो चित्र में दिखाई दे रहा है। चित्र में तीनों माताएं, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की पत्नियों को सीता के पास बात करते हुए चित्रित किया गया है। चित्र के उपर चित्र से सम्बंधित श्लोक लिखा गया है ।

राजस्थानी शैली के अभ्यास प्रश्न :–

1. राजपूत चित्रशैली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस विद्वान ने किया ?
2. वसली क्या है ?
3. गीत गोविंद के रचयिता कौन थे ?
4. लक्ष्मण सेन किस विद्वान के यहां दरबारी कवि थे ?
5. रसिकप्रिया किसकी रचना है ?
6. बिहारी सतसई के लेखक का नाम लिखिए।
7. दतिया महल के भित्ति चित्र पर किसका प्रभाव देखने को मिलता है ?
8. 1605 ई. में निर्मित राग माला कहां और किसके द्वारा बनाई गई ?
9. मेवाड़ में निर्मित रामायण के युद्ध कांड का चित्रकार कौन था ?
10. पिछवाई क्या है और यह कहां पर बनाई जाती है ?
11. बूंदी शैली के आरंभिक चित्रों के विषय क्या थे ?
12. शिकार के चित्र सर्वाधिक किस शैली में बने ?
13. दक्षिण शैली का प्रभाव किस शैली में सर्वाधिक देखने को मिलता है ?
14. बनी ठनी का चित्र किस चित्र शैली से संबंधित है ?
15. बनी ठनी का चित्र किस चित्रकार ने बनाया ?
16. राजस्थानी शैली में आदमकद व्यक्तिचित्र कहां पर बने ?
17. नाथ संप्रदाय से संबंधित चित्र किस चित्र शैली में और किसके समय बने ?

18. साहिब राम किस शैली का चित्रकार था ?
19. "बारहमासा" क्या है ?
20. "रागमाला" के चित्र कितने भागों में विभाजित है ?
21. राग कितने प्रकार के होते हैं उनके नाम लिखिए ?
22. मेवाड़ में चित्रित प्रेम प्रसंगों में किन्ही दो का नाम लिखिए ?
23. दक्षिण शैली का विकास कहां कहां और कब हुआ ?
24. कोटा में किस शासक के समय शिकार के चित्र अत्यधिक बने ?
25. बीकानेर शैली के चित्रकारों का नाम लिखिए ?
26. मंडिया क्या है ?
27. किस चित्र शैली में चित्रकार का नाम, तिथि व उसका विवरण लिखा जाता था ?
28. सूरत खाना क्या है ?
29. केशवदास ने किस ग्रंथ की रचना है ?
30. राजस्थानी शैली किन–किन ठिकानों पर पल्लवी और पोषित हुई ?
31. राजस्थानी शैली के उद्‌भव व विकास पर लेख लिखिए ?
32. बूंदी शैली के उद्‌भव व विकास का वर्णन कीजिए ?
33. किशनगढ़ शैली में राजा सावंत सिंह के कला प्रेम की व्याख्या कीजिए।
34. राजस्थानी शैली के किन्हीं दो प्रमुख चित्रों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
35. कोटा व बूंदी शैली के बारे में विस्तृत वर्णन कीजिए।
36. बीकानेर शैली के उद्‌भव व विकास की व्याख्या कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न :

1 राजस्थानी चित्र शैली के उद्‌भव और विकास पर लेख लिखिए।
2 राजस्थानी चित्र शैली में चित्रित काव्य ग्रन्थों की जानकारी दीजिए।
3 राजस्थानी चित्र शैली की महत्वपूर्ण विशेषताऐं लिखिए।

अध्याय–3

–: मुगल लघु चित्रकला शैली :–

भारतीय लघु चित्रकला में मुगल शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। जो 16वीं से 19वीं सदी के मध्य तक विकसित हुई । मुगल शैली अपनी आदर्श तकनीक, विषयों की भिन्नता और दरबारी चित्रण के लिए प्रसिद्ध है । मुगल लघु चित्रकला शैली इतनी उन्नत और परिष्कृत थी कि इसका प्रभाव बाद की समस्त भारतीय कलाओं में देखा जा सकता है।

मुगल शासकों की रूचि कला और कलाकारों में होने के कारण भारतीय कलाओं का विकास बहुत तेजी से हुआ। मुगल कला अलग अलग शासकों के समय उनकी रूचि और आवश्यकताओं के आधार पर बदलती रही जैसे सुलेख, चित्रण, वास्तुकला, पुस्तक लेखन व चित्रकारी आदि प्रमुख है।

- **मुगल चित्रकला पर प्रभाव :–**

मुगल चित्रकला शैली में फारसी, भारतीय तथा बाद में यूरोपीय विषयों का प्रभाव दिखाई देता है। मुगल चित्रकला में हिंदू–मुस्लिम और यूरोपीय संस्कृति का समावेश है। इन शैलियों के सम्मिश्रण से बने चित्र उस समय की भारतीय और ईरानी शैली से भी अधिक सुन्दर थे। मुगल चित्रकारों ने अपने असाधारण कौशल, परिकल्पनाओं, विश्वासों को चित्रित किया ।

मुगल दरबार में चित्रकारों के लिए कार्यशालाए बनी हुई थी। इस समय कई कलाकार ईरान से भारत आये। यहाँ पर आकर भारतीय कलाकारों और ईरानी चित्रकारों ने मिलकर सामंजस्य पूर्ण कार्य किया।

मुगल संग्रहालयों में सुलेखक, चित्रकार, गिलडर और बाइंडर कार्य करते थे। मुगलकाल में चित्र सम्राटों या राजघरानों के लोगो के समय होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, व्यक्तित्व और रुचियों के अनुसार ही चित्रित हुए। यहाँ चित्रों को राजघरानों की भावना और बौद्धिक उत्तेजना के अनुसार बनाया गया। मुगल चित्र पांडुलिपियों और श्रृंखलाओं का हिस्सा थे ।

भारतीय कला का वैभवशाली इतिहास रहा है। भारत में पूर्व मुगल और स्वदेशी चित्र शैली की अपनी कुछ विशेषताएं थी। स्वदेशी भारतीय शैली में सपाट रेखीय क्षय वृद्धि, शुद्ध रंग योजना और आकृतियों में वास्तुकला का प्रभाव है वही मुगल शैली ने सूक्ष्मता और त्रिआयामी आकृतियों का चित्रण, परिप्रेक्ष्य का प्रयोग, दरबारी दृश्य, वनस्पतियों और जीवों का सटीक चित्रण मुगल कलाकारों के कुछ पसंदीदा विषय रहे।

- **प्रारंभिक मुगल चित्रकला :–**

1526 ई. में सम्राट बाबर पहले मुगल शासक के रूप में वर्तमान उज्बेकिस्तान से भारत आया। बाबर सम्राट तैमूर और चगताई तुर्क वंश का था। बाबर के भारत आने के साथ ही फारस और मध्य एशिया की संस्कृति का मिश्रण हुआ। बाबर को एक कलाकार, कला पारखी, कला पत्र–पत्रिकाओं, पांडुलिपियों, वास्तुकला और बागवानी आदि के संरक्षक के रूप में जाना जाता है। उनकी आत्मकथा ''बाबरनामा'' से उसके राजनीतिक और कलात्मक जीवन का विस्तृत विवरण मिलता है। बाबरनामा से पता चलता है कि बाबर बाहरी व्यक्ति होते हुए भी भारतीय भूमि और पारिस्थितिकी से उसका प्रेम और स्नेह था। बाबर ने अपने संस्मरण से पुस्तक लेखन परम्परा की शुरुआत की जिसकी पालना उनके उत्तराधिकारिओं ने भी की। मुगल काल में बहुमूल्य किताबें और एल्बम तैयार किए गए। इन मूल्यवान पुस्तकों को संरक्षित किया गया।

बाबरनामा में दो चित्रकारों का वर्णन किया उनमें से एक बिहजाद है। बिहजाद एक श्रेष्ठ चित्रकार था किंतु वह चेहरों को अच्छे से नहीं बना पाता था। वह दोहरी ठुड्डी (गम–गम) को बहुत लंबा बनाता था लेकिन दाढ़ी वाले चेहरों को अच्छे से बनाता था और अपनी परिष्कृ त रचनाओं और रंगों के उपयोग के लिए पहचाना जाता था। इसके अलावा एक अन्य कलाकार शाह मुजफ्फर का भी वर्णन मिलता है जो केश चित्रण में श्रेष्ठ था। बाबर भारत का बहुत कम समय तक शासक रहा क्योंकि 1530 ई. में बाबर की मृत्यु हो गई ।

1530 ई. बाबर की मृत्यु के पश्चात् बाबर का पुत्र हुमायूं शासक बना। हुमायूं का अधिकांश समय युद्धों और राजनैतिक संघर्षों में बीता क्योंकि इसके समय में अफगान शेरशाह सूरी ने इसे गद्दी से उतार दिया। इसके बाद हुमायूं ने सफाविद फारसी शासक शाह तहमास्प के दरबार में शरण ली। शाह तहमास्प के दरबार में रहते हुए सफाविद पांडुलिपि और चित्रकला शैली में रूचि जाग्रित हुई जो की कुशल कारीगरों द्वारा चित्रित की जाती थी। 1545 ई. में शाह तहमास्प की सहायता से हुमायूं ने काबुल पर अपना अधिकार कर लिया। हुमायूं अपने राज्य में राजनीतिक और सांस्कृतिक कार्यों के प्रति उदार रहे। निर्वासन के दौरान हुमायूं चित्रकारों से अत्यधिक प्रभावित थे। भारत पर पुनः अधिकार होने के बाद हुमायूं ने दो फारसी चित्रकारों, मीर सैयद अली और अब्दुसम्मद शिराजी को भारत आमंत्रित किया और उनके निर्देशन में भारत में भी फारस जैसी कार्यशालाओं की स्थापना की।

हुमायूँ एक कला प्रेमी शासक था। हुमायूँ ने चित्रकला, सुलेख और पुस्तकों का संरक्षण हेतु शाही संग्रहालय बनवाए। जो हुमायूँ की सक्रिय रुचि, कला प्रेम, सौंदर्य शास्त्री के रूप में प्रदर्शित करते है। उन्होंने 'निगार खाना' (पेंटिंग वर्कशॉप) की स्थापना की जो उनके पुस्तकालय का हिस्सा था। हुमायुँ के समय हम्जानामा का चित्रण और योजना हुमायूँ के समय में ही शुरू की गई जिसे उनके बेटे और उत्तराधिकारी अकबर ने जारी रखा।

मुगलकला के आरंभिक चित्रों में से एक चित्र तैमूर घराने के एक राजकुमार (1545–1550) का है जो सफाविद चित्रकार अब्दुसम्मद शिराजी के द्वारा सूती वस्त्र पर अपारदर्शी जल रंगों से बनाया गया।

तैमूर के घर के राजकुमार, अब्दुसम्मद शिराजी, 1545–1550, ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन

किंतु चित्र का आकार जटिल संरचना और ऐतिहासिक चित्रों का चित्रांकन आश्चर्यचकित करने वाला है। मुगल कला में मुगल वंश के प्रत्येक राजकुमार और बादशाहों के चित्र देखने को मिलते है। जो शाही परिवार की बहुमूल्य संपत्ति है।

हुमायूं के पश्चात मुगल वंश के पूर्वजों को पेड़ों, फूलों, खुली हवा और शाही उत्सवों में दर्शाया गया है। इन चित्रों में फारसी प्रभाव और रंग योजना उल्लेखनीय थी। इस समय के चित्रों में भारतीय प्रेरणा या शैली का कोई भी प्रभाव नहीं है लेकिन शीघ्र ही बदलाव आया और मुगल शैली की संवेदनशीलता और पसंद का समायोजन भारतीय शैली में हो गया।

हुमायूं ने जिस कला परम्परा की शुरुआत की उसको आगे बढ़ाने का कार्य हुमायूं के पुत्र और बादशाह अकबर ने किया अकबर के दरबारी इतिहासकार ने अकबर के कला प्रेम के बारे में उल्लेख किया कि इस समय शाही चित्रशाला में 100 से भी अधिक कुशल कारीगर कार्यरत थे। इसमें फारसी और भारतीय कलाकार शामिल थे। इंडो–पारसी कलाकारों के इस समागम से एक नई चित्रशैली का विकास हुआ ।

अकबर डिसलेक्सिया (वह बीमारी जिसमें इंसान को पढ़ने में परेशानी होती है) से पीड़ित था। इस समय विषय वस्तु में नए कलात्मक मापदंडो की शुरुआत हुई और पांडुलिपियों के चित्रण पर बहुत जोर दिया गया। कई पांडुलिपियों के अनुवाद और चित्रण में मौलिक रचनाओं की शुरुआत हुई । इसी कड़ी में सबसे पहले हम्जानामा (चित्रित ग्रन्थ) जो उनके पिता हुमायूँ ने आरम्भ करवाई और अकबर के समय तक इसका कार्य निरंतर चलता रहा। हम्जानामा का रचनाकाल सन् 1567–1582 ई. है। हम्जानामा में 14 खण्ड जिसमें 1400 चित्र है जिन्हें पूरा करने में लगभग 15 साल का समय लगा। हम्जानामा का चित्रण दो फारसी चित्रकार मीर सैयद अली और अब्दुसम्मद शिराजी की देखरेख में पूरा हुआ। हम्जानामा के चित्र कपड़े पर बनाये गए इसके

पीछे कागज लगाए गए जिस पर घटनाओं का विवरण लिखा जाता था। इसके लिए गुआश या GOUACHE तकनीक (पानी आधारित अपारदर्शी रंग) का प्रयोग किया गया ।

हम्जानामा में पैगंबर मोहम्मद के चाचा हमजा की साहसिक घटनाओं का चित्रण है। अकबर हम्जानामा की कहानियां सुना करता था। हम्जानामा की कहानियों को एक पेशेवर कथावाचक जोर–जोर से पढ़कर सुनाया करता था। साथ ही कहानियों को और अधिक समझने के लिए उन्हें चित्रित किया गया था। सम्राट अकबर ने हम्जानामा के चित्रण और पठन में विशेष रूचि ली। मुगल काल में चित्रण सामूहिक रूप से किया जाता था जो कई कला परंपराओं से प्रेरित था। इसमें तात्कालिक प्राकृतिक परिवेश व संसाधन, वनस्पतियों और जीवों की छवियों को चित्रित किया गया। हम्जानामा के चित्र आज दुनिया भर के संग्रहालयों और निजी संग्रह में संग्रहित हैं ।

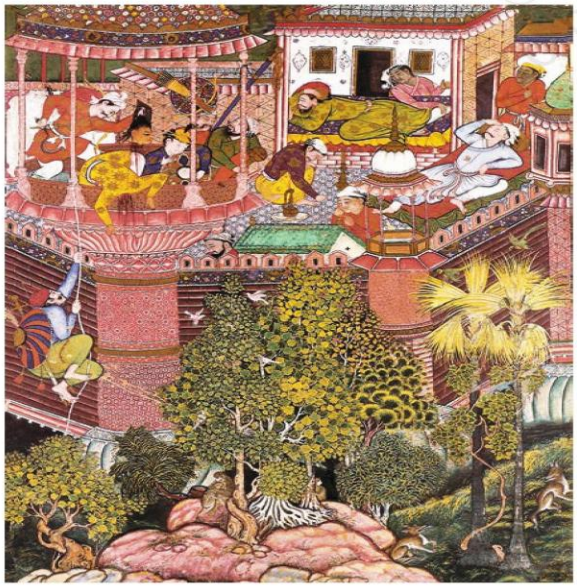

हमजा के जासूसों का कयामार शहर पर हमला, 1572–1582, म्यूजियम ऑफ अपलाइड आर्टस, वियना।

हम्जानामा के एक चित्र में 'जासूसो का कायमार शहर पर हमला' (1567–1582) करते हुए दिखाया गया हैं। चित्र को ऐसे बनाया गया है जैसे कथाकार के सामने यह घटनाक्रम हुआ है। चित्र में विभिन्न घटनाओं को देखा जा सकता है तथा जीवंत रंगों ने कहानी की विषयवस्तु को और अधिक चरितार्थ किया है। जहां हमजा के जासूस कायमार शहर पर हमला कर रहे हैं एक गहरी मजबूत बाहरी रेखाओं से वनस्पति और अन्य रूपों को सीमांकित किया है। चित्र में चेहरे बड़े और तीन चौथाई चेहरे बनाये गए हैं। फर्श, स्तंभों और छत पर जटिल अलंकरण बनाये गए है चार अंगों वाले जानवर और चट्टानों में फारसी प्रभाव है, वही रंगों में शुद्ध पीले, लाल और भूरे रंगों के साथ पेड़–पोधों में भारतीय प्रभाव दिखाई देता है ।

अकबर ने सांस्कृतिक एकीकरण के उद्देश्य से हिंदू ग्रंथों के अनुवाद के साथ–साथ संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद तथा चित्रण भी करवाया जिसमें हिंदू महाकाव्य महाभारत का फारसी भाषा में अनुवाद और चित्रण करवाया। महाभारत के फारसी अनुवाद को 'रज्मनामा' के नाम से जाना जाता है यह कार्य चित्रकार दसवंत की देखरेख में सन् 1589 ई. में पूरा हुआ। रज्मनामा में अलंकृत सुलेखों के साथ 169 चित्र बने है। रामायण का अनुवाद और चित्रण भी इसी समय में किया गया था अकबर के समय में गोवर्धन और मिस्किन जैसे चित्रकार कार्य कर रहे थे जो दरबारी दृश्य चित्रण के लिए प्रसिद्ध थे ।

- **अकबरनामा :–**

यह एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। जिसमें अकबर के राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन का परिचय मिलता है। अकबर ने लाखों रूपये खर्च कर ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रन्थों की रचना करवाई । अकबर व्यक्तिगत रूप से कलाकारों से मिलता और उनके कार्यो का देखता और मूल्यांकन करता। अकबर के समय चित्रकारों ने विभिन्न विषयों को चित्रित किया जिसमें

राजनीतिक विजय, दरबारी दृश्य धार्मिक –पौराणिक कथाएं महत्वपूर्ण व्यक्तियों के व्यक्तिचित्र तथा फारसी और इस्लामिक विषय शामिल थे। अकबर का भारतीय हिन्दू धर्म और नागरिकों के प्रति सम्मान ने उन्हें देश का सबसे लोकप्रिय सम्राट बना दिया ।

- **मेडोना एंड चाइल्ड :–**

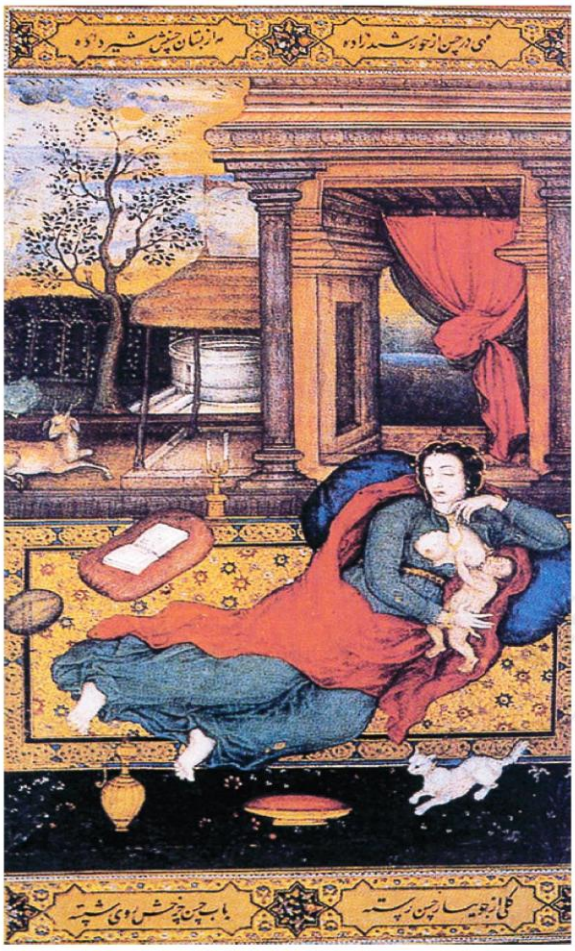

यह मुगल स्कूल ऑफ पेंटिंग का एक महत्वपूर्ण चित्र है। इस समय यूरोपीय अधिकारीयों (अंग्रेज अधिकारीयों) का अकबर के दरबार में संपर्क था। यह चित्र कागज पर अपारदर्शी पानी के रंगों से तैयार किया गया है। मेडोना एंड चाइल्ड एक असाधारण विषय था जिसमें बाईजेन्टाइन कला यूरोपीय शास्त्रीय और पुनर्जागरण का प्रभाव मुगल कार्यशालाओं तक पंहुचा। माँ मैरी को परम्परागत वस्त्रों को पहने दिखाया गया है। चित्र में मां और बच्चे के बीच वात्सल्य या ममत्त्व भाव को दिखाया गया है। बच्चे की शारीरिक संरचना, पंखों और आभूषणों में भारतीय प्रभाव दिखाई देता है ।

मैडोना एण्ड चाइल्ड, बसावन, 1590, सैन डिएगो कला संग्रहालय, कैलिफोर्निया।

अकबर की कलारुचि से प्रभावित होकर कई शासकों ने अपने दरबारों में इसका अनुसरण किया और यहाँ के दरबारों में श्रेष्ठ कलाकृतियों का निर्माण हुआ जो मुगल कला शैली की नकल का प्रयास था।

अकबर ने मुगल शैली के जो मापदण्ड निर्धारित किये। उसको पूर्ण यौवन पर पहुँचाने का श्रेय अकबर के पुत्र जहांगीर (1605–1627) को जाता है । राजकुमार सलीम (जहांगीर) की कला में अत्यधिक रूचि थी। इन्होंने बचपन से ही कला में रुचि दिखानी शुरू कर दी। अकबर के समय राजनीतिक और धार्मिक विषयों के चित्रों और पांडुलिपियों का चित्रण हुआ, वहीं उसके विपरीत जहांगीर के समय कला में नाजुक टिप्पणी और बारीक अलंकृत चित्रों को प्रोत्साहित किया।

जहांगीर के दरबार में प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार आकारिजा और उसका पुत्र अबुल हसन थे। जहांगीर ने इन्हें चित्रकला में अद्भुत प्रयोग हेतु नियुक्त किया। अकबर के समय कई

शाही संग्रहालय थे। इसके बावजूद जहांगीर ने भी अपना खुद का संग्रहालय स्थापित करने के लिए विद्रोह कर दिया।

- **तुजुक–ए–जहांगीरी :–**

जहांगीर की आत्मकथा 'तुजुक ए जहांगीरी' में जहांगीर की कला में रुचि और वनस्पति, जीवों या चित्रांकन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए किये गए प्रयासों का विवरण मिलता है। जहांगीर के संरक्षण में मुगल चित्रकला में प्राकृतिक और वैज्ञानिक सटीकता और उच्चता दिखाई देती है ।

अकबर के समय चित्रशालाओं में काफी संख्या में चित्रों का निर्माण होता था, किन्तु इसके विपरीत जहांगीर के समय चित्रशालाओं में मास्टर कलाकारों द्वारा बहुत कम, किन्तु श्रेष्ठ कलाकृतियां बनाई जाती थी। जहांगीर के समय में चित्रों के एल्बम बनाये जाते थे इन एल्बम को 'मुरक्का' कहा जाता था जहाँगीर कालीन चित्रों में हाशिए या बॉर्डर को सोने के रंग से बनाया जाता। कई बार वनस्पतियों जीवों और मानव आकृतियों को भी इन हाशियों पर चित्रित किया जाता था। अकबर के समय युद्ध के दृश्य और कथाओं का चित्रण हुआ, किन्तु जहांगीर कालीन कला में सूक्ष्म विवरण भव्य दरबार, अभिजात्य शाही व्यक्तित्व, वनस्पतियों और जीवों की विशेषताओं के साथ चित्रित किया ।

जहांगीर के दरबार में जब यूरोपीय लोग आते तो अपने साथ श्रेष्ठ यूरोपीय चित्र और सजावटी सामान लाते जो उपहार स्वरुप बादशाह को भेट करते। जहांगीर के ब्रिटिश राजपरिवार से अच्छे संबंधों के कारण जहांगीर का यूरोपीय कला और उनके विषयों के प्रति आकर्षण बढ़ा। इस आकर्षण से ही प्रेरित होकर जहाँगीर ने यूरोपीय चित्रों का संग्रह किया। जहाँगीर के समय में ईसाई धर्म की विषय वस्तु का चित्रण हुआ, जिससे सांस्कृतिक और कलात्मक विशेषताओं का समागम हुआ। प्रचलित भारतीय व ईरानी शैली में यूरोपीय विचारों के मिश्रण से जहांगीर कालीन कला और अधिक प्रभावशाली तथा जीवंत हो गई। मुगल चित्रशाला में चित्रकारों ने तीन शैलियों स्वदेशी, फारसी और यूरोपीय को आत्मसात किया।

- **दरबार में जहांगीर :–**

जहांगीरनामा का एक चित्र 'दरबार में जहांगीर' सन् 1620 ई. में चित्रकार अबुल हसन और मनोहर द्वारा चित्रित एक श्रेष्ठ चित्र है जो ललित कला संग्रहालय बोस्टन में संग्रहित है। चित्र में जहांगीर केंद्र में सबसे ऊंचे सिहांसन पर बैठा चित्रित किया गया। चमकदार सफेद रंगों के स्तंभों के ऊपर छतरी बनी हुई है। पास में शहजादा खुर्रम हाथ जोड़े खड़ा है उसके पास उसका पुत्र सुजा खड़ा है। चित्र में दरबारियों को उनके पद और बौद्धिकता के अनुसार चित्रित किया है जो सरलता से पहचाने जा सकते हैं। उनका चित्रांकन सही और यथार्थवादी है, चित्र में दरबारियों और रईसों के मध्य इसाई पादरी को खड़ा बनाया गया है। चित्र में हाथी

और घोड़े इस आयोजन के महत्व को बढ़ा रहे हैं जहां उठे हाथ और झुके सिर जहांगीर को सलाम करते हुए चित्रित किए गए हैं।

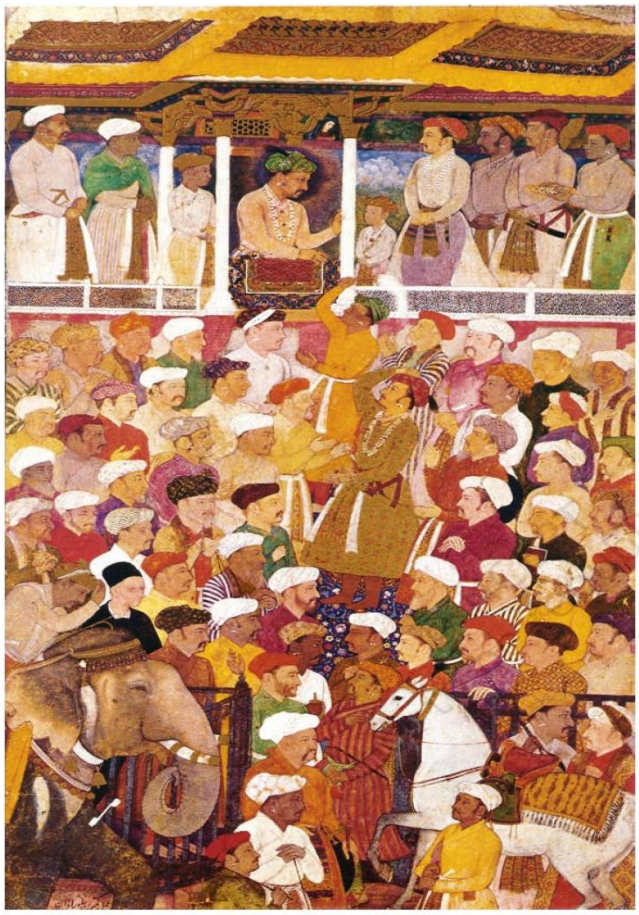

दरबार में जहाँगीर, जहाँगीरनामा, अबुल हसन और मनोहर, 1620, ललित कला संग्रहालय बोस्टन।

- **जहांगीर का सपना :–**

चित्र 'जहांगीर का सपना' (1618–1622) चित्रकार अबुल हसन द्वारा बनाया गया। अबुल हसन को 'नादिर उल जमां' (वंडर ऑफ द एज) की उपाधि से सम्मानित किया गया था। एक बार जहाँगीर ने सपना देखा जिसमें फारसी सफाविद बादशाह शाह अब्बास जो कंधार का शासक और जहांगीर का प्रतिद्वंदी था उसने सपने में जहांगीर के राज्य का भ्रमण किया। इस सपनों को अच्छा शगुन मानकर जहांगीर ने दरबारी चित्रकार अबुल हसन को इसे चित्रित करने को कहा। चित्र में जहांगीर द्वारा शाह अब्बास को गले लगाते दिखाया गया है यहाँ शाह अब्बास को कमजोर और जहांगीर के अधीन चित्रित किया हैं। सम्राट को विश्व विजेता के रूप में एक ग्लोब पर खड़े बनाया गया है चित्र में प्रतीकात्मक रूप में दो जानवर एक शक्तिशाली शेर जिस पर जहांगीर खड़े हैं, दूसरा भेड़ का है जिस पर शाह अब्बास खड़े चित्रित किया गया है। यहाँ एक शानदार सुनहरा प्रभामंडल जो सूर्य और चंद्रमा के होने का आभास देते हैं प्रभामंडल के ऊपर की और पंखों से युक्त फरिश्तों को बनाया गया है, जो मुगल चित्रों में यूरोपीय प्रभाव को दर्शाता है ।

- **समय सूचक यंत्र पर विराजमान जहाँगीर :–**

इस चित्र में जहांगीर को एक ऑवर ग्लास (HOUR GLASS) पर विराजमान दिखाया गया है । दरबारी चित्रकार विचित्र ने 1625 ई. में प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया। इस चित्र के दाहिने कोने में शेख हुसैन (शेख सलीम चिश्ती के वंशज जिनके नाम पर ही अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रखा था) अपने हाथ से उपहार के रूप पुस्तक सम्राट जहांगीर को भेंट कर रहे है । चित्र के नीचे और ऊपर फारसी लेख लिखा हुआ है चित्र में इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम और तुर्क सुल्तान भी हाथ में उपहार लिए चित्रित है।

जहाँगीर का सपना, अबुल हसन, 1618–1622, स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन, वाशिंगटन, डी.सी.।

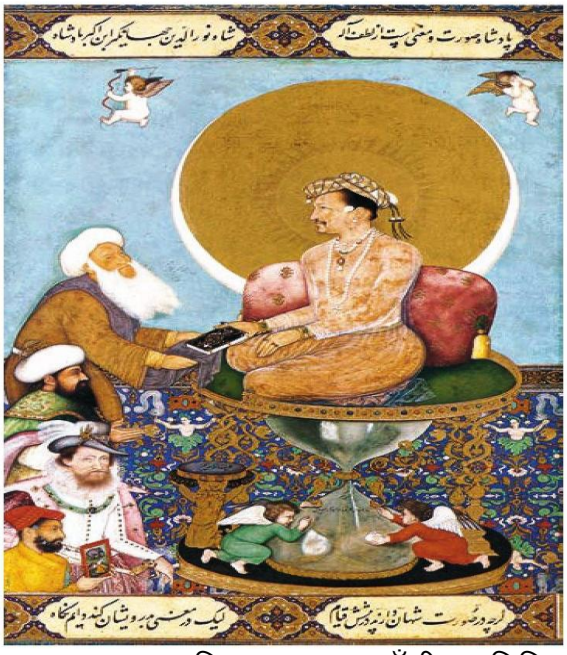

आवरग्लास पर विराजमान जहाँगीर, विचित्र, 1625, स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन, वाशिंगटन, डी.सी.।

जहांगीर के बाद उसका पुत्र खुर्रम शाहजहां (1628–1658) के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। शाहजहां को राजनीतिक स्थिरता, बेहतरीन चित्रकार और चित्रशालायें विरासत में प्राप्त हुई। शाहजहां ने कलाशालाओं में चित्रकारों को चित्रण के लिए प्रोत्साहित किया। इन चित्रों में गहनों जैसी चमक, उत्तम प्रतिपादन और जटिल बारीक रेखाओं का उपयोग देखा जा सकता है। चित्रों में उच्च विचारों की प्राथमिकता के साथ अन्य दृश्यों को भी बहुत सावधानी पूर्वक चित्रित किया गया चित्रों में जगमगाते रत्न आभूषण वास्तुकला के प्रति जुनून का चित्रण बादशाह की रूचि का परिचायक है।

पादशाहनामा और बादशाहनामा (राजा का इतिहास) की सचित्र पांडुलिपियों का चित्रण शाही कार्यशालाओं में श्रेष्ठ चित्रकारों के निर्देशन में हुआ। यह शाहजहाँ के समय की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत है। बादशाहनामा में भारतीय लघु चित्रकला व मुगल चित्रकला शैली में ऐतिहासिक और रहस्यवाद आदि विषयों के चित्रों को विभिन्न कोणों के साथ चित्रित किया गया ।

मुगल चित्रकला शैली ने अपने समकालीन सभी कलाओं को आत्मसात किया। जिसने उस समय यूरोपीय कलाकारों को भी प्रेरित किया। प्रसिद्ध यूरोपीय चित्रकार रेम्ब्रांट मुगल कालीन चित्रकला से प्रभावित होकर उसने नाजुक रेखाओं में महारत हासिल करने हेतु कई भारतीय चित्रों का अध्ययन किया। विश्व कला में मुगल लघु चित्रकला शैली का एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध स्थान है।

शाहजहां के बाद उसका पुत्र दारा शिकोह उत्तराधिकारी बना। दारा उदार, विद्वान एवं संस्कृत सहित कई भाषाओं का ज्ञाता था। दारा की रहस्यवाद और वेदांत विचारधारा में गहरी रूचि थी चित्र 'बगीचे में संतों के साथ दारा शिकोह' (1635 ई.) में उसके कला प्रेम को दर्शाती है । एक कवि और पारखी दारा शिकोह ने अपनी पत्नी को उपहार देने के लिए एक विशेष एल्बम बनाने का कार्य शुरू करवाया। लोग दारा के साहित्य और दर्शन प्रेम के कारण कमजोर समझते थे किन्तु दारा अपने भाई औरंगजेब से राजनीतिक, प्रशासनिक और वैचारिक मामलो में श्रेष्ठ था ।

औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य के विस्तार और एकीकरण के लिए दक्षिणी भारत में युद्ध और विजय प्राप्त की। औरंगजेब का पूरा ध्यान मुगल साम्राज्य के तीव्र विकास और उसके एकीकरण पर था। औरंगजेब ने चित्रशालाओं के विकास के लिए अधिक प्रयास नहीं किया। औरंगजेब द्वारा शाही कार्यशाला को तुरंत बंद नहीं किया गया तथा सुंदर कलाकृतियों का निर्माण जारी रहा।

- **उत्तर कालीन मुगल पेंटिंग :–**

संरक्षण की कमी के कारण कुशल कलाकारों ने मुगल संग्रहालय छोड़ दिया और प्रांतीय मुगल शासकों ने इन चित्रकारों को आश्रय देकर मुगल चित्रशैली की नकल करवाई और अपने राजवंश की महिमा और अपने दरबार की घटनाओं चित्रित करवाया ।

मुगल काल के अंतिम समय में मोहम्मद शाह रंगीला, शाह आलम द्वितीय और बहादुरशाह जफर के काल में कुछ उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण किया गया था। मुगल शैली में बना बहादुर शाह का एक चित्र (1838 ई.) जो फॉग कला संग्रहालय केम्ब्रिज, यू.के. में संग्रहित है। यह चित्र 1857 ई. के विद्रोह की असफलता के बाद अंग्रेजो द्वारा बहादुरशाह जफर को बर्मा में बंदी बनाये जाने के दो वर्ष पूर्व का था। अब कोई भी मुगल शासक नहीं बचा जो दिल्ली या उसके आसपास शाही अधिकार का दावा कर सके। बहादुरशाह जफर अंतिम मुगल शासक थे, जो एक कवि विद्वान और पारखी थे ।

नए राजनीतिक माहौल और अंग्रेजी शासन से भारत का संपूर्ण कला परिदृश्य बदल गया अब चित्रकार बदलते संरक्षको और उनके सौंदर्य अभिरुचि का चित्रण करने लगे। अंततः यूरोपीय संरक्षण में मुगल चित्रशैली और भारतीय कला के समायोजन से कंपनी स्कूल की शुरुआत हुई ।

- **मुगल चित्रकला प्रक्रिया :–**

मुगल कालीन लघु चित्र पांडुलिपियों और शाही चित्र संकलन के हिस्से थे। पुस्तक चित्र बनाने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई, जिसमें हस्तनिर्मित कागज को पाण्डुलिपि के आकार में काट लिया जाता था। कागज पर चित्रकार के लिए चित्रण हेतु स्थान छोड़ दिया जाता, उसके बाद रेखा बनाकर उपयुक्त लेख लिखा जाता था। इस लेख के आधार पर ही चित्रकार चित्र की रचना करता था। चित्र में रंगमेजी अर्थात चित्रों को रंग से भरना था ।

- **मुगल चित्रकला के रंग और तकनीक :–**

कला शालाओं के चित्रकार रंग बनाने में माहिर थे। यह रंग अपारदर्शी होते थे और रंगों को प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त कर सही रंग बनाने के लिए रंग पदार्थों को पीसकर और मिलाकर प्रयोग किया जाता था। ब्रश बनाने के लिए गिलहरी, बिल्ली के बच्चों के बालों और वृक्षों का प्रयोग किया जाता था। कार्यशाला में चित्रकारों के समूह का संयुक्त प्रयास होता था। जिसमें प्रारंभिक रेखांकन, रंगों को पीसना, रंग भरना और विवरण तैयार करना आदि कार्य चित्रकारों को बांट दिए जाते थे। इस प्रकार मुगल काल में कलाकृतियां कलाकारों के समूह का एक सहयोगात्मक प्रयास होती थी। जिस चित्रकार की महारथ जिस कार्य में होती वह चित्रकार चित्रण कार्य करता था । मुगल काल में कलाकारों को उनके काम के अनुसार वेतन, प्रोत्साहन राशि वृद्धि की जाती थी। चित्र के पूर्ण हो जाने के बाद रंगों में चमक देने या चिकना बनाने के लिए सुलेमानी पत्थर (एक एजेट) को चित्र पर रगड़ा जाता था।

रंगों में मुगल चित्रकार हिंगुल (सिनेबार) से सिंदूरी, लेपिस लजूली से नीला, हरीताल से पीला, गोले (शेल) से सफेद, चारकोल या काजल से काला आदि रंग प्राप्त करते थे। चित्र में विशेष प्रभाव दिखाने के लिए सोने और चांदी को रंगो के साथ मिलाकर चित्र पर छिड़काव कर अभूतपूर्व दिखाया जाता था ।

नूह का संदूक (जहाज) फ्रीर गैलरी ऑफ आर्ट, स्मिथसोनियन इंस्टिट्यूशन, वॉशिंगटन डी.सी., यूएसए

- **नूह का संदूक(जहाज) :–**

यह ठंडे रंगों (हल्के व शांत) से बना उत्कृष्ट चित्र 1590 ई. में चित्रित पांडुलिपि 'दीवाने–ए–हासिफ' का एक चित्र है जो अकबर के शाही महल के चित्रकार उस्ताद मिस्किन द्वारा बनाया गया है।

इस जहाज मैं पैगंबर के साथ जानवर भी है जिन्हें मनुष्य को उनके पापों के लिए दंडित करने के लिए भगवान द्वारा भेजी गई खतरनाक बाढ़ से बचाकर अन्य स्थान पर ले जाया जा रहा है। इब्लीस नामक शैतान जहाज को नष्ट करने के लिए आया है, नूह के पुत्र उसे जहाज से बाहर फेंक रहे हैं।

चित्र में हल्के लाल, नीले, पीले व शुद्ध सफेद रंग का आकर्षक प्रयोग है। जल के प्रभाव हेतु उर्ध्वाकार परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया गया।

- **पक्षी स्टैंड पर बाज :–**

यह चित्र मुगल शाहजहां जहांगीर के दरबार के मुख्य चित्रकार उस्ताद मंसूर द्वारा बनाया गया है। वर्तमान में यह राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित है। जहांगीर ने उस्ताद मैसूर को ''नादिर उल असर'' की उपाधि से सम्मानित किया था। जहांगीर के पास बाज पक्षियों का समूह था जिसका चित्रण करवा कर उन्होंने जहांगीरनामा में इसको शामिल किया।

फारसी सम्राट शाह अब्बास द्वारा जहांगीर को एक बाज पक्षी उपहार स्वरूप प्रदान किया। इस बाज पक्षी को बिल्ली द्वारा मार दिया गया ।सम्राट ने इस की स्मृति में चित्रकारों द्वारा मृत बाज को चित्रित करने की इच्छा व्यक्त की।चित्र के शीर्ष पर देवनागरी लिपि में लेख उल्लेखित है।

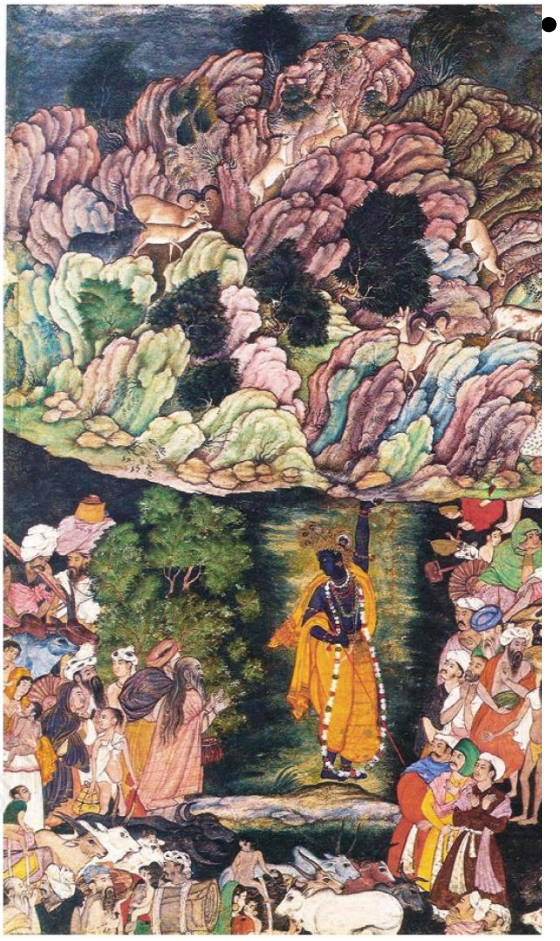

- **गोवर्धन पर्वत उठाते हुए कृष्ण :–**

यह हरिवंश पुराण पांडुलिपि का एक चित्र है। यह अकबर चित्रकार उस्ताद मिस्किन(1585–90) द्वारा बनाया गया है।यह वर्तमान में मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम आफ आर्ट, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए. में संग्रहित है। हरिवंश पुराण इन संस्कृत पांडुलिपियों में से एक है जिनका मुगल शासकों द्वारा फारसी में अनुवाद करवाया गया था।

अकबर द्वारा भगवान कृष्ण पर आधारित इस खंड का फारसी में अनुवाद करने के लिए महान विद्वान 'बदायूँनी' को नियुक्त किया था। बदायूँनी अपने रूढ़िवादी धार्मिक विचारों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। अकबर के दरबार के प्रसिद्ध इतिहासकार अबुल फजल बदायूँनी के विचारों के बिल्कुल विपरीत थे।

इस चित्र में भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपने हाथ से ऊपर उठा रखा है। भगवान इंद्र के प्रकोप से मूसलाधार वर्षा हो रही है। सभी ग्रामवासी, पशु, गोवर्धन पर्वत के नीचे आकर अपने प्राणों की रक्षा कर रहे।

- **जेब्रा :–**

इस चित्र पर लिखे फारसी लेख अनुसार–एक खच्चर जिसे तुर्क मीर जाफर के सहयोग से इथोपिया से लाया गया। चित्र का निर्माण जहांगीर कलाकार ''नादिर उल असर'' उस्ताद मंसूर द्वारा किया गया।

जहांगीरनामा के अनुसार यह जानवर मार्च 1621 ई. में नए साल के उत्सव के दौरान उन्हें भेंट किया गया। जहांगीर द्वारा सावधानीपूर्वक इसकी जांच की गई क्योंकि कुछ लोगों ने कहा यह एक घोड़ा है जिस पर किसी ने धारियों को चित्रित किया।

जहांगीर और फारसी सम्राट शाहाबाद एक दूसरे को दुर्लभ उपहार आदान प्रदान किया करते थे इस कारण से जहांगीर ने इस जेब्रा को शाहअब्बास के पास भेजने का फैसला लिया था।

यह चित्र जहांगीर के बाद उनके पुत्र शाहजहां को प्राप्त हुआ । शाहजहां द्वारा इस चित्र को शाही चित्रों और पुस्तकों में शामिल किया गया। चित्र में निर्मित अलंकृत हाशिए शाहजहां काल में चित्रित किए गए।

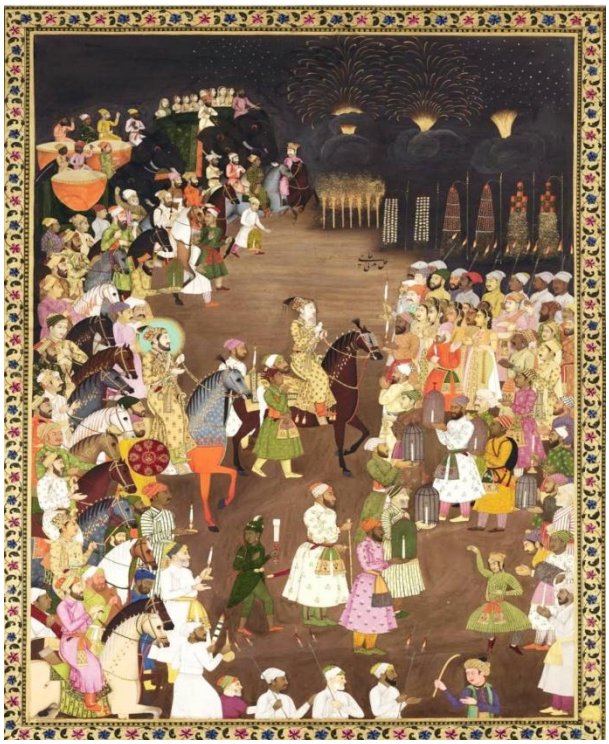

- **दारा शिकोह की बारात :–**

यह चित्र हाजी मदानी चित्रकार द्वारा शाहजहां के काल में निर्मित किया गया। इस चित्र में मुगल सम्राट शाहजहां के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह की बारात का चित्रण है। मुगल राजकुमार को पारंपरिक सेहरे के साथ भूरे रंग के घोड़े पर सवार दिखाया गया है तथा शाहजहां के सर के पीछे प्रभामंडल का अंकन किया गया। चित्र में संगीत, नृत्य और आतिशबाजी का अंकन भी किया गया है। यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न :–

1 मुगल चित्र शैली का विकास कब हुआ ?

2 मुगल शैली किन शैलियों के मिश्रण का स्वरूप थी ?

3 विहजाद कौन था ?

4 विहजाद किस शैली का कलाकार था ?

5 बाबर ने अपनी आत्मकथा में किस चित्रकार का उल्लेख किया है ?

6 बाबर ने विहजाद के अलावा किस अन्य चित्रकार का उल्लेख किया है

7 फारसी शैली का कौन सा कलाकार केश चित्रांकन में पारंगत था ?

8 फारसी शैली का कौन सा कलाकार दाढ़ी युक्त चेहरे बनाने में निपुण था ?

9 हुमायूं ने अपने दरबार में किन दो फारसी चित्रकारों को आमंत्रित किया था ?

10 हम्जानामा पांडुलिपि का चित्रांकन किसने प्रारंभ करवाया ?

11 हम्जानामा में कितने चित्र निर्मित किए गए हैं ?

12 रज्मनामा का चित्रण किस की देखरेख में पूरा हुआ ?

13 रज्मनामा में कितने चित्र थे ?

14 'मेडोना एंड चाइल्ड' चित्र का निर्माण किस चित्रकार द्वारा किया गया ?

15 रज्मनामा किस का फारसी अनुवाद है ?

16 'जहांगीर का सपना' नामक चित्र किस चित्रकार ने चित्रित किया ?

17 'नूह का संदूक' नामक चित्र की रचना किस चित्रकार ने की ?

18 'गोवर्धन उठाते कृष्ण' चित्र किस पांडुलिपि का भाग है ?

19 'दारा शिकोह की बरात' का चित्रण किस चित्रकार ने किया ?

20 जहांगीर के दरबार के मुख्य चित्रकार कौन थे ?

21 गोवर्धन उठाते कृष्ण का चित्र कहां पर संग्रहित है ?

22 मुगल काल में रंगों को कैसे तैयार किया जाता था ?

23 रेंम्ब्रांट कौन था ?

24 'पक्षी स्टैंड पर बाज' नामक चित्र का चित्रकार कौन है ?

25 किस मुगल शासक के काल को चित्रकला का स्वर्ण युग कहा जाता है ?

26 अकबर कालीन चित्रकला पर किस शैली का प्रभाव था ?

27 'नूह का संदूक (जहाज)' नामक चित्र वर्तमान में कहां पर संग्रहित है ?

28 मुगल शैली में 'गोवर्धन पर्वत उठाए हुए कृष्ण' का चित्रण किस चित्रकार ने किया ?

29 'अवरग्लास पर विराजमान जहांगीर' चित्र किस चित्रकार ने निर्मित किया ?

30 'तैमूर के घर के राजकुमार' नामक चित्र किस चित्रकार ने चित्रित किया ?

लघु उत्तरात्मक प्रश्न :–

1 मेडोना एंड चाइल्ड क्या है ? बताइए।

2 मुगलकालीन कला में चित्रों के विषय क्या थे ?

3 अकबर कालीन मुख्य चित्रकारों के नाम बताइए।

4 जहांगीर कालीन मुख्य चित्रकारों के नाम बताइए।

5 बाबर का चित्रकला के विकास में क्या योगदान रहा ?

6 हम्जानामा चित्रावली के बारे में बताइए।

7 जहांगीर के समय मुगल चित्रकला अधिक लोकप्रिय क्यों हुई थी ?

8 'नूह का संदूक' (जहाज) नामक चित्र की जानकारी दीजिए ।

9 'दरबार में जहांगीर' नामक चित्र की व्याख्या कीजिए।

10 अकबर कालीन कला की मुख्य विशेषताएं क्या है ?

11 जहांगीर कालीन कला की मुख्य विशेषताएं बताइए।

निबन्धात्मक प्रश्न :–

1 मुगलकालीन चित्रकला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अध्याय–4
–: दक्कनी चित्र शैलियां :–

दक्कनी कला शैली के विकास का समय लगभग 16वी शताब्दी के अंत से, 1680 ई. तक माना जा सकता है। इसी समय मुगल शासकों द्वारा दक्षिण पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया था। उसके पश्चात हैदराबाद के निजाम शासकों तथा असफिया राजवंशों का दरबारी संरक्षण इस कला को प्राप्त हुआ और आगे चलकर इसका इसी रूप में विकास हुआ। दक्षिणी चित्र शैली पर फारसी, तुर्की, मुगल ,सफाविद् तथा मुगल कला का समावेश भी माना जाता है।

दक्षिणी कला शैली को कला इतिहासकारों ने इंडो–फारसी कला के अंतर्गत रखा किंतु इस शैली को दक्षिण के राजवंशों का संरक्षण प्राप्त था। दक्षिण की सांस्कृतिक परंपरा का समावेश भी इस कला के चित्रों में देखने को मिलता है उस समय की प्रचलित धार्मिक व ऐतिहासिक चित्रण परंपरा मुगल शैली से पूर्ण रूप से भिन्न नहीं थी, इन चित्रों पर इसका प्रभाव भी था।

दक्षिणी शैली का विकास बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर जैसे समृद्ध राज्यों में हुआ। इन चित्रों में क्षेत्रिय सौंदर्य वाद को अनूठी कमनीयता और तीव्र रंगों के साथ चित्रित किया है। कलाकार द्वारा चित्रों में प्रेम की आभा को प्रदर्शित करने के लिए मुहावरों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

- **अहमदनगर चित्रकला शैली**

दक्षिणी चित्र शैली का प्रारंभिक उदाहरण अहमदनगर से प्राप्त हुए हैं, जिसमें हुसैन निजाम शाह प्रथम के समय (1553 ई.–1565 ई.) चित्रित कविताओं के एक खंड (तारीफ ए हुसैन शाही) में देखने को मिलता है, इसमें 12 लघु चित्र जो युद्ध दृश्य पर आधारित है। इन चित्रों में कलात्मकता का अभाव है किंतु, कुछ चित्र जो रानी और उसके विवाह से संबंधित चित्रों में भव्य रंगों में कमनीयता पूर्ण रेखाओं का अंकन हमें अपनी और आकर्षित करता है। इन चित्रों की महिला आकृतियां मुगल कला से पूर्व उत्तरी परंपरा में चित्रित महिला आकृतियों के समान है जो, इस समय मालवा और अहमदनगर में फल–फूल रही थी। ''तारीफ ए हुसैन

शाही'' सिंहासन पर बैठे राजा, अहमदनगर, 1565 ई.–1569 ई., भारत इतिहास समशोधक मंडल, पूना में सुरक्षित है।

चित्रों में महिला आकृतियों को चोली पहने हुए लंबी लटो, गुथी हुई चोटिओं के साथ दुपट्टा पहने चित्रित किया गया है। यह मुख्य रूप से दक्षिणी शैली का परिधान है जिसके, उदाहरण लेपाक्षी मंदिर के भित्ति चित्रों में देखे जा सकते हैं। 16वीं शताब्दी में चित्रित दक्षिणी शैली की रागमाला चित्रों में भी महिलाओं को जूड़े में बन्ध बालों के साथ दुपट्टा पहले चित्रित किया गया है।

इन चित्रों में क्षितिज रेखा का अभाव है, क्षितिज के स्थान पर उदासीन रंगों से छोटे–छोटे पौधे, गुंबद और मेहराबों को चित्रित किया गया है। इस शैली में केश सज्जा के अलावा सभी विशेषताओं पर उत्तरी भारत व पर्शिया (फारस) की कला के समान दिखाई देती है। अहमदनगर शैली में निर्मित की गई स्त्री–पुरुषों की पोशाक भी उत्तर भारतीय चित्र शैली के समान है। पुरुषों की पगड़ी छोटी बनाई गई है, जिसमें अकबर कालीन लघु चित्रों का प्रभाव है।

अहमदनगर शैली में ही 1567 ई. में गुलिस्ता पांडुलिपि का चित्रण हुआ, जिसे बुखारा कलाकारों ने चित्रित किया। बुखारा कलाकारों ने दक्षिणी शैली में कार्य किया, जिसकी जानकारी बांकीपुर पटना संग्रहालय से प्राप्त एक पांडुलिपि से मिलती है। इस पांडुलिपि

पर युसूफ नामक मुंशी के हस्ताक्षर हैं जो इब्राहिम आदिल (1569 ई.) के समय की है इस पांडुलिपि में 7 लघु चित्र हैं जो, बुखारा शैली मैं चित्रित है।

- **<u>बीजापुर चित्र शैली</u>**

बीजापुर चित्र शैली का विकास आदिल शाह प्रथम (1558 ई.–1580 ई.) व उसके उत्तराधिकारी इब्राहिम द्वितीय (1580 ई.–1627 ई.) के समय माना जाता है। इब्राहिम द्वितीय संगीत विशेषज्ञ था, इसके द्वारा नौरसनामा पुस्तक की रचना की गई। इब्राहिम द्वितीय को ही 'नुजूम अल उलूम' पांडुलिपि का मुख्य संरक्षक माना जाता है, और इब्राहिम द्वितीय के समय ही 'रागमाला' चित्रों का चित्रण (1590 ई.) भी किया गया।

बीजापुर चित्र शैली एक समृद्ध चित्रकला शैली है जिसका, स्वरूप 1570 ई. में निर्मित की गई 'नुजुम अल उलूम' के सचित्र विश्वकोषीय रचना से मिलता है जिसमें, 876 लघु चित्र बनाए गए हैं जो नक्षत्र विद्या, हथियारों, बर्तनों को प्रदर्शित करते हैं। 'नूजुम अल उलूम' मुख्य रूप से खगोलीय विद्या पर आधारित सचित्र ग्रंथ है।

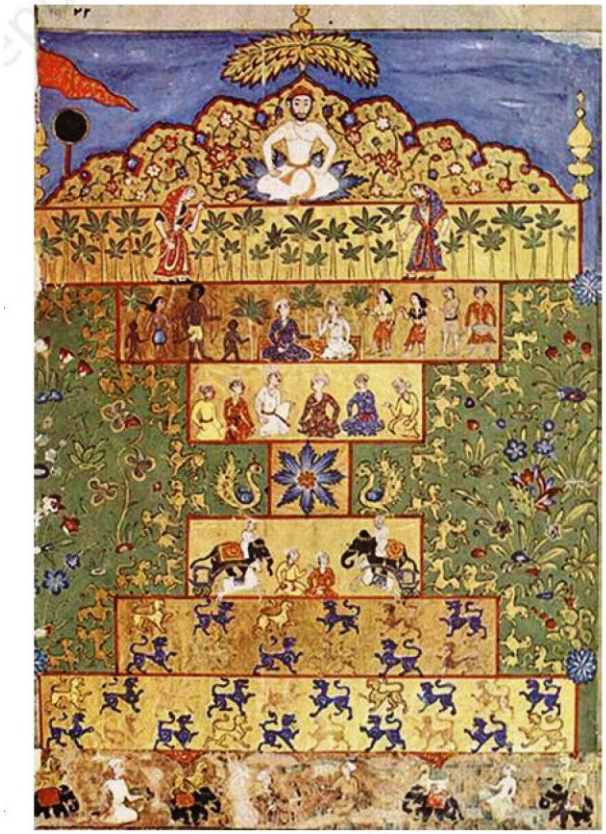

'नूजूम अल उलूम' सचित्र पांडुलिपि में ''समृद्धि का सिंहासन'' नामक एक चित्र है जिसका निर्माण 1570 ई. में किया गया। इसमें सिंहासन के 7 चरण प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किए गए जिसमें, हाथियों, बाघों, मोर, ताड़ के वृक्ष, आदिम जनजाति, लकड़ी के नक्काशीदार दरवाजे और चित्र के सबसे ऊपरी हिस्से पर सिंहासन पर आरूढ़ राजा का अंकन किया गया है, जो गुजराती व दक्षिणी भारतीय मंदिरों की याद दिलाता है। सिंहासन के दोनों और क्रमबद्ध रूप से पेड़ पौधों का अंकन किया गया है जो, 16वीं शताब्दी में निर्मित गुजराती पांडुलिपि के समान है। 'नुजूम अल उलूम' समृद्धि का सिंहासन बीजापुर शैली, चेस्ट बेरी पुस्तकालय, डबलिन आयरलैंड में है।

बीजापुर शैली का अन्य महत्वपूर्ण विषय योगियों से संबंधित है जो शारीरिक व भावात्मक रूप से अनुशासित जीवन जीने वाली, योग में विश्वास करने वाली, बौद्धिक अन्वेषण करने वाली, सांसारिक बंधनों से मुक्त चित्रित की गई है योगियों का चित्रण करने वाले कलाकार की स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है फिर भी, यह कहा जा सकता है कि, कलाकार को खड़ी आकृतियां बनाना अधिक पसंद था।

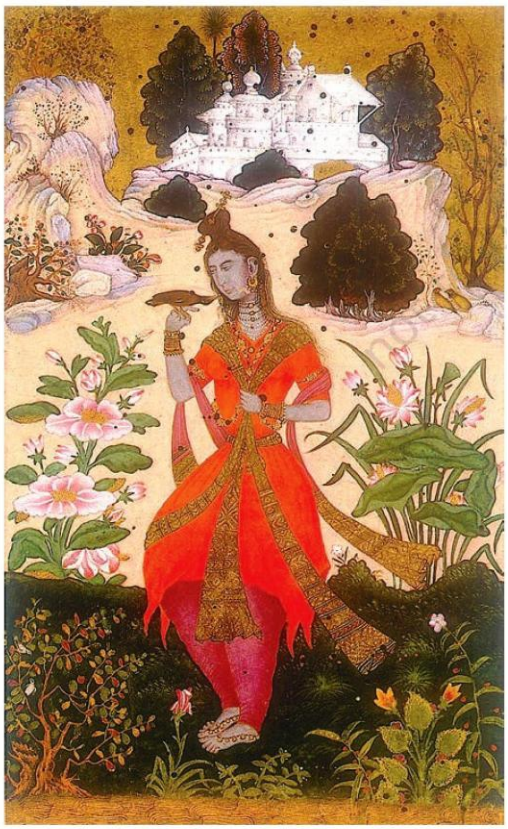

एक चित्र में योगिनी गले में लंबा दुपट्टा डालें आभूषणों से सुसज्जित बालों में जुड़ा बंधे मैना से वार्तालाप करते चित्रित की गई है। राग माला चित्रों में भी स्त्रियों को पतली व दक्षिणी वेशभूषा में दिखाया गया है। बीजापुर शैली का यह 'योगिनी' चित्र चेस्ट बेरी पुस्तकालय डबलिन, आयरलैंड में है। सुल्तान आदिल शाह द्वितीय तंबूरा बजाते हुए, बीजापुर शैली (1595 ई.–1600 ई.) चित्र, राष्ट्रीय संग्रहालय पराग्वे, चेक गणराज्य में है।

- **<u>गोलकुंडा चित्र शैली</u>**

16वीं शताब्दी के अंत तक गोलकुंडा राज्य दक्षिण का सबसे समृद्ध राज्य था जिस का मुख्य आधार पूर्वी तटीय बंदरगाहों से होने वाला व्यापार था। इसका व्यापार पर्शिया, यूरोप और दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के साथ था। 17वीं शताब्दी में यहां हीरे की खोज हुई जिसके, कारण यह राज्य अधिक समृद्ध हो गया।

गोलकुंडा की शुरुआती चित्रकला जिसमें बड़े आकार के चित्र बनाए गए जो लगभग 8 फुट से भी ऊंचे थे जो संभवतः दीवार पर लगाने हेतु बनाए गए थे। गोलकुंडा शैली के चित्रों में

चित्रित सोने से सुसज्जित सुंदर आभूषण हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं ओर चित्रों के विषय को असाधारण बना देते हैं।

गोलकुंडा चित्र शैली के शुरुआती प्रमाण 'दीवाने ए हसिफ' के 5 लघु चित्र हैं, इसकी निर्माण तिथि 1463 ई. है। इन चित्रों में एक शाही सभा का अंकन है जिसमें एक युवा शासक हाथ में पतली लंबी दक्षिणी तलवार लिए सिंहासन पर बैठे दरबार में चित्रित किया गया है। युवा शासक ने सफेद कसीदेदार अचकन पहन रखा है नृत्य करती कन्याएं, सभा का मनोरंजन करते चित्रित है। पांचो चित्र सोने के साथ गहरे नीले आकाश को छूते हुए भव्य रुप से समृद्धता को दर्शाते हैं। चित्रों में बैंगनी रंग का पर्याप्त प्रयोग हुआ है, कहीं–कहीं जानवरों को नीले रंग से अंकित किया है जिसमें, 'नीली लोमड़ी' मुख्य है इन सभी चित्रों में मुगल शैली का प्रभाव कहीं दिखाई नहीं देता।

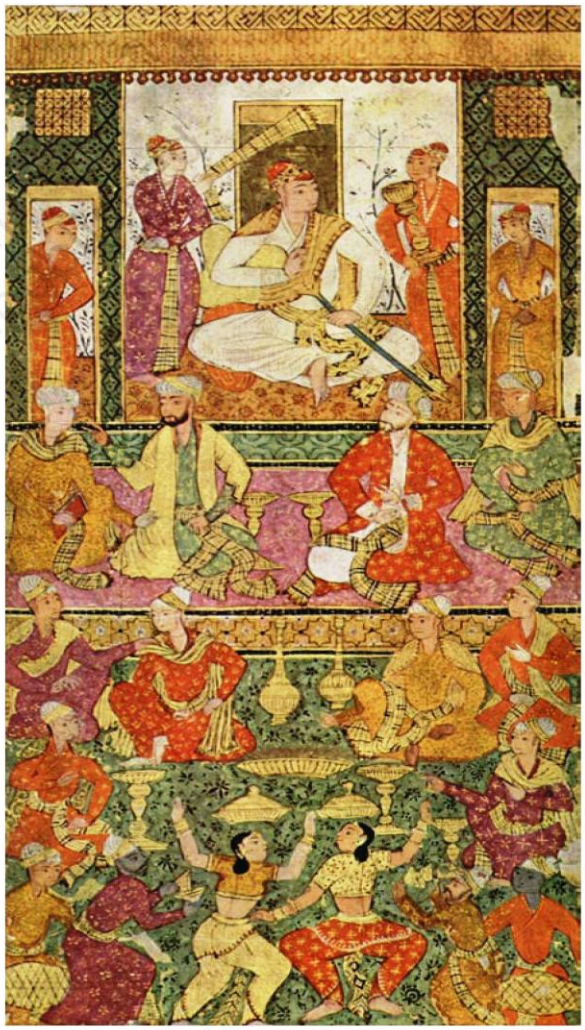

गोलकुंडा शासक मोहम्मद कुतुब शाह(1611 ई.–1626 ई.) चित्र में उन्हें एक दीवान पर बैठे दिखाया गया है शरीर पर गोलकुंडा की विशिष्ट पोशाक व सुरुचिपूर्ण तंग टोपी पहने चित्रित किया गया है। यह चित्र कलाकार की परिष्कृत व कुशलता पूर्ण शैली का परिचय देता है, इस चित्र पर मुगल शैली का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है। गोलकुंडा शैली का मोहम्मद कुली ''कुतुब शाह के सामने नृत्य'' नामक चित्र 1590 ई., ब्रिटिश संग्रहालय लंदन, यू.के. में सुरक्षित है।

एक अन्य पांडुलिपि जो सूफी कविताओं पर आधारित है जिसमें 20 से अधिक लघु चित्र चित्र किए गए हैं। इन चित्रों में सोने का प्रयोग अधिक मात्रा में किया गया है। आसमान को नीले व सुनहरे रंगों से चित्रित किया गया है जो, इन चित्रों की मुख्य विशेषता है। महिला और पुरुषों की वेशभूषा इब्राहिम द्वितीय (बीजापुर) के समय में चित्र चित्रों के समान है। चित्रों में वृक्षों और छोटे पौधों का अंकन सुंदर रंगों से किया गया है, इन्हीं चित्रों में एक लंबी महिला का चित्र भी है जो पक्षी से वार्तालाप कर रही है।

बगीचे में कवि, मुहम्मद अली, गोलकुंडा, 1605–1615 ई. ललित कला, संग्रहालय, बोस्टन, यू.एस.ए.।

अन्य महत्वपूर्ण चित्र

- **समग्र घोड़ा (Composite Horse)**

इस चित्र में घोड़े का चित्रण करते समय कलाकार ने घोड़े में अनेक आकृतियों को चित्रित किया, साथ ही, पृष्ठभूमि में भी अनेक असाधारण आकृतियां जैसे–उड़ते हुए सारस, शेर, चीनी बादलों का चित्रण, बड़े पत्ते वाले पौधे आदि दर्शाए गए हैं जो कलाकार की कल्पनाशीलता वह स्वप्नलीनता को प्रदर्शित करता है। कुछ आकृतियों को आकाश में उड़ते हुए दिखाया है, जिनकी आंखें चित्र में चित्रित की गई चट्टान को देखती हुई प्रतीत होती है। चित्र में घोड़े को सरपट दौड़ते हुए दिखाया है।

- **सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (हॉकिंग)**

यह चित्र संवेदनशीलता और असाधारण ऊर्जा का प्रतीक है। इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय को घोड़े पर बैठे चित्रित किया है, घोड़ा तीव्र गति से दौड़ रहा है। सुल्तान का चेहरा कोमल रूप से चित्रित किया गया है, तथा उसके हाथ में एक बाज पक्षी को अंकित किया गया है।

- **राग हिंडोला की रागनी पाठमशिका**

लगभग 1590 ई.–1595 ई. में चित्रित बीजापुर शैली का यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है यह चित्र राग माला परिवार की संगीत विद्या को दर्शाता है। चित्र में फारसी व मुगल प्रभाव भी परिलक्षित होता है।

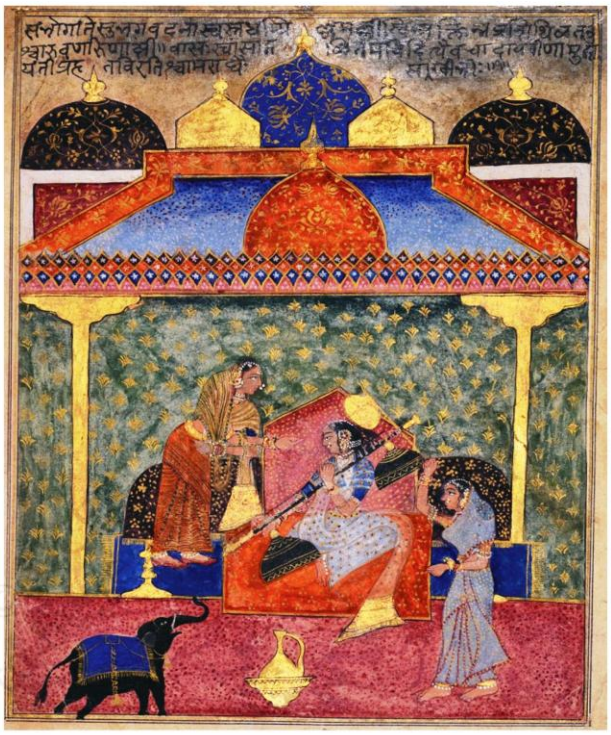

चित्र के ऊपरी भाग में दो गुंबद चित्रित किए गए हैं, जिसकी सतह पर अरबी सजावट है तथा ऊपर के हिस्से में देवनागरी लिपि में व्याख्यान लिखे गए हैं चित्र की पृष्ठभूमि में दो महिलाएं तथा अग्र भूमि में एक महिला का अंकन किया गया है, मध्य में अंकित महिला के हाथ में वीणा के समान भारतीय वाद्य यंत्र का अंकन है। चित्र में लाल व हरे रंग का प्रयोग विरोधी वाणी योजना को प्रदर्शित करता है। चित्र में आकृतियां शैलीबद्ध है तथा शरीर का अंकन वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। चित्र में हाथी का अंकन सूंड उठाएं स्वागत मुद्रा में चित्रित है जिस पर अजंता के भित्ति चित्रों का प्रभाव प्रदर्शित होता है।

- **<u>सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह</u>**

बीजापुर के शासक का यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है इसके ऊपर एक फारसी भाषा का शिलालेख मिलता है। चित्र में सुल्तान कुतुब शाह को तलवार हाथ में लिए सिंहासन पर बैठे अंकित किया है। इसके सिर के पीछे एक प्रभामंडल अंकित है, जिससे उनकी भव्यता का प्रदर्शन होता है सुल्तान का कसा हुआ बदन, लंबी मूछें तथा फारसी पगड़ी पहने चित्रित किया गया।

- **हजरत निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो**

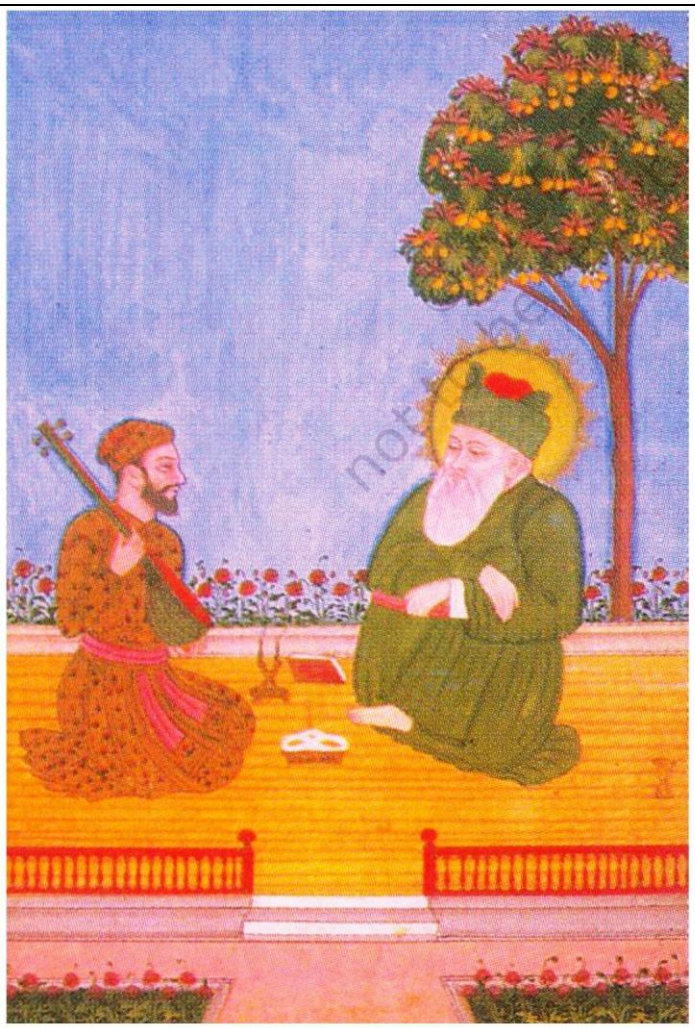	यह दक्षिण की प्रांतीय शैली हैदराबाद का चित्र है, जो राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है इस चित्र में हजरत निजामुद्दीन औलिया को अपने शिष्य अमीर खुसरो के साथ संगीत सुनते हुए चित्रित किया गया है। वर्तमान समय में भी दिल्ली स्थित हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर अमीर खुसरो की कव्वाली सुनी जाती है। चित्र को सरल व सादगी से युक्त चित्रित किया गया है जो, आकर्षक व लोकप्रिय भारतीय शैली का अंग है।

- **पोलो खेलते चांद बीबी**

बीजापुर की रानी चांदबीबी का यह चित्र जिसमें, उसे अन्य महिलाओं के साथ मैदान में पोलो खेलते हुए चित्रित किया है, इसमें दूर पृष्ठभूमि में आकाश का अंकन तथा क्षितिज पर सुंदर छोटे भवनों, पेड़–पौधों व पहाड़ों का चित्रण किया गया है। चित्र के ऊपर व नीचे हाशियों में चौकोर खाने बनाकर फारसी लेख अंकित किए गए। अग्र भूमि में पक्षियों का अंकन भी किया गया है, यह चित्र वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है।

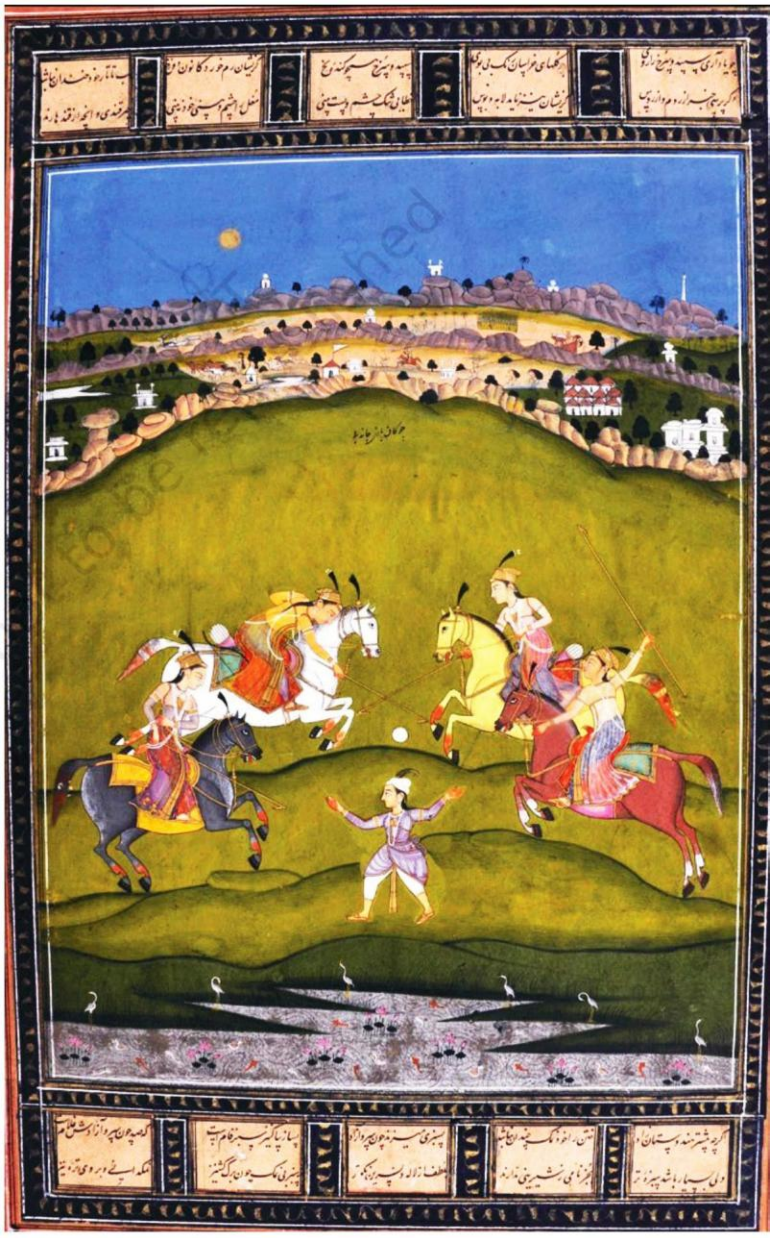

पाठ से संबंधित अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न :–

1. दक्षिणी चित्र शैली का विकास कब प्रारंभ हुआ ?
2. दक्षिणी शैली का विकास किन शैलियों के मिश्रण से हुआ ?
3. बीजापुर शैली की विश्वकोषिय है रचना कौनसी है ?
4. संगीत से संबंधित ग्रंथ नौरस नामा किसकी कृति है ?
5. राग माला श्रृंखला कब चित्रित की गई ?
6. 'समृद्धि के सिंहासन' नामक चित्र में कितने चरण है ?

7. अहमदनगर शैली में चित्रित 12 चित्रों का मुख्य विषय क्या है ?
8. 'नुजुम् अल उलूम' नामक सचित्र ग्रंथ में कितने चित्र संग्रहित हैं ?
9. योगिनी चित्र में योगिनी को किस पक्षी के साथ चित्रित किया ?
10. 'दीवान ए हसीफ' का चित्रण कब हुआ ?
11. 'बगीचे में कवि' नामक कृति किस शासक के समय की है ?
12. समग्र घोड़े नामक चित्र में किस रंग की प्रधानता है ?
13. उड़ते सारस, शेर व चीनी बादलों का अंकन किस चित्र में किया गया है ?
14. 'पोलो खेलते चांदबीबी' चित्र किस शैली का है ?
15. 'पोलो खेलते चांदबीबी' कहां पर संग्रहित है ?
16. दक्षिणी शैली के मुख्य केंद्र कौन–से हैं ?
17. गुलिस्ता पांडुलिपि के मूल चित्रों का अंकन किन कलाकारों ने किया ?
18. दक्षिणी चित्र शैली के विकास का समय क्या है ?
19. दक्षिणी चित्र शैली का विकास किन शैलियों से माना जाता है ?
20. अहमदनगर चित्र शैली के चित्र का नाम लिखिए ?
21. 'तारीफ ए हुसैन शाही' ग्रंथ का चित्रण किस शैली में हुआ ?
22. बीजापुर शैली के दो चित्रों के नाम लिखो।
23. गोलकुंडा चित्र शैली के दो चित्रों के नाम लिखो।
24. राग हिंडोला क्या है ?
25. ''राग हिंडोला की रागनी पाठमिका'' चित्र कहां संग्रहित है ?

<u>लघु उत्तरात्मक प्रश्न :–</u>

26. योगिनी क्या है ?
27. दक्षिणी शैली के राग माला चित्रावली के क्षेत्र का नाम बताइए ?
28. योगिनी चित्रण की विशेषता बताइए।
29. 'समग्र घोड़ा' चित्र के बारे में बताइए।
30. राग हिंडोला की रागिनी पाठमिका चित्र के बारे में जानकारी दीजिए।
31. पोलो खेलते चांदबीबी चित्र के बारे में बताइए।

32. बगीचे में कवि चित्र किस शैली का है ?

33. बगीचे में कवि चित्र की जानकारी दीजिए।

34. 'समृद्धि का सिंहासन' चित्र की विशेषता बताइए।

35. 'तंबूरा बजाते हुए फारूखी बैग' चित्र किस शैली का है ?

36. बड़े आकार के चित्र किस शैली में बनाए गए ?

37. ''हजरत निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो'' किस शैली का चित्र है और यह वर्तमान में कहां

संग्रहित है ?

38. योगिनी चित्रों की विशेषताएं क्या है ?

39. दक्षिणी चित्र शैली के विषय क्या है ?

40. 'तारीफ ए हुसैन शाही' से संबंधित चित्र वर्तमान में कहां संग्रहित है ?

41. बीजापुर शैली के बारे में लिखिए।

42. योगिनी चित्रों की विशेषताएं बताइए।

43. बीजापुर शैली के एक प्रसिद्ध चित्र के बारे में बताइए।

44. गोलकुंडा चित्रों की विशेषताएं क्या हैं ?

45. राग हिंडोला चित्रण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

46. गोलकुंडा चित्र शैली के बारे में जानकारी दीजिए।

47. दक्षिणी कला शैली की विषय वस्तु क्या है ?

48. बगीचे में कवि चित्र का वर्णन कीजिए।

49. राग माला चित्रण में स्त्री चित्रण की विशेषताएं बताइए।

50. अहमदनगर चित्र शैली की विशेषताएं बताइए।

अध्याय–5

–: पहाड़ी चित्रकला शैली :–

पहाड़ी चित्र शैली का आशय हिमालय क्षेत्र व उस की तलहटी में स्थित क्षेत्र की चित्र शैली से है। पहाड़ी चित्रकला के अंतर्गत पश्चिमी हिमालय की पहाड़ियों में स्थित बसोली, गुलेर ,कांगड़ा, कल्लू, चंपा ,मनकोट, नूरपुर, मंडी, बिलासपुर, जम्मू तथा अन्य शहर सम्मिलित है। पहाड़ी कला के यह सभी क्षेत्रों की कला 17वीं से 19 वीं शताब्दी तक विकसित हुई। पहाड़ी शैली का प्रारंभ बसौली शैली से हुआ था, उसके उपरांत गुलेर या पूर्वी कांगड़ा के माध्यम से भारतीय चित्रकला की उत्तम और परिष्कृत शैली विकसित हुई ,जिसे कांगड़ा शैली के नाम से जाना जाता है।

मुगल, दक्षिणी और राजस्थानी शैली की विशेष शैली गत विशेषताओं के विपरीत पहाड़ी शैली के चित्र कलाएं उनके क्षेत्रीय वर्गीकरण में सम्मिलित चुनौतियों को प्रदर्शित करती है। पहाड़ी शैली के सभी केंद्रों में चित्रकला की व्यक्तिगत विशेषताएं जैसे प्रकृति ,वास्तुकला, आकृतियों के प्रकार, चेहरों की विशेषताओं, वेशभूषा, विशिष्ट रंग योजना से विकसित हुई, परंतु विशिष्ट शैलियों के साथ स्वतंत्र शैलियों के रूप में विकसित नहीं हो पाई, क्योंकि काल विभाजन व लिखित जानकारी के अभाव में इनका वर्गीकरण करना मुश्किल जान पड़ता है। पहाड़ी शैली के उदय से संबंधित जानकारियां अस्पष्ट है, फिर भी हम यह कह सकते हैं कि पहाड़ी क्षेत्रों का संबंध मुगल वे राजस्थानी राज दरबारों से रहा था। जिसके कारण प्रांतीय मुगल शैली और राजस्थानी शैली के चित्रों के समान प्रभाव देखा जा सकता है।

पहाड़ी शैली में अपने चमकदार रंगों के लिए प्रसिद्ध बसौली शैली को आमतौर पर पहाड़ी शैली की सबसे प्राचीन शैली के रूप में जाना जाता है। पहाड़ी शैली के सबसे महत्वपूर्ण विद्वान रहे बी. एन. गोस्वामी के अनुसार भी बसौली शैली की सादगी, काव्यात्मकता और कांगड़ा शैली के शुद्ध स्वरूप ने पहाड़ी शैली के कलाकारों को एक दृष्टिकोण दिया। जिसके कारण इस शैली का पूर्ण विकास हुआ। बी.एन. गोस्वामी का विचार था कि पहाड़ी शैली के स्वरूप को विकसित करने में पंडित सेउ के परिवार का महत्व पूर्ण योगदान रहा। उनका यह तर्क था कि क्षेत्र के आधार पर पहाड़ी शैली के चित्रों की पहचान करने में संदेह हो सकता है, क्योंकि राजनीतिक सीमाएं बदलती रहती है। यह तर्क राजस्थानी शैली के लिए भी उचित है, क्योंकि मात्र क्षेत्र के कारण अस्पष्टता उत्पन्न होती है । विद्वान इस बात से सहमत हैं कि 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में सेउ के परिवार और अन्य चित्रकारों ने बसौली शैली को पुष्टता प्रदान की जो आगे चलकर 18 वीं शताब्दी के मध्य में पूर्वी कांगड़ा से परिपक्व होकर कांगड़ा शैली में परिवर्तित हो गई। आगे चलकर पहाड़ी शैली में आए व्यापक परिवर्तन का कारण मुगल आश्रय को छोड़कर पहाड़ी क्षेत्रों की ओर आए कलाकारों, स्थानीय शासकों, विभिन्न घटनाओं ने स्थानीय कलाकारों की चित्र शैली पर गहरा प्रभाव डाला।

- **बसौली शैली**

पहाड़ी राज्यों में कला शैली के रूप में सबसे पहले उदाहरण बसोली राज्य से प्राप्त होते हैं बसौली शैली के विकास में राजा कृपाल पाल(1678–1695) का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनके समय में बसौली शैली ने अपनी निजी विशेषताओं को ग्रहण किया इस शैली में प्राथमिक रंगों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया पृष्ठभूमि और क्षितिज को चित्रण करने में पीले रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में किया गया। आभूषणों के मोतियों को प्रदर्शित करने के लिए सफेद रंग का प्रयोग तथा आभूषणों को चित्रित करने और पन्ना के प्रभाव को दर्शाने के लिए भृंग कीट के पंखों के छोटे चमकीले हरे कणों का उपयोग किया गया। बसौली शैली अपने आकर्षक रंगों और लालित्यपूर्ण चित्रण में पश्चिमी भारत चित्रित की गई चोरपंचाशिखा (सचित्र ग्रंथ) के समान मानी जा सकती है।

बसौली शैली के चित्रकारों का प्रिय विषय भानु कृत रसमंजरी था, जिसका चित्रण सर्वप्रथम बसौली शैली में हुआ। 1694–95 में चित्रकार देवीदास द्वारा राजा कृपाल पाल के संरक्षण में इस ग्रंथ पर सुंदर चित्र संग्रह का निर्माण किया। भागवत पुराण और राग माला का चित्रण भी बसौली शैली में हुआ। इसके अतिरिक्त स्थानीय राजाओं ने अपनी रूचि के अनुसार पत्नियों, दरबारियों, ज्योतिषियों और भिक्षुओं के अनेक चित्र बनवाये।

''रसमंजरी'' , बसौली शैली ,(1720) ब्रिटिश संग्रहालय लंदन, यू.के. में सुरक्षित है।

बसौली शैली के कलाकार अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में भी फैल गए जिसमें चंपा और कुल्लू का महत्वपूर्ण स्थान था। इसकी जानकारी कुल्लू से प्राप्त संस्कृत महाकाव्य रामायण के चित्रों से होती है। इसे श्रृंगरी रामायण के नाम से जाना जाता है। श्रृंगरी नामक स्थान कुल्लू शाही परिवार का निवास स्थान था और इसकी एक प्रति राज परिवार के संरक्षण से प्राप्त हुई है। कुल्लू कलाकारों की यह प्रति बसौली और बिलासपुर की शैलियों से पूर्णतया प्रभावित है।

इस चित्र में राम वनवास जाने से पूर्व अपनी पत्नी और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या छोड़ने की तैयारी में लगे हुए हैं राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ अपनी संपूर्ण संपत्ति को जनता में बांटते हुए चित्रित किया गया है। इस चित्र में बायीं ओर राम और लक्ष्मण को सीता के साथ कालीन पर खड़े दिखाया गया है, सामने की ओर दान प्राप्त करने वाले लोगों की भीड़ लगी है। चित्रकार द्वारा इस दृश्य में वैरागी, ब्राह्मणों, दरबारियों, घरेलू सेवकों, आम लोगों को चित्रित किया है। इस चित्र में गाय के बछड़े टकटकी लगाए खुले मुंह से राम को निहार रहे हैं। स्थिति की गंभीरता को चित्रकार द्वारा अलग–अलग भावो में प्रदर्शित किया है जैसे–शांत और धीरे से मुस्कुराते राम, जिज्ञासु लक्ष्मण, आशंकित सीता, बिना चेहरे पर खुशी लाए दान प्राप्त करते ब्राह्मण आदि। ब्राह्मणों के मस्तक पर तिलक का निशान गाल पर हल्की दाढ़ी और मूंछों का अंकन किया गया है।

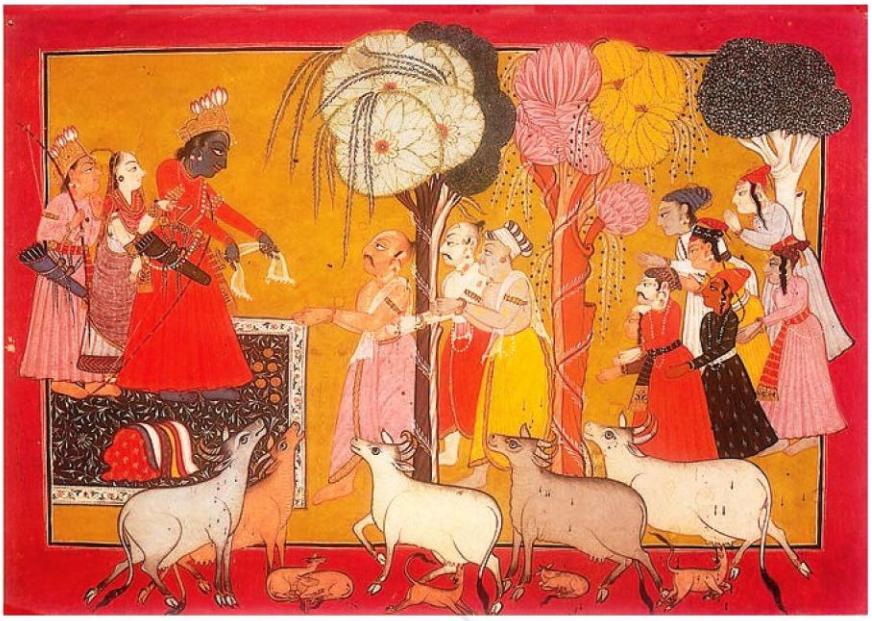

श्रृंगरी रामायण राम का संपत्ति त्याग'' अयोध्या कांड (1690–1700) लॉस एंजिल्स काउंटी कला संग्रहालय, यू.एस.ए. में सुरक्षित है।

इस चित्र में राम लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ घने जंगल में चित्र किया है जो साधुओं की तपस्या भंग करने वाले राक्षसों का वध करने के लिए तत्पर है। कलाकार द्वारा बड़ी कुशलता से बायी और एक भेड़िए का और दायी ओर बाघ का अंकन किया। राम और लक्ष्मण के चेहरे पर निडरता का भाव प्रदर्शित होता है।

चित्र ऋषि विश्वामित्र के पीछे चलते राम व लक्ष्मण 1680–1688 जो राजा रघुवीर सिंह संग्रहालय शृंगरी कुल्लू घाटी में सुरक्षित है।

- **गुलेर चित्रकला शैली**

18 वीं शताब्दी के तीसरे दशक के पश्चात बसौली शैली में पूर्ण परिवर्तन दिखाई दिया, जिससे गुलेर– कांगड़ा चरण का प्रारंभ हुआ। यह चरण सबसे पहले राजा गोवर्धन चंद के संरक्षण में गुलेर में दिखाई दिया जो कांगड़ा शाही घराने की एक उच्च शाखा थी।

गुलेर शैली के कलाकार पंडित सेव और उसके दोनों पुत्र मानक और नैनसुख द्वारा 1730–40 आस–पास पहाड़ी शैली के इस नवीन कला स्वरूप के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे पूर्व– कांगड़ा अथवा गुलेर – कांगड़ा नाम से जाना गया। गुलेर शैली में बसौली शैली के प्रखर चित्रण की तुलना में परिष्कृत ,मंद और सुरुचिपूर्ण चित्रण हुआ। मानक (जिन्हें मनकू कहा जाता है) व उनके भाई नैनसुख जो जसरोटा के राजा बलवंत सिंह के दरबारी चित्रकार थे। इन दोनों चित्रकारों द्वारा गुलेर शैली को विकसित रूप प्रदान किया गया।1780 के दशक में गुलेर शैली का परिपक्व स्वरूप सामने आया, जिसे कांगड़ा शैली में उच्च शिखर प्राप्त हुआ जबकि चंपा और कुल्लू में बसौली शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

मानक और नैनसुख के पुत्र और पुत्रों ने भी पहाड़ी शैली के विभिन्न केंद्रों की कला को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सभी पहाड़ी चित्र शैलियों में से गुलेर में चित्रों की एक विस्तृत परंपरा रही इस बात के प्रमाण है कि दिलीप सिंह(1695 –1743)के शासनकाल में हरीपुर गुलेर में चित्रकार कार्य कर रहे थे, क्योंकि गुलेर –कांगड़ा चरण(1730) के उद्भव से पहले के राजा दिलीप सिंह और उनके पुत्र विशन सिंह के कई चित्र प्राप्त होता है। विशन सिंह की मृत्यु के समय उनके पिता जीवित थे,

अतः उनके छोटे भाई गोवर्धन चंद ने राज्य का शासन संभाला और उनके समय चित्रकला में परिवर्तन देखने को मिला ।

मानक (मनकू) 1730 में गुलेर में गीत गोविंद का एक सेट चित्रित किया जो उसका सबसे उत्कृष्ट कार्य है जिसमें बसौली शैली का प्रभाव दिखाई देता है। उसके द्वारा इन चित्रों में आश्चर्यजनक रूप से भृंग कीट के पंखों के आवरण का भव्य उपयोग किया। मानक ने राजा गोवर्धन चंद और उसके परिवार के कई सुंदर चित्र बनाएं। गोवर्धन चंद के उत्तराधिकारी राजा प्रकाश चंद्र ने भी अपने पिता के समान कला को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया। उनके दरबार में मानक और नैनसुख के पुत्र खुशाला,फट्टू और गौधु कलाकार के रूप में कार्यरत थे।

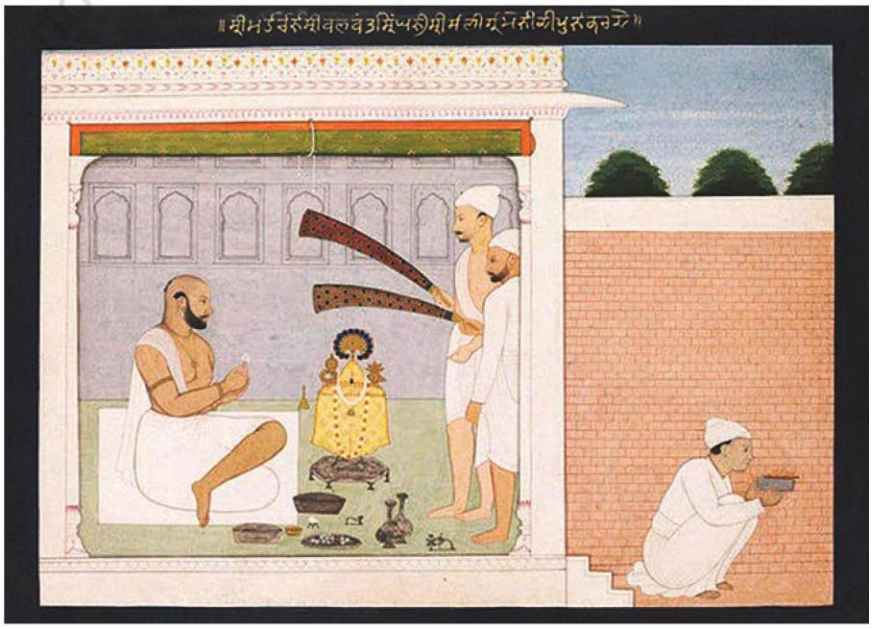

''प्रार्थना करते बलवंत सिंह'' नैनसुख,(1750) विक्टोरियन अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन, यू.के.।

''गोपियों को गले लगाते कृष्ण'' गीत गोविंद ,गुलेर (1760–1765) एन .सी. मेहता संग्रह ,अहमदाबाद, गुजरात ,भारत।

- **कांगड़ा चित्र शैली**

कांगड़ा क्षेत्र की चित्रकला को विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य राजा संसार चंद द्वारा किया गया। ऐसा माना जाता है कि राजा प्रकाश चंद के समय गुलेर में वित्तीय संकट की स्थिति आ गई। जिससे शाही चित्रशालाए बंद होने लगी और उनके प्रमुख कलाकार मानक व उनके पुत्र कांगड़ा के राजा संसार चंद के संरक्षण में आ गए।

संसार चंद कटोच वंश के शासक थे जो 10 वर्ष की उम्र में गद्दी पर बैठे। कटोच वंश ने कांगड़ा में लंबे समय तक राज्य किया। 17 वीं शताब्दी में जहांगीर द्वारा इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त करके कटोच शासकों को यहां का जागीरदार बनाया। मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात कटोच शासक राजा घमंड चंद द्वारा यहां के अधिकांश क्षेत्र पर पुनः अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। व्यास नदी के तट पर तिरा– सुजानपुर को अपनी राजधानी बनाया । अनेक सुंदर स्मारकों का निर्माण करवाया और कलाकारों के लिए चित्रशाला की व्यवस्था की। राजा संसार चंद के समय आसपास के सभी पहाड़ी क्षेत्रों पर कांगड़ा का वर्चस्व स्थापित हो गया उनके संरक्षण में तिरा–सुजानपुर चित्रकला के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित हुआ।

कांगड़ा शैली के चित्रों का प्रारंभिक केंद्र आलमपुर था तथा श्रेष्ठ चित्रों का प्रमुख केंद्र नादौन था। जहां राजा संसार चंद ने अपने जीवन के अंतिम समय को व्यतीत किया। कांगड़ा कला के यह केंद्र व्यास नदी के किनारे पर स्थित थे। आलमपुर से प्राप्त चित्रों में व्यास नदी का चित्रण देखने को मिलता है।

राजा संसार चंद का पुत्र अनिरुद्ध चंद्र (1823–1831)कला का मुख्य संरक्षक था। दरबारियों के साथ चित्रित उनके अनेक चित्र प्राप्त होते हैं।

कांगड़ा शैली अब तक की भारतीय शैलियों में सबसे काव्यात्मक और गीतात्मक चित्रण शैली है जिसे सुंदरता और कोमलता के साथ अंकित किया। रंगों की चमक, रेखाओं की कोमलता ,सूक्ष्म अलंकारों का प्रयोग कांगड़ा शैली की मुख्य विशेषताएं हैं। महिलाओं के चेहरे के अंकन में कलाकार द्वारा माथे के साथ सीधी नाक का चित्रण जो 1790 के आसपास प्रचलन में आया यह कांगड़ा शैली की मुख्य विशेषता है।

कांगड़ा शैली में भागवत पुराण, गीत गोविंद, नल दमयंती, बिहारी सतसई, राग माला और बारहमासा जैसे लोकप्रिय विषय चित्रित किए गए। कांगड़ा शैली के राजा संसार चंद व उनके दरबारियों के सचित्र संग्रह प्राप्त हुए हैं। जिनमें नदी किनारे बैठे हुए, संगीत सुनते हुए ,लड़कियों को देखते हुए ,त्योहारों के अवसर पर अध्यक्षता करते हुए, तंबू चित्रण, तीरंदाजी का अभ्यास करते हुए ,तैयारी करते सैनिक आदि मुख्य हैं।फट्टू,परखु और खुशाला कांगड़ा शैली के मुख्य चित्रकार थे।

कांगड़ा शैली में राजा संसार चंद के शासनकाल में अन्य पहाड़ी राज्यों की अपेक्षा चित्रण कार्य अधिक हुआ। राजा संसार चंद ने गुलेर और उसके आसपास के क्षेत्रों के कलाकारों को अपने राज्य में आमंत्रित कर वृहद् स्तर पर चित्रशाला और कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया।

कांगड़ा शैली का प्रभाव तिजारा सुजानपुर से पूर्व में गढ़वाल और पश्चिम में कश्मीर था। 1785–1805 की अवधि में कांगड़ा शैली में उत्कृष्ट चित्रों का निर्माण हुआ।
1805 में कांगड़ा पर गोरखाओं ने आक्रमण किया और राजा संसार चंद को तिरा–सुजानपुर के महल में शरण लेनी पड़ी। 1809 महाराजा रणजीत सिंह की मदद से गोरखाओं को खदेड़ दिया गया। उस समय के पश्चात कांगड़ा में चित्रण गतिविधियां प्रभावित हुई हालांकि, संसार चंद ने अपने कलाकारों और चित्रशालाओं को निरंतर संरक्षण प्रदान किया।
कांगड़ा शैली में चित्रित चित्र श्रृंखला में भागवत पुराण का अंकन मुख्य रूप से हुआ है। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य चातुर्य भाव और असामान्य मुद्रा को कलाकार द्वारा विशुद्ध रूप से चित्रित किया गया, जो नाटकीय दृश्य का सुंदर प्रदर्शन है। ऐसा माना जाता है कि इन चित्रों को गुरु नैनसुख के वंशजों द्वारा बड़ी कुशलता और नियंत्रण के साथ चित्रित किया गया।

- **भागवत पुराण(कृष्ण की लीलाओं का नाट्य रूपांतरण)**

भागवत पुराण के चित्र में पांच अध्यायों के एक समूह का अंकन है जिसे रास पंचाध्यायी के नाम से जाना जाता है। यह चित्र रस की दार्शनिक अवधारणा को समर्पित है। इस चित्र में गोपियों का कृष्ण के प्रति अथाह प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है। कृष्ण के अचानक अदृश्य हो जाने पर गोपियों का वास्तविक दर्द कलाकार द्वारा सुंदर रूप से अंकित किया गया है। अलगाव और उदास अवस्था में गोपियां हिरण, वृक्ष,लताओ को संबोधित करते हुए कृष्ण के ठिकाने के बारे में पूछ रही है।
कृष्ण की यादों में खोई गोपियां उनकी लीलाओं को याद करते हुए कृष्ण का वेश धारण कर अभिनय करती है। जीवन के विभिन्न लीलाएं जैसे– पूतना वध, यशोदा द्वारा कृष्ण को ओखली से बांधना, कृष्ण का यमला–अर्जुन को मुक्त कराना, गोवर्धन पर्वत को उठा कर ब्रजवासियों को वर्षा और इंद्र के प्रकोप से बचाना, कालिया नाग को वश में करना, कृष्ण की बांसुरी की मादक पुकार, आदि विभिन्न मुद्राएं निभाते हुए खेलों का अनुकरण करती है।
कलाकार द्वारा इन संवेदनशील छवियों को चित्रों में उत्कृष्ट रूप में अंकित किया। इस समूह चित्र में बायीं ओर एक गोपी, कृष्ण वेश धारण किए अन्य गोपी की छाती का स्पर्श करते प्रतीत होती है, जो पूतना की भूमिका में है। गोपी (पूतना राक्षसी) की सांस कमजोर हो रही है और वह मर रही है। उसने अपना एक हाथ सिर से भी ऊपर उठा रखा है। एक अन्य गोपी यशोदा का अभिनय कर रही है। गोपियां कृष्ण द्वारा पूतना को मारने के वीरता पूर्ण कार्य के उपरांत कृष्ण को बुरी नजर से बचाने के लिए अपने वस्त्र रख रही है।
चित्र समूह में दाईं ओर यह गोपी कृष्ण वेश में कपड़े की बनी रस्सी से ओखली से बंधी हुई है तथा एक अन्य गोपी यशोदा वेश में छड़ी लिए खड़ी है। पास ही एक समूह में पगड़ी पहने गोपी कृष्ण का रूप धारण किए ओढनी को गोवर्धन पर्वत के समान उठाए हुए है तथा कुछ गोपियां ओढनी के नीचे शरण ले रही है।

चित्र के सबसे बाईं ओर कृष्ण वेश में गोपी बांसुरी बजा रही है, कुछ गोपियां उनके समक्ष नृत्य कर रही है। कुछ को जमीन पर रेंगते हुए दिखाया गया है, जो कृष्ण के पास जाने के लिए तत्पर है। कुछ गोपियां उन्हें कृष्ण के पास जाने पर रोक रही है और पीछे की तरफ खींच रही है।

चित्र में सबसे दाएं तरफ अग्र भूमि में सबसे सुंदर दृश्य है जिसमें एक गोपी जमीन पर सोने से पुरित नीले रंग के वस्त्र को फेंक दिया है जो कई फनों वाले कालिया नाग का रूप ले लेता है जिस पर कृष्ण रूप में गोपी नृत्य मुद्रा में है।

कृष्ण की लीलाओं का नाट्य रूपांतरण, भागवत पुराण, गुलेर – कांगड़ा, भारत, 1880 – 85 ,निजी संग्रह।

- **नायिकाओं का चित्रण**

पहाड़ी चित्र में सबसे अधिक चित्रित विषयों में से एक अष्ट/आठ नायिकाओं का अंकन है जिसमें महिलाओं के विभिन्न स्वभावों और भावात्मक स्थिति का चित्रण है।

उत्का/उल्का–प्रियतम की धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करने वाली नायिका।

स्वाधीनपतिका–वह नायिका जिसका पति उसकी इच्छा के अधीन है।

वासकसज्जा–वह नायिका है जो अपने प्रेमी के यात्रा से लौटने का इंतजार कर रही है और उसके स्वागत और मिलन की तैयारी के लिए सेज को पुष्पों से सजाकर स्वयं सज– धज कर उसका इंतजार कर रही है।

कलहंतरिता–वह नायिका है जो प्रियतम के देर से आने पर उसका विरोध करती है तथा उसे अपने अभिमान को कम करने और पश्चाताप करने के लिए कहती है।

अभिसारिका–

पहाड़ी कलाकारों द्वारा अष्ट नायिकाओं का चित्रण किया गया है परंतु अभिसारिका नायिका जैसा उत्कृष्ट चित्रण अन्य किसी नायिका के चित्रण में देखने को नहीं मिलता है यह नायिका अपने प्रियतम से मिलने के लिए प्रकृति के विरोधी तत्वों पर विजय प्राप्त कर , सभी खतरों का सामना करने को आतुर होती है। नायिका की लगन, दृढ़ कल्पना शक्ति, विचित्र और नाटकीय संभावनाओं से भरी होती है।

अभिसारिका चित्र में सखी बता रही है कि, किस तरीके से अभिसारिका नायिका रात के अंधेरे में अपने प्रीतम से मिलने के लिए जंगल को पार कर गई थी ।कवि ने यहां योग का वर्णन किया है। नायिका एकल उद्देश्य को मन में धारण करके रात के अंधेरे में जंगल के सभी खतरों को पार करके गुजरती है।

अभिसारिका नायिका, कांगड़ा, 1812 –20 ,सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी चंडीगढ़ ,भारत।

कलाकार द्वारा अभिसारिका चित्रण में राक्षसों के अंकन को छोड़कर, (जो कहीं पर चित्रित है और कहीं पर चित्रित नहीं है) लगभग समान परिस्थितियों का अंकन किया है ,जैसे रात का अंधेरा, रोशनी की चमक, धुंधले बादल, पेड़ों के खोखले तनो से निकलते फुकार मारते सर्प, गिरते हुए आभूषण आदि।

- **बारहमासा का अंकन–**

19वीं शताब्दी के दौरान पहाड़ी चित्रकारों का लोकप्रिय विषय बारहमासा बन गया था। बारहमासा चित्रण के अंतर्गत वर्ष के बारह महीनों में नायिका और नायक की श्रृंगारिक विरह तथा मिलन की क्रियाओं का चित्रण किया गया है ।

केशवदास द्वारा कवि प्रिया के दसवें अध्याय में बारहमासा का वर्णन किया गया है। उन्होंने मई–जून के महीने में आने वाले ज्येष्ठ माह के गर्म महीने का वर्णन किया है। बारहमासा में कवि द्वारा प्रस्तुत की गई सभी स्थितियों का अंकन चित्रकार ने चित्रों में बड़ी प्रसन्नता पूर्वक किया है।

ज्येष्ठ माह में एक जोड़ा ,कांगड़ा, 1800, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

बसौली शैली की शाखाएं अपनी विशिष्ट विशेषताओं के साथ चंपा, कुल्लू, नूरपुर ,मनकोट, जसरोटा, मंडी, बिलासपुर, जम्मू आदि स्थानों पर विकसित हुई। कांगड़ा शैली का स्वरूप 1780 ई. के दशक में उभर कर सामने आया। कश्मीर में 1846–1885 ई. कांगड़ा की एक हिंदू शाखा के रूप में विकसित हुई। सिख राजाओं द्वारा कांगड़ा के चित्रकारों को नियुक्त किया।
पहाड़ी क्षेत्र की तीनों मुख्य शैलियां बसौली, गुलेर और कांगड़ा का व्यापक वर्गीकरण किया गया है। विद्वानों के विचारों में भी मतभेद है। यह वह सांस्कृतिक केंद्र हैं जहां एक शैली का प्रभाव दूसरी शैली में दिखाई देता है। गुलेर शैली को जसरोटा की शैली में देखा जा सकता है और जसरोटा शैली को गुलेर शैली में देखा जा सकता है। 17 वी – 18वीं शताब्दी में चंपा शासकों के चित्र बसौली शैली में प्राप्त होते हैं।
कुल्लू क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शैली और परंपरा रही है। कुल्लू के चित्रों में चेहरे पर चौड़ी खुली आंखें और विशिष्ट ठुड्डी बनाई गई। पृष्ठभूमि में स्लेटी व टेराकोटा लाल रंग का सुंदर प्रयोग किया गया है। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कुल्लू में श्रृंगरी रामायण का चित्रण किया गया। यह चित्र एक दूसरे से भिन्नता लिए हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि इन्हें विभिन्न कलाकारों द्वारा चित्रित किया गया होगा। विद्वानों के अनुसार बसौली शैली आगे चलकर कांगड़ा शैली में परिपक्व हो गई और नूरपुर के कलाकारों ने कांगड़ा की सुंदर आकृतियों में बसौली के जीवन तरंगों को बरकरार रखा।
बसौली और मनकोट के वैवाहिक संबंधों के कारण ऐसा माना जाता है कि बसौली के कुछ कलाकार मनकोट में आ गए। जिनसे चित्रण की एक नई शैली विकसित हुई। जसरोटा में राजा बलवंत सिंह ने कला को संरक्षण प्रदान किया और नैनसुख जैसे कलाकार भी राजा बलवंत सिंह के संरक्षण में काम करने लगे। नैनसुख द्वारा ही बसौली शैली को परिष्कृत रूप में विकसित किया जो आगे चलकर कांगड़ा– गुलेर के नाम से जानी गई।
मंडी के शासक शिव और विष्णु के उपासक थे इसलिए यहां कृष्ण लीलाओं के साथ शैव विषयों को भी चित्रित किया गया। गढ़वाल शैली मैं भी मौलाराम नामक एक चित्रकार कार्यरत थे जिसके कई चित्रों की जानकारी हमें मिलती है।गढ़वाल शैली राजा संसार चंद के समय की कांगड़ा शैली से प्रभावित थी।

मुख्य चित्र

- **प्रतीक्षारत कृष्ण और संकोची राधा**

पहाड़ी शैली के कलाकार पंडित सेउ के दोनों पुत्र मानक और नैनसुख ने बसौली शैली से कांगड़ा तक की पहाड़ी चित्रकला को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंडित शिव के पुत्रों ने कांगड़ा शैली का प्रतिनिधित्व किया जिसे पूर्व में गुलेर– कांगड़ा चरण में वर्गीकृत किया गया।

जयदेव रचित गीत गोविंद पर मानक द्वारा बनाए गए चित्रों की श्रेष्ठ श्रृंखला है, जिसमें राधा कृष्ण के यमुना तट पर प्यार या प्रेम से शुरुआत होती है। गीत गोविंद में बसंत ऋतु का सुंदर वर्णन तथा गोपियों के साथ कृष्ण के खेल का वर्णन भी है।

कृष्ण द्वारा उपेक्षित दुखी होकर राधा मंडप में बैठी अपनी एक सखी को रोते हुए कृष्ण के बारे में बताती है कि वह सुंदर चरवाहों की कन्याओं के साथ खेलते और घूमते रहते हैं। कुछ समय पश्चात कृष्ण को पश्चाताप होता है और वे राधा को ढूंढने के लिए आते हैं। राधा के न मिलने पर विलाप करते हैं। संदेशवाहक राधा के पास जाता है और कृष्ण की मनोदशा से उसे अवगत करवाता है। इसे सुनकर राधा उनसे मिलने के लिए तैयार हो जाती है फिर राधा और कृष्ण का भक्ति पूर्ण मिलन का वर्णन होता है। यहां सभी पात्र दिव्य रूप में है, जहां राधा को एक भक्त या आत्मा के रूप में और कृष्ण को ब्रह्मांड की शक्ति के रूप में है जिसमें राधा को आत्मसात हो जाना है। यहां खेला गया प्रेमी रूपी खेल मानवीय है। इस चित्र में राधा को शर्माते और झिझकते हुए चित्रित किया गया है। वह कृष्ण से मिलने के लिए वन क्षेत्र में पहुंचती है जहां कृष्ण उसका व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कलाकार की कल्पना का स्त्रोत चित्र की पृष्ठभूमि में अंकित शिलालेख है जिसका अनुवाद इस प्रकार है–''राधा! आपकी सखियों को इस रहस्य का ज्ञान हो गया है कि आपकी आत्मा प्रेम रूपी मिलन के लिए लालायित है। अब अपनी लज्जा को त्याग कर कमरबंद को खनकने दो और अपने प्रियतम से मिलने के लिए आगे बढ़ो।

राधा! तुम अपनी प्रिय सखी के साथ आगे बढ़ो और अपने हाथ की कोमल चिकनी, उंगलियों से उसे पकड़ो। आगे बढ़ो और अपनी चूड़ियों की झंकार से अपने प्रेमी के समक्ष अपने प्रेम की घोषणा करो। जयदेव का यह सुंदर गीत हमेशा भक्तों के होठों पर छाया रहता है। अंततः राधा ने अपनी सखियों का परामर्श मान लिया। फिर वह तनिक भी देर नहीं करती है और भीतर चली जाती है उसके कदम लड़खड़ाते हैं परंतु उसका चेहरा अनकहे प्रेम की आभा से चमक उठता है। उसकी चूड़ियों का संगीत प्रवेश द्वार से बाहर आने लगा जिससे उसकी उदास आंखों में पड़ी लज्जा भी लज्जित हो गई ।

- **नैनसुख के साथ पेंटिंग देखते बलवंत सिंह**

इस चित्र में जसरोटा के राजकुमार बलवंत सिंह अपने हाथों में पकडे कृष्ण के चित्र को देख रहे हैं उनके पीछे विनम्रता से झुकी हुई आकृति का अंकन है जो संभवत नैनसुख है।
इस चित्र में नैनसुख ने संध्या के समय का अंकन शांत भाव से किया है। जो नैनसुख और बलवंत सिंह के स्वभाव का सूचक है बलवंत सिंह बैठे हुक्का पी रहे हैं। संगीतकारों को बड़ी चतुराई से चित्र के एक हिस्से में अंकित किया गया है जिससे चित्र में शांति का वातावरण बन सके।

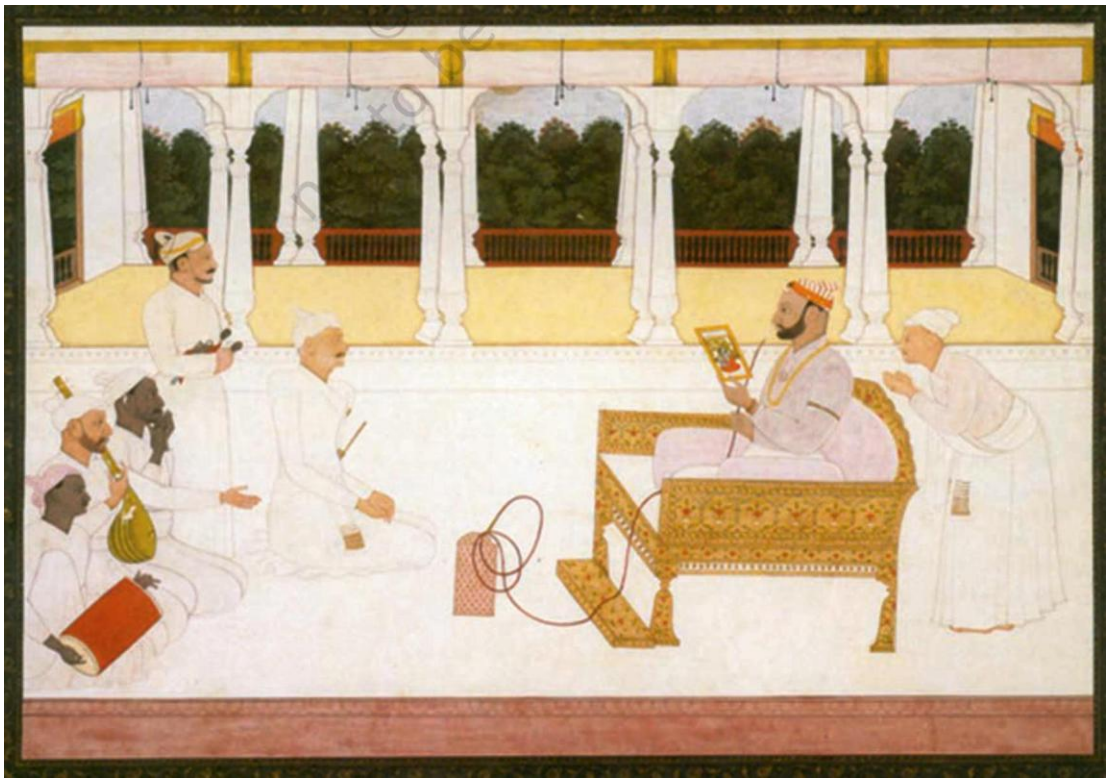

- **नंद यशोदा और कृष्ण**

यह चित्र भागवत पुराण के दृश्य को प्रदर्शित करता है जिसमें नंद अपने परिवार और सगे संबंधियों के साथ वृंदावन की यात्रा के लिए जा रहे हैं। गोकुल में राक्षसों का बहुत आतंक हो गया है। वह राक्षस कृष्ण को बार–बार परेशान करते हैं इसलिए उन्होंने एक सुरक्षित स्थान

पर जाने का निर्णय लिया। नंद संपूर्ण समूह का नेतृत्व करते हुए एक बैलगाड़ी में सवार हैं, पीछे दूसरी बैलगाड़ी में कृष्ण और बलराम अपनी माता यशोदा और रोहिणी के साथ बैठे हैं। अन्य महिला और पुरुष घर में प्रयुक्त होने वाली सामग्री और वस्तुओं को लेकर साथ साथ चल रहे हैं। कलाकार द्वारा चित्र में प्रयुक्त भाव को सुंदर तरीके से चित्रित किया है जैसे–सिर पर रखा भारी बोझ, आंखों से झलकती थकावट, बर्तनों को मजबूती से पकड़े होने के कारण भुजाओं का तना होना आदि ।

अति लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1 पहाड़ी चित्र शैली का आरंभ किस शैली से हुआ ?
2 यह किस विद्वान का विचार था कि पंडित सेउ व उनका परिवार ने पहाड़ी चित्रों को निर्मित किया ?
3 कांगड़ा शैली का मुख्य चित्रकार कौन है ?
4 राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण नामक चित्र किसने निर्मित किया ?
5 कांगड़ा शैली के मुख्य केंद्र कौन से हैं ?
6 पहाड़ी राज्यों के चित्र कला के प्रथम उदाहरण कहां से प्राप्त हुआ ?
7 शृंगरी चित्र श्रृंखला किस पर आधारित है ?
8 राजा संसार चंद किस शैली से संबंधित है ?
9 कांगड़ा शैली के मुख्य केंद्र कौन से हैं ?
10 बसौली शैली का विकास किस शासक के समय हुआ ?
11 पहाड़ी चित्रकला का उदय गुलेर में कब हुआ ?

12 ''कवि प्रिया'' के रचनाकार कौन है ?
13 जसरोटा के राजा बलवंत सिंह के दरबारी चित्रकार कौन थे ?
14 रावी नदी के तट पर किस शैली का विकास हुआ ?
15 पहाड़ी शैली की उप शैलियों के नाम लिखो।
16 बी.एन. गोस्वामी के अनुसार किस का परिवार पहाड़ी क्षेत्रों की शैलियों को विकसित करने के लिए उत्तरदायी है ?
17 बसौली शैली के चित्रकारों का प्रिय विषय क्या था ?
18 मानक चित्रकार का अन्य नाम क्या था ?
19 कांगड़ा शैली का विकास किस राजा के संरक्षण में हुआ ?
20 कांगड़ा कलम के चित्रों का प्रारंभिक चरण कहां देखा गया ?
22 कांगड़ा शैली में सबसे परिपक्व चित्र कहां चित्रित किए गए ?
23 कांगड़ा शैली के मुख्य कलाकारों के नाम बताइए।
24 कांगड़ा शैली के चित्रों के मुख्य विषय क्या थे ?
25 बारहमासा चित्रण क्या है ?
26 केशवदास की कवि प्रिया में बारहमासा का वर्णन किस अध्याय में किया गया है ?
27 पहाड़ी शैली के चित्रकारों को प्रेरणा देने वाले ग्रंथों के नाम बताइए।
28 कांगड़ा शैली में कलाकारों द्वारा सबसे अधिक किस ग्रंथ पर चित्र बनाए गए ?
29 मौलाराम किस शैली का चित्रकार था ?
30 बसौली शैली के मुख्य चित्रकार कौन थे ?
31 भृंग कीट के पंखों का प्रयोग किस शैली में हुआ ?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1 पहाड़ी चित्र शैली के मुख्य विषय क्या रहे ?
2 बसौली शैली की विशेषताएं लिखिए।
3 अभिसारिका नायिका किसे कहा गया है ?
4 वासक सज्जा नायिका किसे कहा गया है ?
5 बारहमासा चित्रण से आप क्या समझते हैं ?
6 पहाड़ी चित्र शैली से आप क्या समझते हैं ?
7 बसौली शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
8 पूर्व कांगड़ा या गुलेर कांगड़ा से क्या अभिप्राय है ?
9 पहाड़ी शैली में मानक ने किन चित्रों की रचना की, लिखिए।
10 पहाड़ी शैली में नैनसुख ने किन चित्रों की रचना की, लिखिए।
11 कांगड़ा शैली में राजा संसार चंद का योगदान बताइए।
12 कांगड़ा शैली के चित्रों में प्रकृति चित्रण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

13 रास पंचाध्यायी पर आधारित चित्रों का वर्णन कीजिए।
14 पहाड़ी चित्र शैली में शृंगरी श्रंखला का क्या तात्पर्य है ?
15 प्रतीक्षारत कृष्ण और संकोची राधा चित्र का वर्णन कीजिए।
16 पहाड़ी शैली के चित्र नंद, यशोदा और कृष्ण के बारे में लिखिए।
17 अभिसारिका नायिका चित्र का वर्णन कीजिए।
18 अष्टनायिका के बारे में जानकारी दीजिए।

अध्याय–6

–: बंगाल शैली और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद :–

- **कम्पनी शैली :–**

भारत में अंग्रेजों के आने से पूर्व भारतीय कला के अलग ही आयाम थे। जो कि लोक कलाओं के रूप में भारत के विभिन्न स्थानों पर देखे जा सकते हैं जैसे–मंदिरों व घरों की दीवारों पर, लघु चित्रों व पांडुलिपियों आदि के रूप में।

18वीं शताब्दी में अंग्रेज भारतीय, वनस्पतियों, जीव–जंतुओं, रीति–रिवाज, ऐतिहासिक स्थानों से प्रभावित हुए और उन्होंने भारतीय चित्रकारों को चित्रण हेतु नियुक्त किया। इन चित्रकारों ने भारत के जनजीवन व आसपास की स्मृति को बनाए रखने के लिए या अंग्रेज अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए चित्र बनाये। यह सभी चित्र कागज पर बनाए जाते थे । यहाँ कुछ चित्रकार मुर्शिदाबाद, लखनऊ, दिल्ली के दरबारों से आए चित्रकार थे । भारतीय और यूरोपीय कला तत्वों के सम्मिश्रण से जिस शैली का उदय हुआ उसे 'कंपनी शैली' के नाम से जाना जाता है। यह शैली भारत के साथ–साथ ब्रिटेन में भी लोकप्रिय थी। जहां इन चित्रों या श्रृंखला (एल्बम) की बहुत मांग थी।

गुलाम अली खान, वेश्याओं का समूह, कम्पनी शैली, 1800–1825 ई. सैन डिएगों कला संग्रहालय कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

- **राजा रवि वर्मा :–**

19वीं शताब्दी के मध्य भारत में फोटोग्राफी के आविष्कार के साथ ही यथार्थ शैली का ह्रास हुआ । अंग्रेजों द्वारा स्थापित कला विद्यालयों में पाश्चात्य ऑयल पेंटिंग में भारतीय विषयों का चित्रण करवाया गया। इस प्रकार के चित्रकारों में राजा रवि वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। जो त्रावणकोर के राजघराने के दरबारी चित्रकार थे। रवि वर्मा एक आत्मदीक्षित चित्रकार थे (किसी भी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की) इन्होनें पाश्चात्य (यथार्थ) शैली के चित्रों की अनुकृतियां बनाकर अपने आप यथार्थवादी शैली में सिद्धहस्त हुए । आपके चित्रों में पाश्चात्य तकनीक (तेल चित्रण) और भारतीय विषय का प्रयोग देखा जा सकता है जिसका प्रयोग रामायण और महाभारत जैसे लोकप्रिय विषयों हेतु किया गया। रवि वर्मा ने अपने चित्रों की मांग को पूरा करने के लिए ओलियोग्राफ (कैलेंडर) छपवाकर बाजार में बेचे साथ ही कैलेंडर के रूप में अपने चित्रों को घर–घर पहुंचाया । 19वीं सदी के अंत में बंगाल स्कूल के उदय के साथ ही राष्ट्रीय विचारों या भावनाओं का उदय हुआ। रवि वर्मा की कला को विद्वानों द्वारा पाश्चात्य प्रभावयुक्त माना गया। उन्होनें भारतीय पौराणिक विषयों को आधार मानकर चित्र रचनाऐ की।

- **बंगाल शैली :–**

बंगाल शैली एक राष्ट्रवादी आंदोलन था। यह आंदोलन एक चित्रकला शैली के रूप में पोषित हुआ। जिसका मुख्य केंद्र कोलकाता में था। किन्तु इस आंदोलन ने पूरे देश के विभिन्न स्थानों और चित्रकारों को भी प्रभावित किया। इसमें शांति निकेतन भी शामिल था। यहां देश का प्रथम कला महाविद्यालय स्थापित किया गया । इस समय ई.वी. हैवल (1861–1934) को कोलकाता कला महाविद्यालय का प्रशासक व प्राचार्य नियुक्त किया गया। ई. वी. हैवल ने अवनींद्र नाथ टैगोर (1871–1951) को भारतीय कलाओं के महत्व को बताकर चित्रण करने की सलाह दी । अवनींद्रनाथ ने पाश्चात्य शैली का विरोध कर भारतीय विषय वस्तु, पहाड़ी और मुगल लघु चित्रों के समावेश से नयी शैली की शुरुआत की।

- **अवनींद्र नाथ टैगोर और ई. वी. हैवल :–**

1896 का वर्ष भारतीय कला में महत्वपूर्ण था (इस समय ई.वी. हैवल कलकत्ता कला महाविद्यालय के प्राचार्य बने)। इस समय अवनींद्रनाथ व ई.वी. हैवल ने मिलकर कला में भारतीय तत्वों की आवश्यकता को महसूस किया। इसका आरंभ गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट कोलकाता से हुआ जो वर्तमान में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार के कला विद्यालय लाहौर, मुंबई, मद्रास में भी खोले गए। जहां धातु फर्नीचर और आकर्षक वस्तुओं का निर्माण होता था। किंतु कोलकाता में ललित कलाओं के विकास को ध्यान में रखते हुए भारतीय तकनीकी विषयों को पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा गया। अवनींद्र नाथ के चित्र 'यात्रा का अंत' में मुगल तथा पहाड़ी शैली का प्रभाव दिखाई देता है । इस चित्र में नई भारतीय शैली विकसित करने की एक इच्छा दिखाई देती है ।

कला इतिहासकार पार्थ मित्तर कहते हैं कि– अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों ने भारतीय मूल्यों को पुनः प्राप्त किया जिससे कि भारतीय कला को लाभ मिले। अवनींद्रनाथ टैगोर भारतीय प्राचीन कला संस्कृति के प्रबल समर्थक थे। अवनींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला व कलाकारों के प्रोत्साहित करने के लिए 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' की स्थापना की जिससे स्वदेशी मूल्यों को फिर से प्राप्त करने का प्रयास किया गया। बंगाली स्कूल ने आधुनिक भारतीय कला की नींव रखी। अवनींद्र नाथ ने जिस चित्र शैली का आरंभ किया। उसका प्रभाव आपके शिष्य क्षितिंद्रनाथ मजूमदार (रासलीला) और अब्दुल रहमान चुगताई (राधिका) के चित्रों में दिखाई देता है।

- **शांति निकेतन प्रारंभिक आधुनिकतावाद :–**

रविंद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना की और नंदलाल बोस (अवनींद्रनाथ के शिष्य) को शांति निकेतन का प्रमुख बनाया । यह भारत का प्रथम राष्ट्रीय कला विद्यालय था। शांति निकेतन विश्व भारती विश्वविद्यालय का हिस्सा था । नंदलाल बोस ने शांति निकेतन में एक कलात्मक परिवेश तैयार करते हुए भारतीय कला संस्कृति व ठप्पा लोक कला शैली को महत्व देकर अपने छात्रों को सिखाया । 1937 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन हेतु महात्मा गांधी ने नंदलाल बोस को अपने समाजवादी विचारों के चित्रण हेतु आमंत्रित किया। जिसमें नंदलाल बोस ने मध्यम वर्ग और मेहनतकश लोगों का चित्रण किया जैसे–ढोल बजाने वाले ग्रामीण, खेत में काम करते किसान, दूध निकालती महिला आदि। साधारण ग्रामीण जनता को राष्ट्र निर्माण में अपनी मेहनत से योगदान करते हुए दिखाया गया था । इन चित्रों व पैनलों को 'हरिपुरा पोस्टर' के नाम से जाना जाता है।

कला भवन वह संस्था है जहां नंदलाल बोस ने शिक्षक के रूप में छात्रों को कला की शिक्षा दी और कई युवा कलाकारों को राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। यहां से शिक्षा प्राप्त कर आपके विद्यार्थियों ने देश के विभिन्न हिस्सों में कला सिखाई। इसमें दक्षिण भारत में चित्रकार के.के. वेंकटप्पा प्रमुख उदाहरण है। वे चाहते थे कि कला धनिक वर्ग और अंग्रेजों तक ही सीमित न रहकर आम जनता की पहुंच में होनी चाहिए ।

नंदलाल बोस, ढाकी, हरिपुरा पोस्टर, 1937, एन.जी.एम.ए., नई दिल्ली, भारत।

भारतीय चित्रकार जैमिनी राय (यामिनी राय) आधुनिक भारतीय कला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं जिन्होंने पाश्चात्य कला विद्यालय में शिक्षा लेने के बाद भी भारतीय लोक कला को अपनाया। वे चाहते थे कि उनकी कला सरल, साधारण और नकल करने में आसान हो ताकि यह आम जनता की पहुंच में रहे । आपने अपने चित्रों में महिलाओं, बच्चों और विशेष रूप से ग्रामीण जीवन को चित्रित किया । यह वह समय था जब भारतीय व यूरोपीय शैली के मध्य द्वंद चल रहा था। जो ब्रिटिश नीति में देखा जा सकता है । उदाहरण के लिए लुटियन ने (ब्रिटिश वास्तुशास्त्री) दिल्ली की इमारतों की सज्जा हेतु मुंबई स्कूल ऑफ आर्ट के प्राचार्य ग्लेस्टोन सोलोमन के निर्देशन में छात्रों द्वारा यथार्थवादी शैली में कार्य किया गया । इसी प्रकार बंगाल के चित्रकारों ने ब्रिटिश देखरेख में इंडियन हाउस की साज–सज्जा की ।

- **पूर्व एशियाईवाद और आधुनिकतावाद :–**

1905 में बंगाल के विभाजन के समय स्वदेशी आंदोलन अपने पूर्ण यौवन पर था। यह तत्कालीन चित्रों और विचारों में दिखाई देता है। कला इतिहासकार आनंद कुमार स्वामी ने कला में स्वदेशी तत्व को महत्व दिया । इस समय काकुजो, ओकाकुरा (जापानी चित्रकार) का परिचय रवींद्रनाथ से होने के बाद यह चित्रकार एशिया की विचारधारा के साथ भारत आए। जिसका उद्देश्य पूर्वी राष्ट्रों के साथ मिलकर पश्चिमी विचारधारा का विरोध करना था। जापान से आये दोनों चित्रकारों ने शांति निकेतन में धोने की पद्धति (वाश तकनीक) की शिक्षा दी। धोने की पद्धति (वाश तकनीक) पाश्चात्य तेल चित्रण तकनीक का विकल्प थी ।

एक तरफ जहां पूर्व एशियाईवाद लोकप्रिय हो रहा था वहीं यूरोपीय कला भी भारत में चल रही थी। बाहोस, जर्मनी (कला विद्यालय) से शिक्षा प्राप्त चित्रकारों जिसमें चित्रकार पॉल क्ले, कैंडिस्की और अन्य थे। इन चित्रकारों ने 1922 में कलकत्ता आकर कला प्रदर्शनी की। इन चित्रकारों ने यथार्थवादी शैली को त्यागकर अमूर्त, साधारण ज्यामितीय आकार जिसमें वर्ग, वृत्त, त्रिकोण, आयत व रेखाओं और रंगों के मोटे आघातों का प्रयोग किया। भारतीय जनता व चित्रकार इससे बहुत प्रभावित हुए। भारत में अवनींद्रनाथ के भाई गगनेंद्रनाथ टैगोर ने ज्यामितीय शैली (क्यूबिस्ट) में कई चित्र बनाएं जिसमें घरों के अंतर भाग को चित्रित किया गया । आपने चित्रों के साथ–साथ कार्टून भी बनाए जिसमें उन्होंने यूरोपीय चित्रों का अनुकरण करने वाले बंगाली चित्रकारों का मजाक भी बनाया ।

- **आधुनिकता की विभिन्न अवधारणाएं पश्चिमी और भारतीय :–**

आंग्लवादियों और प्राच्यवादियों के बीच विभाजन किसी नस्लभेद के आधार पर नहीं था। बंगाल बुद्धिजीवी बेनाय सरकार ने 'फ्यूचर ऑफ यंग एशिया' नामक एक लेख में आंग्लवादियों का पक्ष लेते हुए यूरोप में विकसित आधुनिकतावाद को सही माना और ओरिएंटल बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट को आधुनिकता विरोधी बताया । दूसरी ओर ई.वी. हैवल जो कि अंग्रेज होते हुए भी आधुनिक भारतीय कला के पक्षधर थे और हैवल ने अवनींद्र नाथ टैगोर को प्राचीन भारतीय कला से प्रेरित होकर काम करने की सलाह दी ।

अमृता शेरगिल की कला में इन दोनों दृष्टिकोण का मिश्रण है। उन्होंने भारतीय दृश्यों को बहोस चित्रकारों से प्रेरित होकर चित्रित किया । अमृता शेरगिल की कला में भारतीय और पाश्चात्य प्रभाव देखा जा सकता है । अंग्रेजों ने कला के नए स्थानों जैसे–कला विद्यालयों, प्रदर्शनियों, दीर्घाओं, कला पत्रिका और कला समाज की शुरुआत की । इन परिवर्तनों को भारतीय चित्रकारों ने अपनाया किन्तु अपनी स्वदेशी अर्थात अपनी विरासत और परंपरा से भी जुडे रहें।

अमृता शेरगिल, ऊँट, 1941, एन.जी.एम.ए., नई दिल्ली, भारत।

- **मुख्य चित्र**
- **मिट्टी जोतने वाला (टिलर) :–**

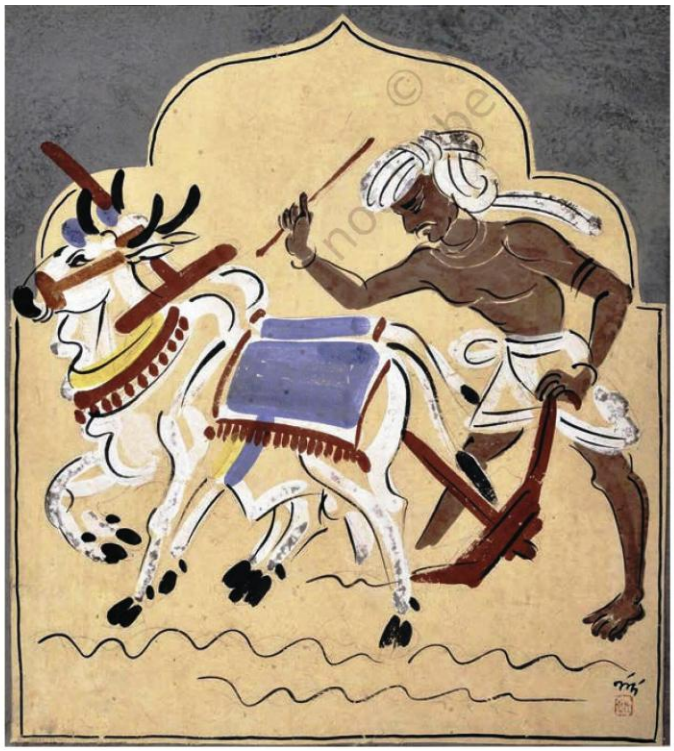

यह चित्र 1938 कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के समय चित्रकार नंदलाल बसु ने बनाया। चित्र में खेत में हल चलाते एक किसान को स्याही के द्वारा मोटी और प्रभाव युक्त रेखाओं से चित्रित करते हुए ग्रामीण जीवन को दिखाने का प्रयास किया है । चित्र में एक किसान को बैलों के माध्यम से हल चलाते या खेत को जोतते दिखाया गया है। इसके पीछे मेहराब बनाया गया है । चित्र को पटवा या लोक कला के समान चित्रित किया गया है। चित्र में गांधीजी के विचारों के अनुसार देश में ग्रामीण व साधारण लोगों के द्वारा राष्ट्र निर्माण में योगदान को दर्शाया गया है । नंदलाल बसु ने कांग्रेस अधिवेशन के लिए गांधीजी के निर्देशन के अनुसार 400 से अधिक चित्र बनाए थे।

- **रासलीला :–**

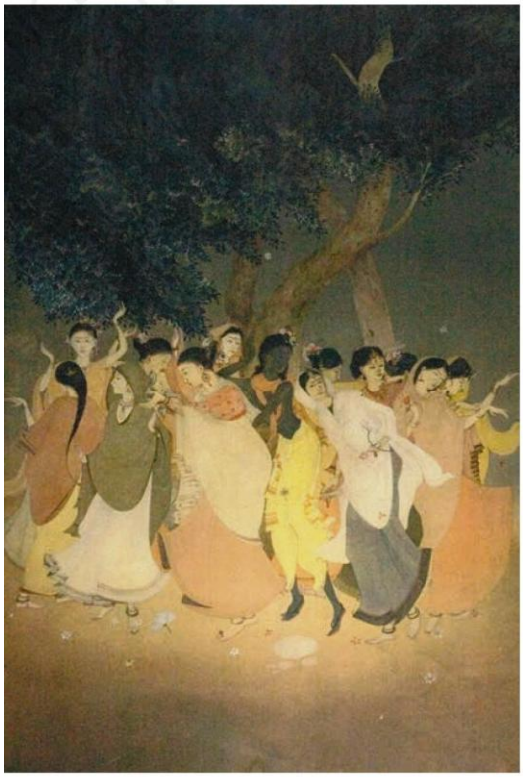

यह चित्र क्षितिंद्रनाथ मजूमदार द्वारा बनाया गया है। यह चित्र श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित है। क्षितिंद्रनाथ मजूमदार, अवनींद्र नाथ टैगोर के शिष्य थे। यह चित्र कागज पर वॉश तकनीक में बनाया गया है । चित्र में आकृतियां दुबली पतली हाव–भाव युक्त, सुहानी रंग संगती का प्रयोग किया गया है। चित्र में राधा कृष्ण और गोपियों को नृत्य करते दिखाया गया है। चित्र की पृष्ठभूमि में गहरे रंग के वृक्ष बनाए गए हैं। चित्र में ग्रामीण वातावरण, साधारण वस्त्र व कोमल रेखाओं का प्रयोग है । चित्र में श्री कृष्ण को गोपियों की आकृतियों के आकार का बनाकर श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य के रूप में दिखाया गया है। आपने पौराणिक, धार्मिक विषयों का चित्रण विशेष रूप से किया। आपके चित्रों में राधा का मन भजन, राधा और सखी, लक्ष्मी और श्री चैतन्य का जन्म आदि थे।

- **राधिका :–**

यह चित्र अब्दुल रहमान चुगताई (1899–1975) द्वारा बनाया गया है। चित्र को कागज पर वॉश तकनीक में चित्रित किया गया है। चुगताई के वंशज, शाहजहां के वास्तुकार उस्ताद अहमद जो दिल्ली के जामा मस्जिद, लाल किला व आगरा ताजमहल के वास्तुकार थे। आप अवनींद्र नाथ टैगोर, गगनेंद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बसु से प्रभावित थे। चुगताई के चित्रों में मुगल फारसी प्रभाव व रेखाओं का प्रभाव दिखाई देता है। चित्र में राधिका को गहरी पृष्ठभूमि में जलते हुए दीपक से दूर जाते हुए लज्जाशील दिखाया गया है। चुगताई ने अपने चित्रों में किवदंतियों, लोक कथाओं और इन्डो इस्लामिक, राजपूत और मुगल के ऐतिहासिक पात्रों को चित्रित किया है। चुगताई के चित्रों के विषय हिंदू और पौराणिक रहे हैं। चुगताई की अन्य रचनाओं में उदास राधिका, उमरख्याम, हीरामन तोता, एक पेड़ के नीचे महिला, संगीतकार महिला, एक मकबरे के पीछे आदमी, एक कब्र के पास महिला व दीपक जलाती महिला प्रमुख हैं।

- **रात में शहर :–**

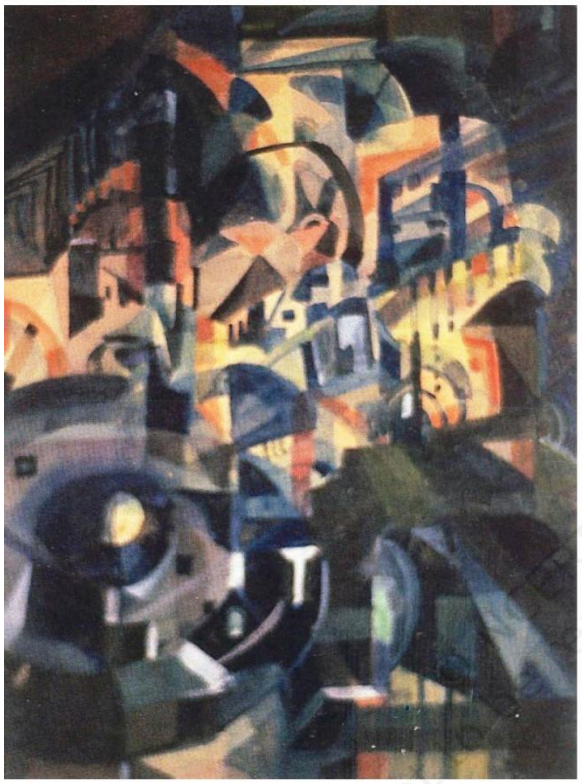

ये चित्र 1922 में गगेन्द्र नाथ टैगोर (1869–1938) द्वारा बनाया गया था। चित्र का माध्यम जलरंग है। यह पहले भारतीय चित्रकार थे जिन्होने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए क्यूविज्म शैली का प्रयोग किया। आपके चित्रों में रहस्मयी और काल्पनिक नगर जैसे– द्वारका (भगवान कृष्ण का पौराणिक निवास) या स्वर्णपुरी (द गोल्डन सिटी) की कल्पना की गयी है। आपने हीरे के आकार के विमानों और प्रिज्म जैसे रंगों को चित्रित किया। पेंटिंग में जिकजैक पर्वत श्रृंखला और विमान बनाये गये। जिसमें से कृत्रिम रोशनी निकल रही है। चित्रकार ने स्टेज प्रॉप्स, पार्टीशन स्क्रीन, कृत्रिम लाईटिंग का प्रयोग किया गया है। चित्रों में कहीं–कहीं अंतहीन गलियारें, खम्भें, हॉल, आधे खुले दरवाजे, रोशनी वाली खिड़कियां, मेहराव आदि जादू की दुनिया के समान बनाये गये है।

- **समुद्र के गर्व पर विजय पाते राम :–**

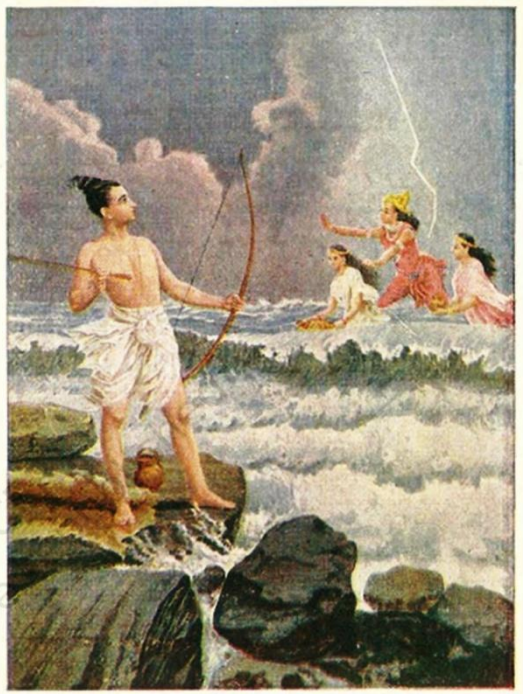

यह चित्र राजा रवि वर्मा द्वारा ऑयल पेंट (तेंल चित्रण) में बनाया गया है। रवि वर्मा को पौराणिक चित्रण हेतु लिथोग्राफी (पत्थर से छापने की विधि) में महारथ हासिल थी। दृश्य वाल्मीकि की रामायण से लिया गया है जहां राम को दक्षिण भारत से लंका द्वीप तक अपनी सेना को ले जाने के लिए एक पुल की आवश्यकता थी। इसके लिए समुंद्र को पार करने की अनुमति मांगते है। किन्तु गर्व में वरूण देव ने कोई प्रतिउत्तर नहीं दिया। तब राम अपने धनुष के प्रहार करने की सोचते है। राजा रवि वर्मा के चित्रों के प्रमुख विषय अहिल्या की मुक्ति, सीता के विवाह पूर्व शिव के धनुष को तोड़ना, सीता और लक्ष्मण का सरयू नदी को पार करना, रावण द्वारा सीता हरण, जटायू के सीता को बचाने का प्रयास, अशोक वाटिका में सीता, राम के राज्याभिषेक आदि रहे।

- **बच्चे के साथ महिला :–**

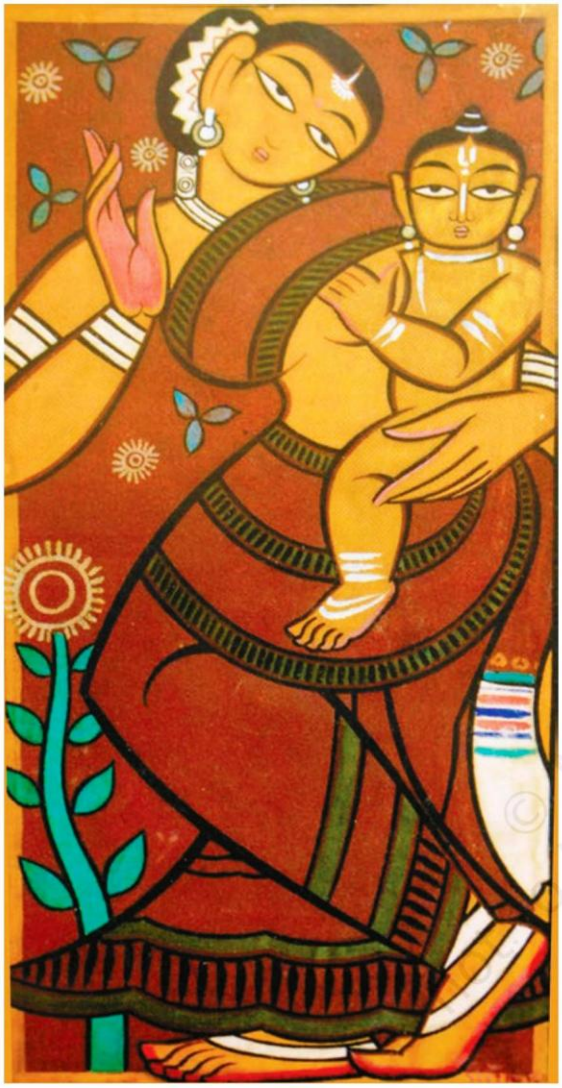

1940 में बनी यह पेंटिंग यामिनी राय (1887–1972) द्वारा कागज पर टैम्परा तकनीक में बनाई गई है। उन्हें भारत के लोक पुनर्जागरण को जनक कहा जाता है। आपने 1920 में लोकचित्रों (पट्ट चित्रण) को सीखने के लिए बंगाल के गावों की यात्रा की। इनके चित्रों में रेखाऐं मोटी, सरल व लयात्मक है। आपके चित्र मां के साथ बच्चें में हल्के पीले और लाल (ईंट जैसे) रंगों का प्रयोग बांकुरा गांव के टेराकोटा की प्रमुखता दिखाई देती है। ये चित्र द्विआयामी है। पट्ट की शुद्धता को सीखने के लिए आरम्भ में आपने एक ही रंग से (मोनोक्रोम) चित्र बनाये। बाद में आपने सभी रंगों का श्रेष्ठता के साथ प्रयोग कर चित्र बनाना शुरू किया। यामिनी राय ने अपने रंगों में भारतीय लाल, गैरूआ पीला, हरे, सिंदूरी, चारकोल ग्रे, कोबाल्ट नीला और सफेद कार्बनिक पदार्थ जैसे–रॉक डस्ट, इमली के बीज, पारा पाउडर, जलोड़ मिट्टी, इंडिगो (नीला) और चूने को रंगों में प्रयोग लिया। आपके चित्रों में बाहरी रेखांकन में काजल या लैम्प ब्लेक का प्रयोग किया गया है। चित्र धरातल के लिए घर में बने कपड़े, टाट, कागज या बैक पेपर का इस्तेमाल करते थे।

- **यात्रा का अंत :–**

1913 में अवनींद्रनाथ टैगोर (1871–1951) द्वारा निर्मित यह पेंटिंग जलरंग वॉश द्वारा कागज पर बनाई गई है। अवनींद्रनाथ को आधुनिक कला का पिता कहा जाता है क्योंकि इन्होंने विषयों, शैली और तकनीकों में भारतीय और प्राचीन कला को पुनर्जीवित किया। आपने वॉश चित्रण तकनीक का भी आविष्कार किया। धोने की इस तकनीक में रंग धुंधले और सुहाने दिखाई देते है। चित्र में एक थके हुए ऊँट को लाल पृष्ठभूमि में दिखाया गया है। जो दिन के अंत के साथ ही ऊँट की भी यात्रा खत्म दिखाई है। ऊँट की शारीरिक विशेषताओं को रंगों तथा रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। चित्र का विषय व चित्रण संवेदनशील दिखाई देता है। अवनींद्रनाथ के चित्रों में द फॉरेस्ट, कमिंग ऑफ नाईट, माउंटेन ट्रेवलर, क्वीन ऑफ द फॉरेस्ट और द अरेबियन नाईट्स पर आधारित 45 चित्रों की एक श्रृंखला बनाई।

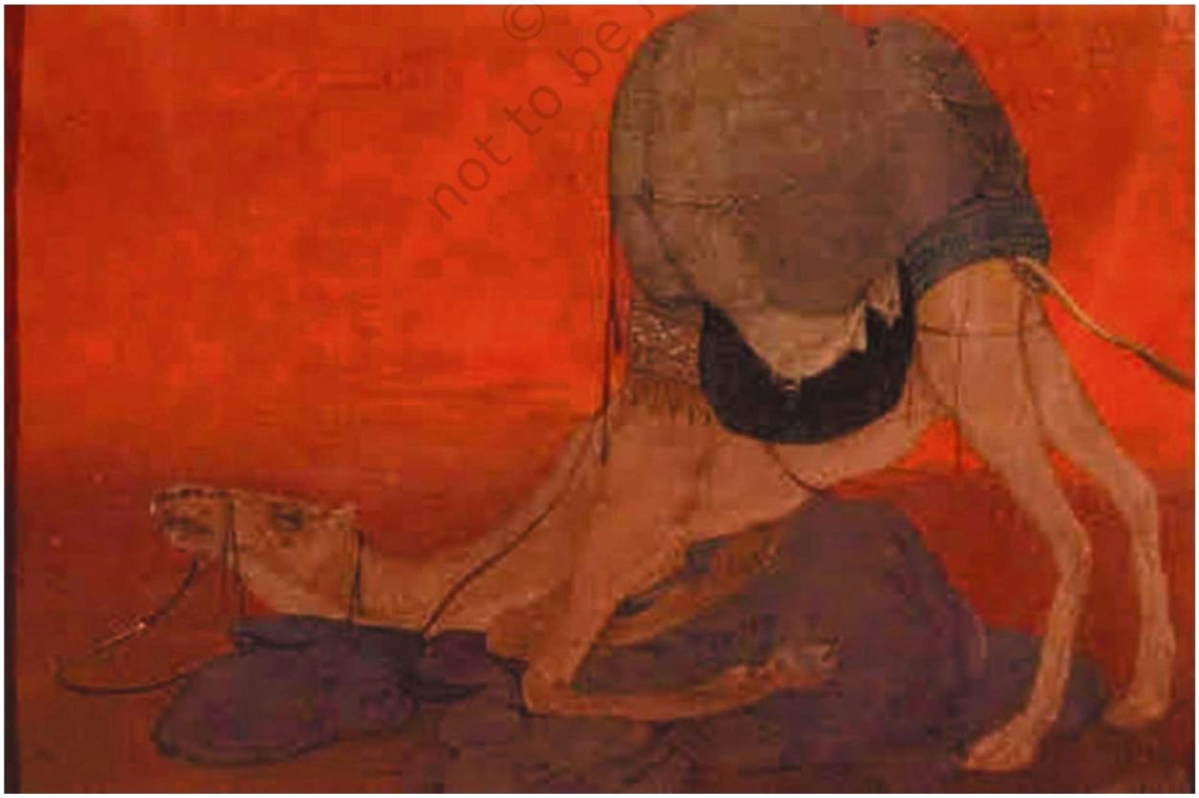

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न :–

1. मिट्टी जोतने वाला चित्र किस चित्रकार का है ?
2. रात्रि में शहर किस चित्रकार की रचना है ?
3. कम्पनी अधिकारियों द्वारा कहां–कहां कला विद्यालय खोले गये ?
4. भारतीय आधुनिक कला शैली की शुरूआत किस स्थान से हुई ?
5. शांति निकेतन के प्रथम प्राचार्य का नाम लिखिए।
6. गर्वमेंट स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट किस स्थान पर है ?
7. इंडियन सोसायटी ऑफ ओरियंटल आर्ट की स्थापना किस चित्रकार ने की ?
8. अवनींद्रनाथ टैगोर और ई.वी. हैवल का भारतीय कला में क्या योगदान रहा ?
9. कम्पनी शैली क्या है ?
10. ढोल बजाने वाला चित्र किस चित्रकार का है ?
11. अमृता शेरगिल के चित्रों के किन शैलियों का प्रभाव देखा जा सकता है ?
12. हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के चित्रों का निर्माण किस चित्रकार ने किया ?

13. रावण और जटायू चित्र किस चित्रकार का है ?

14. महिला के साथ बालक किस चित्रकार का चित्र है ?

15. यात्रा का अंत किस चित्रकार की कृति है ?

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न :–</u>

1. नंदलाल बोस का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. यामिनी रंजन रॉय के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

3. अवनींद्रनाथ और ई.वी. हैवल द्वारा भारतीय कला के पुर्नत्थान की व्याख्या कीजिए।

4. कंपनी शैली और राजा रवि वर्मा का विस्तृत वर्णन कीजिए।

5. भारतीय पुर्नत्थान कालीन कला की व्याख्या कीजिए।

6. **निम्नलिखित चित्रों की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।**

(i) राधिका (ii) रात में शहर (iii) यात्रा का अंत

अध्याय–8
–: भारत की जीवंत कला परंपराएं :–

- **परिचय :–**

भारत भूमि पर प्राचीन काल से ही अनेक प्रकार की कला परंपराएं प्रचलित रही हैं जो शहरी जीवन से दूर जंगलों, रेगिस्तानी इलाकों में, पर्वतों और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों द्वारा मनोरंजन के रूप में, धार्मिक अनुष्ठान के रूप में, अपने घर की सजावट के रूप में अपनाई गई परंपराएं हैं। कई वर्षों से यह परंपराएं जाति, धर्म क्षेत्र आदि के अनुसार लगातार अपने विकास को आगे बढ़ाते हुए निरंतर जारी हैं।

अब तक हमने जिन कलाओं का अध्ययन किया वे सभी कलाएं किसी ना किसी राजवंश व उस समय में निर्मित की गई कलाएं थीं, लेकिन आम लोगों का जीवन कैसा था? क्या वे रचनात्मक नहीं थे या कला निर्मित करना नहीं जानते ? क्या हमने कभी महसूस किया है, कि राज दरबारों और राजाओं के संरक्षण में आए कलाकार कहां से आए थे ? उनकी कला का प्रारंभ कैसे हुआ और प्राचीन कला परंपराओं के वे अज्ञात कलाकार कौन थे? जिन्होंने रेगिस्तानी पहाड़ों व ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी कला को विकसित किया।

कला परंपराएं सदैव स्थानीय स्त्रोत से प्रभावित रही हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे से आगे हस्तांतरित होती रही है। प्रत्येक पीढ़ी के कलाकारों ने अपने ज्ञान के अनुसार उपलब्ध सामग्री और तकनीक से श्रेष्ठ कलाकृति का निर्माण किया है। कला के इस विभिन्न स्वरूप को विद्वानों ने उपयोगी कला, लोक कला, जनजातीय कला, जन सामान्य कला, संस्कारी कला, हस्तकला आदि नामों से पुकारा है। इनका यह स्वरूप आदि काल से चला आ रहा है।

प्रागैतिहासिक कालीन मानव द्वारा गुफाओं की अनगढ़ दीवारों पर अपने मनोभावों को सुंदर रूप मैं अभिव्यक्त किया, सिंधु घाटी के निवासियों ने भी मिट्टी के सुंदर बर्तन, आभूषण, मोहरों का निर्माण किया, धातु के बर्तनों व कृतियों का निर्माण किया। इन्होंने कला के स्वाभाविक स्वरूप को अपनाते हुए कलाकृति में मूल भाव पदार्थ, रंगो का सुंदर प्रयोग करते हुए मौलिकता, सृजनात्मकता व सौंदर्य को अभिव्यक्त किया इसके बाद भी भारत भूमि पर लगातार इसी तरीके से कला का निर्माण होता रहा और आगे चलकर मनुष्य ने इन कला परंपराओं को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया आज भी कई क्षेत्रों में ऐसी कला परंपराए विद्यमान हैं।

19वीं व 20वीं शताब्दी के मध्य आधुनिक कलाकारों के बीच एक नया दृष्टिकोण उभर कर सामने आया। जिससे भारत भूमि पर प्रचलित कला परंपराओं मे रचनात्मक परिवर्तन हुआ, जिससे हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा मिला और कला परंपराओं का क्षेत्र वाणिज्यिक उत्पादन के लिए संगठित होने लगा। निरंतर अभ्यास कार्य से इन्हें विशिष्ट पहचान प्राप्त होने लगी और अत्यधिक मात्रा में व्यावसायिक उत्पादन होने के कारण तथा यह कला परंपराएं विशिष्ट

क्षेत्र में ही विकसित होने के कारण उस स्थान को भी इन्हीं कला परंपराओं के नाम से पहचान मिली।

आज भी आधुनिकता के इस दौर में भी इन कला परंपराओं में प्रतिदिन के जुड़े कार्य, प्रतीकात्मकता,धार्मिक कर्मकांड मांगलिक कार्य आदि को प्राथमिकता देकर इन्हें विकसित किया जा रहा है

- **चित्रण परंपरा :–**

प्राचीन काल से चली आ रही चित्रण की कई लोकप्रिय परंपराओं में बिहार की मिथिला या मधुबनी कला, महाराष्ट्र की वर्ली कला, उत्तरी गुजरात और पश्चिमी मध्य प्रदेश की पिथौरा कला ,राजस्थान की पाबूजी की फड़ व नाथद्वारा की पिछवाई, मध्य प्रदेश की गोंड और सावरा कला, उड़ीसा और बंगाल की पट चित्रकला आदि महत्वपूर्ण है।

- **मिथिला कला :–**

सबसे प्रसिद्ध कला परंपराओं में मिथिला कला का नाम महत्वपूर्ण रूप से आता है मिथिला स्थान प्राचीन काल में विदैय के नाम से जाना जाता था यह स्थान माता सीता की जन्म स्थली भी है इसके निकट के क्षेत्र को मधुबनी नाम से पुकारा जाता है जिस कारण से मिथिला कला को मधुबनी कला के नाम से प्रसिद्धि मिली।

यह कला एक लोक कला परंपरा है ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में रहने वाली महिलाएं द्वारा विशेष रूप से विवाह के अवसर पर मिट्टी के बने भवन की दीवारों पर विभिन्न आकृतियों का अंकन कर रंग लगाने की परंपरा थी। लोक मान्यताओं के अनुसार इस कला का उद्भव भगवान राम और राजकुमारी सीता के विवाह से हुआ ।

चमकीले रंगों की विशेषता वाले इन चित्रों को मुख्य रूप से घर के तीन क्षेत्र में चित्रित किया जाता है।

भवन के पूर्वी हिस्से/भाग जिसे कुलदेवी का निवास स्थान कहा जाता है, में माता काली के चित्र बनाए जाते हैं। भवन के आंगन में बाहरी और हथियारों संयुक्त विभिन्न प्रकार के देवी देवता तथा आंगन की दीवारों पर जानवरों, काम करती महिलाएं जैसे पानी लाती स्त्री, अनाज निकालती स्त्री आदि के सुंदर चित्र बनाए जाते हैं। भवन के दक्षिणी हिस्से में महत्वपूर्ण मानव चित्र बनाए जाते हैं। भवन के आंतरिक बरामदे में जहां परिवार का देवस्थान या गोसाई घर होता है। वहां कुल देवता को चित्रित किया जाता है। भवन का अंदरूनी कमरा जिसे कहोबार घर कहते हैं इसमें असाधारण प्रकार के रंग युक्त चित्र बनाए जाते हैं। इसमें ताजा प्लास्टर की हुई दीवारों पर देवी देवताओं की छवियों के साथ डंठल युक्त खिले हुए कमल का अंकन किया जाता है।

मधुबनी कला में चित्रित किए गए विश्व के रूप में भागवत पुराण, रामायण के प्रसंग, शिव पार्वती की कथा, राधा–कृष्ण की रासलीला, दुर्गा–काली आदि देवी–देवताओं का अंकन किया जाता है। मिथिला कलाकार चित्र में खाली स्थान नहीं रखते। शेष बचे स्थान पर पक्षी,

फूल, जानवर, मछली, सर्प, सूर्य, चंद्रमा जैसे प्राकृतिक तत्वों से चित्र की सजावट कर चित्र को पूरित करते हैं।

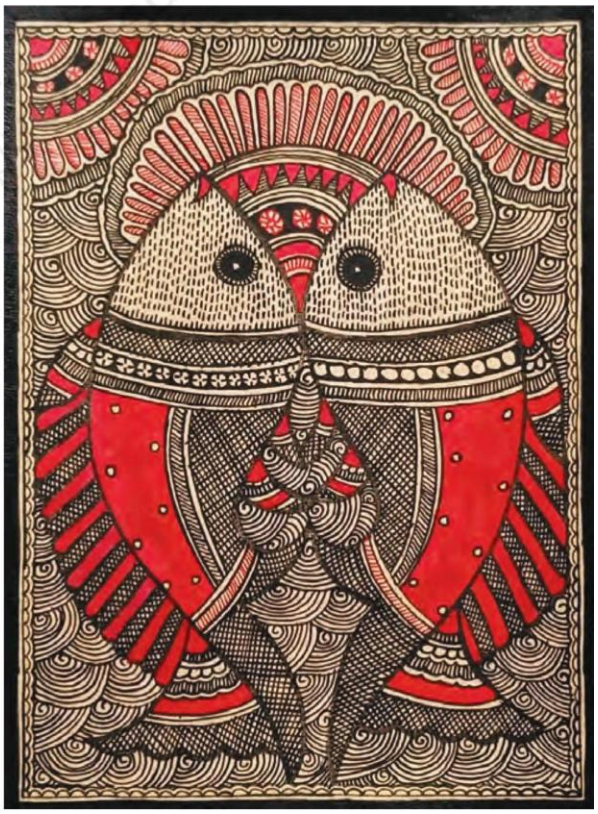

प्राचीन काल से ही लोक कला परंपरा का प्रतीकात्मक प्रभाव माना गया है। यह परंपराएं प्रेम, उर्वरता, कल्याण, समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक मानी जाती है।

इन चित्रों के लिए प्राचीन काल में खनिज पत्थरों व जैविक चीजों से रंग बनाए जाते थे जैसे– फरसा, कुसुम फूल, बिलवा के पत्ते, काजल, हल्दी आदि। महिलाएं रंग भरने के लिए बांस की टहनियों से रंग भरती है, इसमें कपास की टहनियों, चावल की भूसी और विभिन्न रेशों का प्रयोग भी किया जाता है।

वर्तमान समय में मिथिला या मधुबनी कला का व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए कपड़े, कागज और बर्तनों पर भी चित्रण किया जा रहा है।

- **<u>वर्ली कला :–</u>**

उत्तरी महाराष्ट्र के पश्चिमी समुद्र तट पर ठाणे जिले में सह्याद्री पर्वत श्रृंखला के चारों ओर एक बड़े समुदाय के रूप में वर्ली समुदाय निवास करता है। इस समुदाय द्वारा अपने घरों की मिट्टी की बनी हुई रंगीन दीवारों पर चावल के आटे से चित्रों का अंकन किया जाता है। इन चित्रों का उद्देश्य उन्नत उत्पादकता बीमारियों को दूर करना, मृत लोगों को प्रसन्न करना व उनकी आत्मा की मांग को पूरा करना है।

विवाहित महिलाएं विशेष अवसरों पर चौक नामक अपनी महत्वपूर्ण कला निर्मित करती है। यह विवाह, उर्वरता, फसल कटाई और बुवाई के समय निर्मित किए जाते हैं। चौक पर मां देवी (पालाघाट) की आकृति का प्रभुत्व होता है। यह मकई, कंसारी और उर्वरता की देवी के रूप में पूजी जाती है। इसे छोटे वर्गाकार खानों में चित्रित किया जाता है जिसके बाहरी किनारों को नुकीले शहतीरों से सजाया जाता है। यह शहतीर हरियाली देवता के प्रतीक माने जाते हैं देवी के रक्षक के रूप में बिना सिर वाले योद्धा का अंकन होता है जो घोड़े पर सवार होता है, उसके गले में मकई के पांच अंकुर निकले चित्रित किए जाते हैं इस कारण इसे 5 सिर वाला देवता(पंच सिर्य) भी कहा जाता है। यह खेतों के संरक्षक व खेत रक्षक का प्रतीक है।

पालघाट का चित्रण रोजमर्रा की जिंदगी के दृश्यों से घिरा होता है, जैसे–खेती के चित्र, नृत्य के चित्र, जानवरों के चित्र, पौराणिक कहानियों के चित्र, शिकार के दृश्य चित्र, मछली पकड़ने के चित्र, बाघों का चित्रण आदि मुख्य रूप से किया जाता है।

- **गौंड कला :–**

मध्यप्रदेश में गौंड समुदाय की एक समृद्ध परंपरा है। प्राचीन काल में ये समुदाय मध्य भारत के शासक और प्रकृति के उपासक थे। इस समुदाय के लोगों द्वारा झोपड़ियों की दीवारों पर पूजा–पाठ से संबंधित ज्यामितीय रेखांकन बनाए जाते हैं, जिसमें मुख्य रुप से भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों का अंकन है। युवा गोप–गोपियों को पूजा करते हुए भी दिखाया गया है।

मांडला व उसके आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले गोंड समुदाय द्वारा बनाए गए जानवरों, मनुष्य और पेड़–पौधों के चित्रों को रंगीन चित्रों में परिवर्तित किया गया है।

- **<u>पिथौरा कला :–</u>**

गुजरात के पंचमहल क्षेत्र के राठवा भील जाति और मध्य प्रदेश के झाबुआ क्षेत्र में रहने वाली जाति द्वारा किन्हीं विशेष अवसरों या आभार प्रदर्शन करने वाले अवसरों को प्रदर्शित करने के लिए घरों की दीवारों पर यह चित्र बनाए जाते हैं। यह दीवारों पर बने बड़े आकार के चित्र हैं, जिसमें घोड़े पर सवार देवताओं के रंगीन चित्रों को कतारबद्ध रूप से दर्शाया जाता है।

एक चित्र में घुड़सवार देवताओं की यह पंक्तियां ब्रह्मांड विज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है। चित्र के ऊपरी भाग घुडसवारों के साथ देवताओं व पौराणिक दुनिया को दर्शाया गया है। एक अलंकृत लहराती हुई रेखा इस खंड को निचले भाग से अलग करती है। जहां पर पिथौरा की बारात का अंकन है। इसके अतिरिक्त छोटे देवताओं, राजाओं भाग्य की देवी, किसान, घरेलू जानवर आदि का चित्रण किया गया है, जो पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करते दर्शाए गए हैं। राठवा जाति द्वारा चित्रित घोड़े पर सवार देवता पिथौरा देव के नाम से पूजे जाते हैं।

- **<u>पाटा/पट्ट चित्रण :–</u>**

पाटा या पट्ट चित्रकला मुख्य रूप भारत के पश्चिमी में गुजरात तथा राजस्थान, पूर्व में उड़ीसा व पश्चिमी बंगाल में विशेष रुप से प्रचलित कला है। चित्र धरातल के लिए कपड़ा, ताड़ के पत्तों, व कागज का उपयोग किया जाता है। इस कला को पाटा, पछड़ी या फड़ नाम से भी जाना जाता है।

- **<u>बंगाल पट्ट चित्रण :–</u>**

पश्चिमी बंगाल में पट्ट चित्रण करने वाले कलाकार को पटूवा कहा जाता है। पटूवा कलाकारों का एक समुदाय है, जो पश्चिमी बंगाल के मिदनापुर, वीर भूमि, बांकुरा क्षेत्र तथा बिहार और झारखंड के कुछ हिस्सों में निवास करता है। पाटा कला परंपरा अनुसार पीढ़ी–दर–पीढ़ी इन परिवारों में चली आ रही है।

यह कलाकार कपड़े पर प्राचीन कहानियां के नए–नए विषयों को तलाश कर उनका चित्रण करते हैं। चित्रों को लेकर गांव में घूमते हैं और सार्वजनिक स्थानों पर इनकी प्रदर्शनियाँ लगाते हैं, गांव के लोगों को चित्रित कथाओं को गाकर सुनाया जाता है। पटूवा हर बार प्रदर्शनी के दौरान तीन से चार कहानियां गांव के लोगों को सुनाता है, जिससे उसको नगद पुरस्कार व उपहार राशि प्राप्त होती है।

- **पुरी (ओडिशा) पट्ट चित्रण :–**

ओडिशा में भी पट्ट चित्रण की परंपरा विद्यमान है जिसमें कलाकार द्वारा ताड़ के पत्तों कपड़े और कागज पर चित्रों की शृंखलाएं चित्र की जाती है इसमें भगवान जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा का अंकन विभिन्न रूप से जैसे–बड़ा सिंगार वेश, रघुनाथ वेश, पदम वेश, कृष्ण–बलराम वेश, हरिहरन वेश आदि। गर्भ गृह के चिन्हों को प्रदर्शित करने के लिए अंसारा पट चित्र बनाए जाते हैं। यहां आने वाले धार्मिक यात्री अपने निजी मंदिरों के लिए जिन चित्रों को लेकर जाते हैं, उन्हें जातरी पट्टी के नाम से जाना जाता है।

भगवान जगन्नाथ की पौराणिक कथा प्रसंगों में मुख्य रूप से कांची, कावेरी पाटा, और थिया बघिया पाटा चित्रण तथा मंदिर के चारों ओर के दृश्य तथा त्योहारों का चित्रण भी किया जाता है।

- **पट्ट चित्र का निर्माण :–**

कलाकार द्वारा पट चित्रण सूती कपड़े की छोटी–छोटी पत्तियों पर किया जाता है। सूती कपड़े पर सफेद पत्थर के पाउडर और इमली के बीज से बने गोंद से तैयार किया जाता है। सबसे पहले चित्र के चारों और का बॉर्डर बनाने की परंपरा है, फिर ब्रुश की सहायता से आकृतियों का रेखाचित्र बनाया जाता है उसके उपरांत सपाट तरीके से उनमें रंग लगाया जाता है। रंगो के रूप में आमतौर पर सफेद, काले, पीले और लाल रंगों का प्रयोग किया जाता है। काला रंग दीपक की कालिख से, सफेद रंग शंख के पाउडर से, पीला रंग हरितली से, लाल रंग हिंगल पत्थर से प्राप्त किया जाता है। चित्रांकन पूरा होने के उपरांत चित्र को कोयले की आग पर रखा जाता है और सतह पर लाख का लेप किया जाता है जिससे वह जल विरोधी बनाया जा सके और उसमें चमक भी लाई जा सके।

पांडुलिपियों का अंकन करने के लिए ताड़ पत्र के स्थान पर खजूर की एक किस्म खर ताड़ का उपयोग किया जाता है। इसमें चित्र में काम में ली जाने वाली तूलिका के स्थान पर स्टील की तूलिका से आकृतियों को उकेरा जाता है। तत्पश्चात स्याही और रंग से पूरा किया जाता है। ताड़ पत्र की इस परंपरा को लोक या परिष्कृत शैली का हिस्सा माना जाए या नहीं इस पर विद्वानों में मतभेद है, क्योंकि इसकी एक प्राचीन परंपरा है जो हमें प्राचीन भित्ति चित्र और ताड़ पत्रिय परंपराओं में देखने को मिलती है।

- **<u>राजस्थान के फड़ चित्रण :–</u>**

राजस्थान में भीलवाड़ा के आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले कलाकारों द्वारा ग्रामीण परिवेश के लोक–देवताओं के सम्मान में लंबे क्षितिजाकार कपड़े पर वीरता पूर्ण कहानियों का अंकन किया जाता है। लोक देवताओं के रूप में उन वीर पुरुषों का अंकन किया जाता है जिन्होंने पशुओं की रक्षा के लिए और लोगों के हित के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। इन वीर पुरुषों या नायकों को भोमिया नाम दिया गया है। भोमिया नायकों में गोगाजी, तेजाजी, देवनारायण जी, रामदेव जी, पाबू जी, हड़बूजी मुख्य है। रेबारी, गुर्जर, मेघवाल, रेगर आदि समुदाय में यह पूजनीय है।

इन लोक देवताओं के पुजारियों को भोपा कहा जाता है, जो एक प्रकार की घुमंतू चारण जाति होती है। इनके द्वारा फड़ के समक्ष एक दीपक जलाकर रात्रि जागरण किया जाता है और भक्ति गीत गाए जाते हैं। विभिन्न वाद्य यंत्रों जैसे रावणहत्था, वीणा व गायन की ख्याल शैली में लोक देवताओं की वीरता पूर्ण कहानियों को जन सामान्य को सुनाया जाता है, इसे फड़ वाचन कहा जाता है।

फड़ का चित्रण भोपों द्वारा नहीं किया जाता। इसका चित्रण जोशी जाति के लोगों द्वारा पारंपरिक पद्धति के आधार पर किया जाता है यह जाति प्राचीन काल में राजस्थान के राजाओं के दरबार में चित्रकार के रूप में रही और दरबारी संरक्षण में लघु चित्रों का निर्माण किया, इसलिए कुशल गायन, संगीतज्ञ, अभ्यासकारी और दरबारी चित्रकारो की संगति के साथ फड़ चित्रकला को अपने समान दूसरी सांस्कृतिक परंपराओं से अधिक उचित स्थान प्राप्त हुआ।

- **मूर्तिकला परंपराएं :–**

भारत देश में प्राचीन काल से ही मूर्तिकला निर्माण की परंपराएं विद्यमान रही है, जिसमें कलाकार ने मिट्टी, धातु, पत्थर का उपयोग कर इन्हें विभिन्न आकारों में परिवर्तित किया। देशभर में ये परंपराएं आज भी विद्यमान है।

- **ढ़ोकरा ढलाई :–**

ढ़ोकरा ढलाई तकनीक बस्तर, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश के कुछ हिस्से, उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल के मिदनापुर आदि की प्रमुख धातु कलाओं में से एक है। इसके मोम को हटाकर (मोम सांचा विधि) अथवा सिरे–परद्यू तकनीक का प्रयोग कर मूर्ति निर्माण किया जाता है। कांसे की मूर्तियों की ढलाई भी मोम को हटाकर (मोम सांचा विधि) की जाती है।

बस्तर के धातु शिल्पियों को गढ़वा (घड़वा) कहा जाता है। गढ़वा शब्द का शाब्दिक अर्थ आकार देना या आकृति निर्माण शैली है। पारंपरिक रूप से गढ़वा शिल्पकार स्थानीय निवासियों के दैनिक उपयोग के बर्तनों की आपूर्ति के साथ–साथ आभूषण, स्थानीय देवी–देवताओं की मूर्तियां, प्रतीक चिन्ह और पूजा या चढ़ावे के लिए सर्प, हाथी, घोड़े की मूर्तियां आदि बनाते हैं।

समय के साथ–साथ बर्तन और पारंपरिक आभूषणों की मांग में कमी होने के कारण इन शिल्पकारों ने नए गैर पारंपरिक एवं अनेक प्रकार की सजावट योग्य आधुनिक वस्तुओं को बनाना प्रारंभ कर दिया।

© NCERT not to be republished

- **<u>ढ़ोकरा ढलाई की प्रक्रिया :–</u>**

आधुनिक ढ़ोकरा ढलाई प्रक्रिया बहुत विस्तृत है। इसमें नदी किनारे की काली मिट्टी को चावल की भूसी के साथ मिलाकर पानी की सहायता से आटे की तरह गूंथ लिया जाता है। गुंथी हुई तैयार मिट्टी से सांचा बनाया जाता है। सांचों के सूख जाने पर मिट्टी के साथ गाय का गोबर मिलाकर दूसरी परत से ढ़क दिया जाता है।

इसके बाद साल के वृक्ष से निकलने वाले चिपचिपा पदार्थ को इकट्ठा किया जाता है और इसे तरल स्वरूप में लाने के लिए सरसों का तेल मिलाकर मिट्टी के बर्तन में उबाला जाता है। उबले हुए तरल पदार्थ को कपड़े से छानने के उपरांत पानी के ऊपर रखे धातु के बर्तन में इसे इकट्ठा कर लिया जाता है, जिससे ठंडा होने पर चिपचिपा पदार्थ जम जाता है। ठंडा होने के उपरांत भी इसमें कोमलता और लचीलापन बना रहता है। फिर इसे छोटे–छोटे

टुकड़ों में अलग कर धीमी आंच पर हल्का सा गर्म कर पतले–पतले धागों और लच्छों के रूप में फैलाया जाता है और इन धागों से मिट्टी से तैयार की गई आकृति के आंख, नाक, कान आदि बनाए जाते हैं। मिट्टी की आकृति को फिर विभिन्न परतों से ढ़का जाता है, पहले उस पर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती है फिर मिट्टी और गोबर के मिश्रण की परत चढ़ाते हैं और अंत में चीटियों के बिल से लाई गई मिट्टी में चावल की भूसी मिलाकर अंतिम परत चढ़ाते हैं। चीटियों के बिल से प्राप्त मिट्टी से आकृति के नीचे का आसन बनाया जाता है और प्रतिमा के निचले भाग में उसे लगाया जाता है। दूसरी ओर एक प्याले में धातु के टुकड़े, मिट्टी, चावल की भूसी मिलाकर उसे सील बंद कर लिया जाता है। धातु युक्त प्याले को मिट्टी के सांचे के साथ नीचे रखा जाता है और जलाने वाली लकड़ियों से उसे ढका जाता है, उसके उपरांत दो–तीन घंटे तक इसे भट्टी में रखकर जब तक धातु पिघल जाए तब तक जलाया जाता है।

गर्म सांचे को चिमटे की सहायता से बाहर निकाला जाता है और ऊपर से नीचे की ओर पलटा जाता है, जल्दी से इसे हिलाकर पिघली हुई धातु इसमें उड़ेल दी जाती है। जहां साल का चिपचिपा पदार्थ जहां भरा था वह भाप बनकर उड़ जाता है और पिघली हुई धातु उस स्थान में ठीक तरीके से भर जाती है। सांचे को ठंडा होने के उपरांत धातु की आकृति को स्पष्ट करने के लिए मिट्टी की परतों को हथोड़ा मार कर हटा दिया जाता है। इस प्रकार इस प्रक्रिया द्वारा अनेक आकृतियों व वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

- **टेराकोटा :–**

संपूर्ण भारत वर्ष में मूर्ति निर्माण में सर्वाधिक प्रचलित टेराकोटा है। टेराकोटा पक्की हुई मिट्टी होती है। तालाबों और नदियों के किनारे से लाई गई मिट्टी से आमतौर पर कुम्हार के द्वारा पारंपरिक त्यौहारों पर पूजा में प्रयोग आने वाली मिट्टी की मूर्तियां बनाई जाती है । अधिक समय तक बनाए रखने के लिए उन्हें आग में पकाया जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्र मणिपुर, उत्तर–पूर्व में आसाम, पश्चिम में कच्छ, उत्तर की पहाड़ियां, दक्षिण में तमिलनाडु, गंगा के मैदान या मध्य भारत आदि में टेराकोटा के मूर्ति शिल्प बनाए जाते हैं। मूर्तियां बनाने के लिए कुम्हार द्वारा चाक का उपयोग किया जाता है। तैयार मूर्तियों को विभिन्न रंगों द्वारा सजाया जाता है। इन टेराकोटा मूर्ति शिल्प का स्वरूप व उद्देश्य प्राय एक जैसा ही होता है इसमें विभिन्न देवी देवताओं की प्रतिमा जैसे–गणेश, दुर्गा, स्थानीय देवता और जानवर, पक्षी, कीट–पतंगों की आकृतियां होती है।

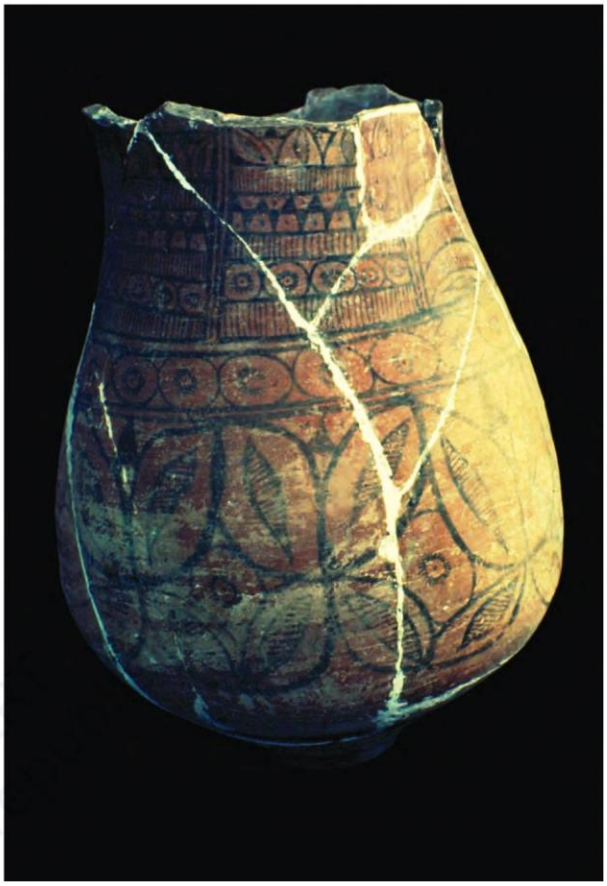

- **महत्वपूर्ण प्रश्न :–**

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न :–

1. मिथिला चित्र परंपरा का प्रमुख स्थान क्या है ?
2. मिथिला कला को अन्य और किस नाम से जाना जाता है ?
3. किस कला में घर के पूर्वी भाग में कुल देवी का अंकन किया जाता है ?
4. मधुबनी कला मुख्यता किसके द्वारा निर्मित की जाती है ?
5. वर्ली चित्र परंपरा का संबंध किस स्थान से है ?
6. वर्ली चित्रण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कला का क्या नाम है ?
7. वर्ली चित्रण में खेत के रक्षक को किस नाम से जाना जाता है ?
8. पालघाट के चित्रों को मिट्टी के रंगीन दीवारों पर किससे बनाया जाता है ?
9. गौंड कला के महत्वपूर्ण स्थान का नाम क्या है ?
10. मध्यप्रदेश के गोंड समुदाय किसकी पूजा करते थे ?
11. पिथौरा कला का महत्वपूर्ण स्थान क्या है ?
12. पिथौरा चित्र किस समुदाय के लोगों द्वारा बनाया जाता है ?
13. पिथौरा चित्र मुख्यता किस स्थान पर बनाए जाते हैं ?
14. पाटा या पट चित्रों के महत्वपूर्ण स्थान कौन–कौन से हैं ?
15. बंगाल तथा बिहार में चित्र बनाने वाले कलाकार को क्या कहा जाता है ?
16. **जात्री** पट चित्रण किसे कहते हैं ?
17. पट चित्रण मुख्यता किस धरातल पर बनाए जाते हैं ?
18. पट चित्रण में ताड़ के पत्ते पर जो पांडुलिपि बनाई जाती है उसे क्या कहते हैं ?
19 बंगाल में बिहार की कला को मुख्य रूप से किस नाम से जाना जाता है ?
20. फड़ का चित्रण मुख्य रूप से किस स्थान पर होता है ?
21. फड़ चित्र मुख्यता किस धरातल पर बनाए जाते हैं ?
22. फड़ चित्रण में चित्रित लोक देवता या वीर पुरुषों को किस नाम से जाना जाता है ?
23. फड़ चित्रों का गायन किसके द्वारा किया जाता है ?

24. फड़ चित्रों का चित्रण मुख्यता किस जाति द्वारा किया जाता है ?

25. ढ़ोकरा ढलाई के प्रमुख स्थान कौन से हैं ?

26. बस्तर के धातु शिल्पियों को किस नाम से पुकारा जाता है ?

27. गढ़वा किसे कहते हैं ?

28. टेराकोटा क्या है ?

29. टेराकोटा मूर्ति शिल्प मुख्यतया किसके द्वारा बनाए जाते हैं ?

30. मधुबनी चित्रण परंपरा घर के कितने क्षेत्रों में बनाई जाती है ?

31. पिछवाई का संबंध राजस्थान के किस स्थान से है ?

32. बिहार की लोकप्रिय कला कौन–सी है ?

33. पालाघाट देवी का अंकन किस चित्रण परंपरा में किया जाता है ?

34. राजस्थान के भीलवाड़ा क्षेत्र के लोकप्रिय चित्रण परंपरा का क्या नाम है ?

35. मोम को हटाकर बनाई जाने वाली मूर्तिकला का क्या नाम है ?

36. डोकरा मूर्ति क्या है ?

37. फड़ चित्रों में चित्रित किए जाने वाले मुख्यतया लोक देवता कौन–कौन से है ?

38. फड़ चित्रों का आकार कैसा होता है ?

39. पट चित्रों को अन्य किन नामों से जाना जाता है ?

40. पिथौरा देव का अंकन किस कला में किया जाता है ?

41. गोंड चित्रण परंपरा में किन आकृतियों को अधिक महत्व दिया जाता है ?

42. वर्ली परंपरा में चौक पर किस की आकृतियां बनाई जाती है ?

43. राम सीता के विवाह का संबंध किस कला से है ?

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्न :–</u>

1. फड़ चित्रण से आप क्या समझते हैं ?

2. भारत के किन क्षेत्रों में ढोकरा ढलाई मूर्ति परंपरा प्रचलित है ?

3. मधुबनी कला परंपरा के बारे में बताइए।

4. पट चित्रण परंपरा के महत्वपूर्ण स्थान कौन–कौन से हैं ?

5. वर्ली चित्रण परंपरा से आप क्या समझते हैं ?

6. गौंड चित्र परंपरा के बारे में बताइए।

7. भारत की प्रमुख जीवन परंपराएं कौन–कौन सी है ?

8. टेराकोटा मूर्ति शिल्प के प्रमुख स्थान कौन–कौन से हैं ?

9. परंपरागत लोककला से आप क्या समझते हैं ?

10. फड़ अंकन किन लोगों के द्वारा और क्यों चित्रित किया जाता है ?

11. भोपां किसे कहा जाता है ?

12. पट्ट चित्रण के बारे में जानकारी दीजिए।

13. टेराकोटा मूर्ति शिल्प परंपरा के बारे में लिखिए।

14. वर्ली चित्रों की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

15. मधुबनी या मिथिला चित्रों की विशेषता बताइए।

16. बंगाल के पट्ट चित्र से आप क्या समझते है ?

17. उड़ीसा के पट्ट चित्रों के बारे में जानकारी दीजिए।

18. पट्ट चित्रों के निर्माण की विधि लिखिए।

19. ढ़ोकरा मूर्ति शिल्प परंपरा की विधि लिखिए।

20. पिथौरा कला के बारे में लिखिए।